











# কবিতাসংগ্ৰহ।<sup>)</sup>

ঈশরচন্দ্র গুপ্ত প্রণীত

সংবাদ প্রভাকর হইতে সংগৃহীত কবিতাবলী।

দ্বিতীয় ভাগ ৷

**্রীগোপালচন্দ্র মুখোপাধ্যার** কর্ত্তক সম্পাদিত।

কলিকাভা।

১০১ নংশ্যবিদ্বালী স্থীটে প্রভাকর বঙ্গে শ্বিগোপালচন্দ্র কর বারা সুস্লিভ এবং প্রকাশিত।

• সন ১২৯৩ সাল।







## প্ৰথম খণ্ড। পাৰমাৰ্থিক এবং নৈতিক।

| _                 |                          |     |            |       |
|-------------------|--------------------------|-----|------------|-------|
| বিষয়             |                          |     |            | পৃষ্ঠ |
| স্থায়স্থৰ মহর বি | স্থাঃস্থ মনুর বিশ্বদর্শন |     |            | >     |
| প্রার্থনা         |                          | ••• | •          | ¢     |
| <b>ত্যার্থনা</b>  | •••                      | ••• | •••        | ٩     |
| ক্ৰম্ব            | ··· ,                    |     | •••        | ۲     |
| मधक निर्वत्र      |                          |     | •••        | 98    |
| বিভূৱ পূকা        | •••                      | ••• | ***        | ৩৮    |
| বিশ্বকৌতৃক        |                          |     |            | 83    |
| ভক্তাধীন          |                          | ••• | •••        | 84    |
| আমি               | •••                      | ••• | •          | 84    |
| ভৰ                | •••                      | ••  | ··· .      | 88    |
| দীবের প্রতি       | •••                      | *** | •••        | 84    |
| কে স্বামি ?       |                          | ·   | <b>-</b> . | 82    |
| दैक कृषि ?        | ٠                        | ••  | ***        | 0     |
| শগৌকিক বৰ্বা      | •••                      | ,   | ***        | 64    |

..

পুঠা

44

eъ

95

98

90

٩ъ

93 99

99

বিষয়

विद्वाद माञ्च

ভৰসিকু

সজীভ

পাপ

થનો

安学

সংস্ক

আত্মপর . . সার্ব্ধভৌমিক ভাতৃতাব

| মনভ্রমরের প্রতি ক্রু | ণাকুম্দ |   | <br>3-2    |
|----------------------|---------|---|------------|
| সংসাব সাজ্যর         |         |   | <b>6</b> 4 |
| সংসার কানন           |         |   | ৬৬         |
| সংসার সমূক্ত         |         |   | <br>45     |
| সংসার জাঁতা          |         |   | 9.         |
| দেহ খর               |         |   | 95         |
| সাধু .               |         |   | <br>90     |
| প্রান্থপাঠ           |         |   | 90         |
| জানী .               |         | • | <br>98     |
| রুপ ৪ কাশ            |         |   | 98         |
| শান্ত্রপাঠ           |         |   | 98         |

#### হিতীয় **খণ্ড।** সামাহিক ও বাজ।

| বিবয়               |             |     |     | পৃষ্ঠা |
|---------------------|-------------|-----|-----|--------|
| বিধৰাবিবাহ          |             |     |     | 92     |
| विधवादिवाह अहे      | ₹           | ••• |     | 6.5    |
| (कोनीना             |             |     |     | ⊬¢     |
| স্থানহাত্ৰা         |             |     |     | b6     |
| -এভাওয়ালা ভপ্য     | <b>ोगाइ</b> |     |     | કર     |
| -<br>আনাবস          |             |     |     | 29     |
| হেমন্তে বিবিধ খা    | तः .        |     |     | >•₹    |
| পৌষপাৰ্শ্বণ         |             | ••• |     | 346    |
| दर्शविभाव           |             | ••• | ••• | >98    |
| ঠোঁট কাট            |             |     |     | 249    |
| কাণকাটা             |             |     | ٠٠. | 224    |
| মেকি ব্ৰাহ্মণ পণ্ডি | 3           |     |     | 29-8   |
| ভোৰামূদে            |             |     | • • | 244    |
| ইংরাজ সম্পাদক       |             |     |     | 766    |
| वाजी                |             |     | ••  | >>>    |
| ভূয়েল হ্ছ          | •••         |     | • ` | 295    |
| हिन्दू करन <b>ञ</b> | • •         | • • | ••• | 798    |
| ব্যোমবান            |             |     | ••• | >>8    |
| ঝড়                 | ···· ,      | ••• | ••• | 794    |
| <b>₹</b> B          | •••         | ••• | ••• | २०४    |
|                     |             |     |     |        |

### বৃদ্ধ।

বিবহ দিপাণী যুকে শাস্তি আর্থনা নানা সংহেব কাণপুরের যুদ্ধে জর निसीत युक

व्यालाशांबारमञ्जूष ... আপরার বৃদ্ধ :---যুদ্ধ শঃস্থি

বিটিস-শাসন

क्षेत्रा व

মধ-াহ

সন্থা:

द्रवनी

চতুর্থ খণ্ড। রান্ধনৈতিক।

পঞ্চম খণ্ড।

বিবিধ।

•••

পুঠা

204

255

275

225

220

338

224

₹2₽

405

₹8• 285 २४२

₹88

₹8¢

600

ەرە درە

950

9.8

W.

...

বিবয়

ऋडि

**म्या** 

কবিতাও কবি গান যৌবন সতীত্ব

রঙ্গীতে ভাগীরগী

ৰড়ান্তে স্বাচাৰিক শোডা

মৃেতার বড়

|   | 4 D)              | ••• | •••   | ••• | 400         |
|---|-------------------|-----|-------|-----|-------------|
|   | দরস্থতী-চরশে      |     |       | ••• | 265         |
|   | কবিতা             |     | •••   | ••• | २६२         |
|   | কুরীতি সংস্কার    |     |       |     | 268         |
| ` | ৰমণ               |     |       |     | २६७         |
|   | বিজ্ঞানকৌশল       |     |       | ••• | <b>25-0</b> |
|   | ভাবের খবর         |     |       |     | 448         |
|   | রেলের গাডী        |     |       |     | २৮७         |
|   | पड़ी              |     | ··· . | ••• | ২৮৯         |
|   | বৰুৰ              |     |       | ••• | ₹2.0        |
|   | ভারতভূমির হুর্দশা |     |       | ••• | 458         |

ফুল ভাগ্য

মাছৰ সে নয়

중어이 ভারতের অবস্থা

ত্রীকুষ্ণের স্থপ দর্শন

শাস্ত্ৰ ও শিক্ষাবিত্ৰাট

ভারতের ভাগ্যবিপ্লব

বিবর

প্রেণর

वर्ष थए। হাক্ষাকড়াই। ¢টা গীত।

ŀ

পৃষ

976

935

٠)٠

०२२

৩১১

**208** 

936

90h

08.



ঈশরচন্দ্র গুপ্ত-প্রণীত

কবিতাবলী।

দ্বিতীয় ভাগ।

প্ৰথম গড়।

পারমার্বিক এবং নৈতিক।

## স্বার্ম্ভূব মনুর বিশ্বদর্শন।

কোখা হতে আদিয়াছি, কেন অব গাইয়াছি, কেন বা নীবিত আছি, না হৰ নিৰ্দন্ত । এই হিল অকাল্যক, নাহি হিল এ প্ৰকাৰ, অকলাংহ কি ছাবাৰ, হেবি আনোৰত ! বহি মহি আহা আহা, ক্ষণ পূৰ্ব্য ছিল বাহা, এখনি ভাবিলে ভাবা, বনে হয় কয়।

### ক্**বিত্যুগ**ংগ্ৰহ।

মোহজালে অভিতৃত, ক্ষণে কৰে অবিভৃত, বে কাল হয়েছে ভূত, অমুভূত নয়। একি দেখি অগরপ, আকাশের চারুরূপ, মৃত্রুতি নানাক্রণ, হয় আরে লর। শোভিত বিনোদ বন, কুসুমিত ভকগণ, কোথা হতে সমীরণ, শহু তাব বর্। স্মভাবের ভাব ভবে, মোহনীর মিষ্ট স্থাকে, নানা রাগে গান কবে, বিহলমচয়। কিবা শোভা হার হার, নরন যে বিকে চার, কেবল দেখিতে পাব, স্থাধ্ব আলব। নাশাপথে ভাগ চলে, শব্দ ধার ক্রডিচলে, রসনা কাহার বলে, আত্মাদন লয়। वहत्व बहुन वृष्टि, कहारक क्षर मृष्टि, দেখিয়া এরপ স্কৃত্তি, হতেছে বিশ্বব ' বিকল মনেব কল, এই মাজ কোবে বল, উঠেছিল কুধানল, জোলে অভিশ্য। লিখবারি সহকাবে, স্থবধুর ফ্রাছাবে, क्कृदिन একেবাবে, क्रेड निनद्र। কে কবিল এই ভঞ্চ, কে করিল এই পঞ্চ, (क निरंत्रष्ट वृद्धि मन, रक निरंत्रष्ट हरं,? কে দিলে আমার জন্ম, কে দিলে আমার তন্ত্র, কবিলেন এই যতু, কোন মহাপয়?

क्षक शार वह घर. कानिकारि वह हते. যোগাবোগ পরস্পর, বার আছে নয় ৷ এটকাও অনিবার্থা, কেমনে হইল ধার্যা, ভাবিয়া ভবের কার্যা, মোহিত হৃদর। হিতকারী কেবা আছে, যাই আমি কার কাছে, পাই আমি কার কাছে, তার পবিচয় ? এই সৰ চরাচ্ব, পাইয়াছে কলেবর, জিজনাসাকরিলে পর, কথানাহি কয় 🛭 শুন ওছে দিবাকর। ডিমির বিনাশ কব. জগতেব শোভাকর, ভূমি জ্যোতির্দ্মর। প্রভাকর প্রিয়ত্তম, মানস গগণে মম, ঘোরতর ভ্রমতম, কব দেখি কর। नहीनम अश्वन, एटह वन छेवन, ওচে ভাই জীবগণ, আছ সমুদর। ' হয়েছি কাতৰ অতি, স্বভাবে চঞ্চমতি, করিছে স্বাব প্রতি, বিভিত্ত বিনয়। আমিতো স্বয়স্ত নই, অবশাই কত হই, कर्ता करें कर्ता वहें, किया नाहि हया। মনেতে জেনেছি এই, তোমাদের কর্তা বেই, আমার নির্মাতা সেই, বিভূ বিশ্বময়। মনোহর এ সংসাব, ইচ্ছার হরেছে যাব, সেই সর্বান্ধার, কোন খানে রর গ

#### কবিভাসংগ্ৰহ।

8

প্রকাশ করিয়া ভাই, সবিশেষ বল ভাই, কেমনেতে আমি পাই, তাহার আলম ? আকার প্রকার ভার, হয় বল কি প্রকার ? কি রূপে পাইব তার, প্রম প্রশন্ন ? বদ ভাই কি প্রকারে, পূজা করি আমি তাঁরে, **७** मत्न बाद्य दोद्य. श्राव्यक्त मः नव । व्यवित्वत्र अधी श्रत्र, श्रुवाडील श्रुवार्कत्र, কোথা ভূমি পরাৎপর, নিতা নিরাময় ৷ কিলে পাৰ দবশন, প্ৰতিক্ষণ প্ৰতীক্ষণ, ভেবে মন উচাটন, স্থির নাছি রয় ৷ ভবারণ্যে ভ্রমি একা, ছঃখের না হর লেখা. स्त्रा कदि साथ (स्था, बीनस्त्रामद्रा তোমার ক্ষত হই, তোমা বই কারে কই প ওহে বিভূ তোমা ৰই, কিছু কিছু নয়। নাম ধর ক্লপাকর, আমায় কুতার্থ কর, निक उद्धान मान कर, व्हेट्य मन्य। ভোষার অরপ ধ্যান, ভোষার অরপ জ্ঞান, শ্বির ভাবে হর ধেন, অন্তরে উদয়। প্রপল্লে পবিত্র কর, পরিভাগ পরিহর, প্রণব প্রদান কর, হরে মনোষর। তৰ প্ৰেমে হয়ে প্ৰীত, মুখে গাই এই গীত. खद बद बनहीन, बनहीन बद 🏾

## প্রার্থনা।

এত দিন বেঁচে আছি, তোমাব রূপায়। হই হই করিতেছি, ভবের সভায় 🛭 যে পথে চলাও তুমি. সেই পথে চলি। বেরপ বশাও ভূমি, দেইরূপ বলি ॥ षाभि दनि, खामि हनि, शाश किছू नाई। চলাও, বলাও ভূমি, চলি, বলি তাই॥ বল্বল্ভব বল্, সেই বলে বলী। বল্বল্তৰ বল্ত সেই বলে বলি 🛭 স্ববলে এ বল ভূমি, যখন হরিবে। আমি, তুমি, বলাবলি, কে আর করিবে 🕈 আছি আমি, জার আমি, রহিব না মোলে। যে ভূমি সে ভূমি রবে, আমি বাব চোঁলে। কি হইব, কোথা ঘাৰ, কি বলিতে পারি ? মিশাবে জলধিজলে, জলধির বারি ৷ আছে সব হোলে শব, যাবে সব চুকে। আমি এসে আমি আর, বলিব না মুখে ॥ ভ্রমেতে কহিবে সব, করি হাহাকাব। ঘুচিল নখৰ দেহ, ঈশ্বর ভোমাব 4 নখৰ ঈখর আমি, বুঝাটৰ কাণ। ঈশ্ব যাবার নয়, ঈশ্ব কি বায় ?

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

ড

ছিল গুণ্ড, হোলো গুপ্ত, খপ্ত কোথা আছে। मक्ति इहेन छक्ष, जेबदबब कारह 🛊 ডুমি হে ঈশর গুলু, ব্যক্ত কভু নও। (क्यान कतिव वाख्न, वाख्न वित इ.७.) পাকে শুপ্ত, শুপ্ত থাক, ব্যক্তে নাহি ফল। क्माल পভिरद भिर, कमालद्र स्था। ততদিন আছি আনি, যত দিন থাকি। আমায় জানিয়া তৃমি, ভোমারেই ডাকি n ভোমার করুণা বিনা, স্থব কিলে হবে ? তুমি যদি স্থী কর, সুথ পাই তবে ॥ সস্তোবের ধন ভরা, ভবেব ভাশ্ভারে। তুমি যদি নাহি দেও, কে লইতে পারে ? দিরেছ, হরেছে ভার, স্থধের সংযোগ। ত্ববৈতে করেছি কত, স্থভোগ সম্ভোগ॥ যোগ ভোগ ছই ইচ্ছা, সকলের মনে। ভোগ ভোগ, যোগ যোগ, হইৰে কেমনে ? ভোগে বেন কর্মভোগ, ভূগিতে না হয়। र्थार्श रवन अक्रुर्शन, क्थाना ना दह ह কিক্সপে মনের ভাব, করিব প্রকট। বলিবার কিছু নাই, ভোমার নিবট 👢 চলিবার বলিবার, শেষ হোলো সব। বোলে क्शांत्र अरकवात्त्र, हरलम नीत्रव ॥

## প্রার্থনা।

ধবে মানুদের দেহ, মানুদের করিয়া স্লেহ, মিছাকাল করিলাম বই। স্বৰণে মাতৃষ কই? এমন মাতৃষ কই? আনিতো মাসুৰ নিজে নই ॥ বোধা বিভূ বিশ্বকৰ, আনায় কবিয়া নৰ, বেদনা দিতেছ কেন আর ? কর দেখি উপদেশ, কেন দিলে বাগ বেষ ? কেন বিলে দন্ত অহঙ্কার ? তুমি নাণ ইচ্ছামর, কর বাহা ইচ্ছাহর, ইচ্ছার চালিছ এ সংসার। যে কলে চলাও চলি, যে বলে বলাও বলি, সম্ভাবনা কি আছে আমার? ষা হোক্তা হোক্ৰাথ, আজ কিবা সুপ্ৰছাত, প্রবিপাত চরবে তোমার। মধুৰ মধুৰ ভাৰ, ভুমি ভায় আবিভাৰ, সকলেতে করিছ বিহাব।। কাস্কপ্ৰিয় এই কাস্ত, অতি শাস্ত ঋতুকাস্ত, • মরি কিবা কান্ত মনোহর। বার বলে বলাক্রাস্ত, নাশিরা নিশির ধ্বাস্ত,

নিশাকান্ত কান্ত করে কর ।

#### কৰ্বিভাসৎগ্ৰহ।

বিগত বিশেষ দার, প্রভাকর প্রতা পার, ক্রমে তার বাড়িছে প্রভাব। প্রভাকরকর করে, প্রভাকর কর করে.

প্রভাকরকর করে, প্রভাকর কর করে.
প্রভাকর করের কি ভাব।।
ভাকে প্রভাকরকর,
মনোম্য হও সমম্ম।
কেহ নাহি লানে অধ্য, বিশেহে ঈশ্বর অধ্য,

ভূমি ব্যক্ত চরাচরময় 🛭

#### তত্ত্ব।

নোলে কি হে, সকলি কুরায় ?
বল বল, নাধা! বোলে কি হে, সকলি কুরায় ?
এই জীব আর নাহি, আনে পুনরার ?
এই দেহ এ প্রকারে, নাহি হর বাবে বাবে,
কর্মতোগ একেবারে, নব গুচে যায়।
এই দেবি এই এই, মেবিতে মেবিতে দেই,
এই এই, সেই নেই, শুনি পরস্রার।
এই সব, এই শব, এইরপ এই ভব,
কে মরে, কে বেঁচে থাকে, বোঝা বজ্ দায়।
নাম নাম ঘটাকাপ, এই জীব চিদাভাগ,
ঘটন হইলে নাশ, গাঁচ পাঁচ পায়॥

## কবিভাসং ঐহ।

অবিনাশী চিদাভাস, ভার কড় নাহি নাশ, দেহ নাশে কেন লোক, করে হার হার ? কে মৰে, কে পায় মুক্তি, বুরিতে না পারি যুক্তি, নানা জনে নানা উল্লি. গুনে হাসি পায়।। **এ**ड करन हरना हारना, थहे वर्रन बारना सारना, (कवा ह्यांता, दुकवा स्मात्ना, श्रूथाहेव काव ? যত নবে পরস্পরে, বিচাব বিভর্ক করে. ঠিক যেন সন্থাষণ, কালার কালার। কেছ কয় এই হয়, কেছ কয় নয় নয়; রপের প্রসঙ্গ বেম, কাণার কাণায়।। সার কথা ৰলি যারে. সেই গালে চভ মারে: বিচারেতে নাহি হারে, হাসিয়া উভায়। ডাক ছাঙ্গে চোটে চোটে, মুখে বেন বই কোটে, কার সাধ্য এটে ওঠে, কথার ছটাছ ? কত ছাদে করি হাঁদ, বাদী হোরে ভূলে বাদ, যুক্তিহীন তর্কবাদ, কতই ঘটার। উপাদক এক হল, প্রকাশিরা বৃদ্ধি বল, মোলে পর জন্ম নাই, বলিয়া বেড়ায়ঃ এই কথা বাক্ত করে, নরলোক বভ মবে, তাদের স্কলু আস্থা, ভোগ নাহি পায়। আছে তোলা গাছে ঝোলা, বাতালে খেতেছে দোলা, পগণে ছবিয়া কব, এখন পেলার।

50

ভবিষাতে একদিন, হবে ভাবা ভোগাধীন, বিচার হইবে শেষ, বিভুর সভার।। পুণ্যবান লোক বারা, চিরস্বর্গ পাবে ভাবা, পাপী রবে চিবকাল, নরক-বাসায়।। লম্ম এই হোলো সবে, পরে নাহি জন্ম হবে, এ কথাট স্থির কোরে, কে এসে শুনার ? কবে কোন নবলোক, গিল্লে সেই পরলোক, ফিবে আসিরাছে পুন, পুরাতন কায় ? পূর্বজন্মে ছিল যাহা, প্রকাশ কবিয়া তাহা, কেবা সূব জন্মের, সংশয় কাটায় ? স্থিব যার আছে মন, সেই কবে নিরূপণ, किছু मात्र প্রয়েজন, নাহি জিজাসায় ॥ জন্ম আর স্থিতি, নাশ, স্থভাবেতে স্থাকাশ, বাব বার সাক্ষা দিয়ে. প্রমাণ দেখার । ভূতের নাহয় ধ্বংস, ভূতে ভূক ভূত-অংশ, সমবেত হোবে ভূত, শরীর গড়ায়।। জড়দেহ ভূতমা, ভূতে হয় ভূতে লয়, সকলেই অভিভূত- ভূতের থেলার। यिन विन (मह "बड", "ठाव्हां क्लाड माद्र ठड़", তথনি চেতন বোলে, লাঠি নিয়ে ধায়ু। छित्र-इथ डाटबनाटका. शहकान मार्टिनाटका. ভব তর জানেনাকো, আসিয়া ধরায়:

তৰ তত্ত্বী বারা হয়, তাদের পাগল কয়, ষ্মনল নিবাতে চায়, তুণের শাখার।। তুপ্ত নয় তত্ত্বদে, বত সদা অপ্যশে, নাস্তিক ৰলিবা বদে, গাবের জালার। আত্মারে শরীর ধরা, বস্ত্রছেড়ে বস্ত্র পরা, জৌক সব তৃপে তুণে, বেমন বেড়ার। প্রবৃত্তির বৃশ হয়ে, প্রাক্তনের ক্রিয়া লয়ে, দেহ ঘবে ঢোকে জীব, তোমার ইচ্ছার।। দেহ ঘটে আত্মা বন, কিন্তু তিনি দেহ নন, সচেতন অচেতন, মাধার মারাব।। স্থিতি নাশ, নাশ স্থিতি, সংসারের এই বীতি, কেমনে কহিব তবে, মোলেই ফুরার > কেমনে ঘুচিবে রোগ, না হয় স্থযোগ যোগ-নাশিতে কল্মেব ভোগ, সম্ভোগ বাডায়।। ভোগেতে কি ভোগ ছাঙে, কর্ম্মেতেই কর্ম বাডে. যুচাতে গায়ের মলা, ধুলা মাৰে গায় ৷ ওঁষধ না খেলে পরে, শরীরে কি বোগ মবে ১ কুপথ্যে বোগেব নাশ, হয়েছে কোখায় ? বিনা আলোকের ভাস, কিঁসে হবে তম নাশ ? অন্ধকার অন্ধকার, কেবনে ঘুচার ? কাটিতে দভির কাঁস, অস্ত্রের না করে আশ, খুতা দিয়ে সেই ''গেরো'' কেবল **ভ**ড়ায় 🏽

মিছে করি পরিক্রম, কিছুই হোলোনা ক্রম, (प्राटिनी प्रत्ये जय, ज्ञान-मनाय : মিখ্যায় সভ্যের ভান, মনে নাহি পার স্থান. তর-নিরূপণ হয়, জ্ঞান অবস্থার। "कामि" वित "कृषि" इटे, कामात्र विनाम रहे? ध कथा है काद्र करे, दक वरन आमात्र ? ছিল পিব, হোলো জীব, আছি জীব, হব পিব. এইরপ জীব পিব, আমার তোমায় I পাশভুক্ত হোলে জীব, পাশমুক্ত হোলে শিব, জীব বুচে শিৰ হব, কোণা সহপায় 🛭 যথন কাটিব ডোর, খুচে বাবে কর্মঘোর, জীব ঘুচে শিব হৰ, সন্দেহ কি ভার 🕈 त्य जीत्वरक नग्रामग्र, रक्षामाव ना नग्रा रग्न, त्महें कीय कीव बढ़, निवष ना शाद I ভূমি ৰূপা কর কারে, ত্রিতাপে তরাও তাবে, त्रई कीव अरकवारत, निव द्हारत गात्र। ফলত ভোষার ভাভ, কিছু যাত্র নাহি হাড, নিত্র নিজ ভাগ্য ভোগ, করে সমুদার 🏾 कर्म यात्र त्य श्रीकात्र, कव हेम्हा नहकात्र, সে প্রকার ভোগ ভার, ঘটার ঘটার। ক্রিয়াসাক্ষী সচেত্র, ফলদাতা সনাত্র, অথচ নির্নেপ ভূমি, আকাশের প্রায় 🖁

নিজ কর্ম উপসর্গ, ভাতেই নরক স্মর্গ, পুণ্য পাপে স্থুখ হুখ, ভোগায় ভোগায়। তব তত্ত্বত যত, প্রবৃত্তির পথে রত, ছথে স্থাথে অবিরত, দোৰ গুণ গায়। মরি মরি, আহা আহা, তোমার বিচার বাহা, কেহই জানেনা তাহা, হার হার হার। কিন্তুনাথ ! স্থিব জানি, ঘোরতর অভিযানী, কেবল অধর্ম করে। মানব-সভার ॥ রিপুপিশাচের মতে, পাপাচার নানা মতে. তোমাব পবিক্র পথে, ভ্রমে নাহি ধার। এমন যে মৃচ জন, বলি স্থিব কবি মন. ক্ষণকাল চোধ বুলে, তোমা পানে চায় 1 মনে মুখে এই কর, হর ষম পাপচয, , দীনদরামর তুমি, রবেছ কোথার ? কটাক্ষেতে একবার, সে পাপ থাকেনা আব, কর্মপাশ কাটে তার, তোমার রূপার 🛚 কিন্ত ওতে দ্যান্য! এ বড সহজ নর. অকন্থাৎ এ প্রবৃত্তি, কেবা দের ভার ? ভিতরের ভাব তার, সাধ্যকার বৃদ্ধিবার গু তবেই বুঝিছে পারি, বুঝালে আমার & এ বোঝাভো সোজা নয়, বস্তা হোয়ে কেবা কয়; কে বোঝাবে, কে বুরিবে, তব অভিপ্রায় ?

বুঝিবার নাহি পুঁজি, কাজ নাই বোরাবৃদ্ধি, এই বৃঝি, সোজাত্মজি, স্থান দেহ পায় ঃ তুমি প্রভু, আমি দাস, পদ মাত্র অভিলাব, ফিবিনেকো আর কোনো, পদেব আশায়। এই ববে ঢুকাইয়া, আছ ভূমি লুকাইয়া, (मशं यमि नाहि (नट, कि कांक (मशाय ? ध्यम ब्रायाक ध्वा. शावरे शावरे (मेथा, চাতকেবে ভলধর, কদিন ভাঁড়ায় ° পূর্ণিমার নিশি হোলে, আপনি টানিবে কোলে, চবোৰ চাঁদেৰ স্থা, প্ৰভাতে কি পায় <sup>9</sup> বধন সময় হবে. আপনিই কোলে লবে. আপনিই দেখাইবে, ৰিহিত উপায়। অস্ব হয়েছে সবে, সমবে ফুফল হবে, অন্ধুবে ফলেব আশা, বুগায় বুথার।। তন ওহে মম মূল, হও হও অভুকুল, যেন নাহি হয় ভুল, দশন দশায়। ভাঙো ভাঙো হয় মেলা, এখন কোরোনা হেলা, যার বার বার বেলা, খেলা হোলো সার। পার বেন হ'ই অল্লে, আর বেন কোনো কল্লে, : মায়ার মাতালে গল্পে, নাহি পাড়ি সায়। পূজা, হোম, জপ, মন্ত্র, নাহি জানি বেদ, তন্ত্র, শ্বতন্ত্র পুতি, প্রকৃতি গড়ার।।

কথনো পোড়িনি শ্রুতি, পেরেছি যুগল শ্রুতি, শ্রতির অধীন স্বৃতি, স্বৃতি কেবা চার ? রদনা আচার্য্য হয়, ঐতিমূলে সদা কর, "জয় জগদীশ জয়,, মধুব ভাষার।। এই কানি প্রতিক্রণ, ধ্রনিধনে ধনী মন, আপনি আপন ভাবে, হাসার কাঁদার। শুনেছি দর্শন ছয়, নয়ন দর্শনদ্য, সমুদ্র ব্রহ্মময়, নিয়ত দেখার ॥ কাজ নাই দৰশন, যাহা কৰি দরশন, তাতেই মোহিত মন, তব মহিমায়। ধবা, জল, বহ্নি, বাত, দিবা, নিশি, সন্ধা, প্রাত, সকলেই প্রতিভাত, তোমার প্রভায়। খত কিছু রমণীয়, বত কিছু ক্যনীব, সকলেই শোভনীয়, তোমার শোভায়। প্রভাকর প্রভাকর, তুমি ভার প্রভাকর, নতুবা এ ববি ছবি, কোপায় লুকায়॥ এই ভব চরাচর, বটে বটে মনোহর, কিন্ধ নহে স্থিরতর, রচিত মারায়। विरवकी विरवरक करा. मिका मरा. मिका मरा. সমূচয় ভূঙ্কময়, ভূতের মেলায় 🛭 ভূডাতীত নিবঞ্জন, তুমি যাত্র নিতাধন, এ ধনের মধে মত, কর ছে আমার।

ভোষার চিনেছে বেই, ভোষার কিনেছে সেই. না চায় কিছুই আর, তোমার না চায়। একেবারে স্থির হয়, কোনো কথা নাহি কয়. সে কি আর ভববোরে, পুরিরা বেড়ার ? কিছু আর নাহি চায়, কোনোখানে নাহি যায়, বোসে থাকে, তব তত্ত্ব-তক্র ছারায় 🛭 मरकारबंद मरदावरद, मध स्टारव सीन करव. নাহি থাকে তৃঞা কুধা, শান্তিত্থা থায় 🛭 সদানৰ ভাব ধবে, নিতা স্থপে কাল হবে, কণপাত নাহি কবে, কাহারো কথায় **ঃ** নিজ ভাবে নিজে গলে, নিজ বোধ-পথে চলে, দেহ মাত পেহ তার, বাস কবে যায়। (छ्नाट्डन क्डि नारे, त्रव्हार त्रव र्वाडे. সতত সমান<sup>'</sup> সুখ, যণায় তথায় ॥ বিকারবিহীন মন, তুণ দেখে ত্রিভবন, কোটি কোট ইক্স এলে, ফিরে নাহি চার। মুচি নাই, গুচি নাই, তুলা দেখে সোণা ছাই, ব্রহ্মপদ ভুচ্ছ কবে, পড়িয়া ধ্লার ৪ সে সময়ে তুমি তার, দেহ কব অধিকার. রাজা হোয়ে বোদো গিয়ে, মনের সভায়। অস্তরে বিরাজ কর, ধীরাজের ধর্ম ধর, ৰত সৰ ছষ্ট চোর, ভরেতে পলার।

আচেৰে হইবা এক, কৰ আত্ম-অভিবেক উপদৰ্গ আদি ভেল, আদিতে না পায়। বিষম বিপক্ষ বাধা, কেমনে আদিৰে ভাৰা, প্ৰবোধ প্ৰকাষ চোহে, ৰোদে প্ৰচৰায়॥

তুমি ধাতা তুমি পাতা, ফলদাতা তুমি আঠো, তুমি নাথ স্কম্লাধার।

ক্ষিয়াছ শত শত, অচল সচল বত, চলাচল অধিল সংসার ॥

ङ्ग आणि ध्वाधर, **এই मृद ह**त्राहत,

অপরপ শোভার ভাগ্ডার। আহা কিবা মরি মবি, অভাব অভাব ধবি,

দেধাতেছে মহিমা ভোমার !!

হ্বলে খ্লোপরে, প্রশ্নের হুবে চবে, নকলেরি নরস-অস্তর।

অহলার স্থগাপানে, মেতে হোর অভিমানে,
কেবল অস্থগী যত নর #

বাসনার হোরে বশ, থেতেছে বিবর-রস, পেতেছে ভাহাতে কত ছংগ।

আশা নাহি হয় নাশ, ক্রমে বাড়ে জডিলার, ক্রেম নাহি পার সভ্য-ছখ।

যত ভোগ বাড়ে বার, তত রোগ বাড়ে ডার, কিছতেই শেষ নাহি হয়।

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

किया मीन, किया जून, नवरणति এव क्रण. সৰ ঘৱে হাহাকাবময় গ যার যত বাড়ে পদ, তাব তত বাড়ে মদ, মদে পদ ভিতুবাৰা দায়। শত, লক্ষ, কোটীখন, সম্রাট, ভূপভিবৰ, তাব পৰ ব্ৰহ্মপদ চাৰ ঃ कुछ दे दे द्वाना कारन, हेस्स इस दिश्व चारन, শমনেরে করে ছত্তধাবী। স্থৰ্গ মৰ্ত্য আদি স্থল, সৰ দেয় বসাতল, তোমারে করিয়া আজ্ঞাকারী। কথনো এ ভাব ধরে, তোমাব তুমিত্ব হরে, একেবারে মানেনা ভৌমায়। যে বলে জিখরো নান্তি', কেবা তার দের শান্তি, তমি কিছ বলনাতো তায় ঃ এখন নাৰল বল, পরে দিবে প্রতিফল. এ কথাটি বুঝাইব কারে? **ध**ई (नर चार जात, न छ श्रव कि टाकात, তথ্য তার কে করিতে পারে ই ছুরাচার বনী বত, পরের পীড়নে রত, প্রকাশিয়া প্রবল প্রভাপ। নিৰ্দোষ অধীন ধারা, তালের করিছে সারা,

श्रम श्रम मिरव भविकाश ह

এমন নিলৱ নৰ, তাদেরি উল্লভ কর, দ্ও কিছু দেখিতে না পাই। মনোছবে ভাট কই, দওলাতা বিভূ কই †

নাই নাই নাই "ভূমি" নাই ॥
কণ পরে পুনর্বার, করি এই স্বিচার,

তোমার কুপার উপদেশে।

বৃদ্ধি মাছে স্থিক কৰা, প্ৰবৰ্ণ পাণেৰ ভৱা, ডোবেই ভোবেই ডোবে সোৰে।

দোৰহীন দীনচয়, পীড়া পেয়ে এই কয়,

মুধ কুটে কিছু কবনাকো।
'বাগা পাই বে প্রকার, কর তাব প্রতীকার,

ব্যগাপাই বে প্রকার, কর তাব প্রতাক হে ঈশ্বব ! যদি তুমি থাকো ॥'

আম্মনাদ শুনে তার, না কুরিয়া স্থবিচার, তমি আর কিবলেতে বাঁচো ?

সোমে সোৰে বাবে বাবে, দও দেও একেবাবে,

আছ, আছ, আছ তুমি আছো । দঙ্গাতা নাম ধর, দোবী কনে দও কর,

হর হর, হর পাপ ভার।

ক্রিণাসাক্ষী দরামর: বিচারে বেমন হয়১ুসাধুমনে দেও পুরস্কার এ

'কণ্ডা নাই কেহ মার এইরূপ এ সংসার,

नित्व दव नित्व भाव नाम ।'

#### क्रिजीमध्याङ ।

. 2.

এ কথা তো শুনিব না। 'যুক্তি' বোলে গুণিবনা। এখনি করিব উপহাস ৷

'ফুডাবে' বদাপি হয়, সে 'ফুডাব' অনানয়-

সে 'ৰভাব' ভূমিইতো হও।

স্বভাবে স্থভাব লোমে, ধাতা, পাতা, ত্রাতা হোরে, 'কাবণরপেতে সদা' ব্র ৪

আমারে এ সব লোক, আন্তিক, নান্তিক কোক,

(य প্রকার ইচ্ছা বার হয়। অপ্তি নাত্তি নাহি জানি, কেবল তোমায় মানি, তোমাতেই মন বেন রয় ॥

প্রাণাধিক প্রিরতম। হর হর হর শ্রম,

কর কর রূপা বিভরণ।

শুকু বোলে কারে ধরি, কার কাছে শিক্ষা করি, মানবের ধর্ম-আচরণ ?

অনেকেরি কাছে যাই, শুরু না দেখিতে পাই,

মিছেনিছি ভর্কবাদ করা। সঙ্গাম্বে সুপণ্ডিত, কিছু একি বিণরীত, ভিডবেজে অভিযানখন ং

বিদ্যার বে সার মর্ম্ব, নাহি দেখি ভার মর্ম্ব, কর্মে নাই শর্মের সঞ্চার। আমি 'স্থামী' বন্ধ কত, চলিবে আমার মত,

বিহানের এই অহমার !

পৃথিবীর সবঠাই, সশ্বান দেখিতে পাই,
অভিমানে সাধিতেছে ক্লিরা।
বেধ দেখ, দেখ দিতে, ধর্মনত চালাইতে,
দলাহলি করে তোলা নিরা।
কত মতে চলিতেছে, কত কথা বলিতেছে,
কত, হলে ছলিতেছে কত।
এইরূপ হোলাহেছে
সম্পার দেশে দেশে,
স্বর্গাইরি সংবা ক্ষয়বত।

মতগৰ্কি গবে অভ্যত ।

একের সন্তান হোরে, একের দোহাই লয়ে,

বিচারেতে বিবাদ বাজার।

ভব ভন্ন ছোঁবেনাকো, ভিতরেতে ভোবেনাকো, ভেসে ভেসে কেবল বেড়ার ট

ধর্মানুদ্ধে বৃদ্ধ করি, পরস্পার অন্ত ধরি, কাটাকাটি এতে প্রতে তোতে।

প্রকৃতিরে হাসাতেছে, পৃথিবীরে ভাসাডেছে,
বঙ্গাতির শোণিতের শ্রোতে!

ধর্ম্মের আচার্য্য থারা, এইতো ধার্ম্মিক ভারা,
ববিলাম ধর্মা-আচরতে :

নেথে গুনে সাধু ৰত, বিরুদে ক্লিছে ক্ল,

তুমিও হাসিছ ধনে মনে ছ সর্বাধর্ম ছাডে বেই, তোমারেই পায় সেই,

অভ্তৃত ভূমি ইওঁডার।

অংকার অভিযান, যুডকণ ব্লবান, ততক্ব ভোষাই কি পায় ?

শিখে "বিদ্যা অর্থকরী" পৃহত্ত্র ধর্মা বরি।
অর্থ এনে চালিব সংসার।

কিবপেতে অৰ্থ পাই, বন বন কোণা বাই, সেতো নয় সহক বাইপার ছ

সেতো নয় সহজ বছপার ।
জানে উপার্জন ধারা, বিষয়ী পুরুষ ধারা,
জর্কভারী বিদ্যা শিধিয়াটে ।

অবকরা বিদ্যা শিংসাছে।
বড় বোলে নিজে জানে, নিজে থাকে নিজ মানে,

কারে নাহি বেতে বের কাছে। প্রভা-মভিমানী বারা, মরি কিবে সভা তাবা,

সভাভার কি কব ব্যাভার ? কার্যা কোরে দেখিয়াছি পরীক্ষায় জানিয়াছি,

সভাভাই পাপের ভাণ্ডার । কত কাণ্ড খরে ঘরে, ভিতরে স্কলি কবে,

ভ কণ্ডি বরে বরে, ।ভতরে স্কাল কবে, গোপনে পাপের নাহি ভয়।

চুপি চুপি ব্যবহান। সাবধান সাবধান, দেখো বেন প্রকাশ না হয় ॥

যারা কিছু সভা হন, অনাদেই এই কন, উত্টির বাণ্বাণ্বাণ্

'আঞ্লে' থা কর ভাই, ভাহে কোনো পাপ নাই,

ঞ্চলশ হোলেই বড় পাপ\_।

टकांशी नाथ महासद, दम्ब त्मब ज्यामह. যজিল মজিল সব দেখা। পরক্ষণর পরক্ষারে, পাপাচারে রস্ত করে: কবিয়া মিখ্যার উপদেশ 🛚 দেখিতেছি এই ধরা, ছলনা-চাতুরিভরা, ভারপথে ধন নাহি আসে। লাবেতে বেধন হয়, সে কিছু অধিক নয়, निर्स्वाह नां इब अनावारम ॥ বনা ধনে কি প্রকারে, উদর চলিতে পাবে, পবিবার কিলে থাকে বশ ?

াই আমি যাব বাদে, ছখী বোলে দেই হাদে, ক্য কন্ত বচন কৰ্ত্স। বৈঞ্চিৎ ধনের পতি, ভারা ন্য শাস্তমতি,

মানমদে মেতে সহা রয়। নম্র হোরে প্রতিক্ষণ, বত্তই বোগাই মন,

তথাপিও ভূই নাহি হয়॥

**হত উপাসনা করি, ক্তরূপ ভেক্** ধৰি, নব প্রভূনাহন সময়।

্য স্ময়ে চাই টাকা, ভৰনি বদন হাঁকা, আুর নাহি হেলে কথা কয়।

্যবসা বাণিজ্য করি, যদ্যপি উদর ভরি,

বিশ্ব কত সহজ সে নয়।

ক্ষেবে করিলাস হির, কান মতে সংসারির, বিছুতেই সুধ নাহি হয়॥

পাইতে বাজাব প্রীতি, বদি দিখি রাজনীতি, রাজরীতি অতি সুক্টিন।

বালা বন রাজ্পাতে, ফিরিতেছি হাটে ঘাটে,

আমি নিজে দীন হীন ফুটাগ।
ভূমি অভি অণক্তপ, স্কল ভূপের ভূপ,
দেখিতেছ রাজ-আচরণ।

দোধতেছ রাজ-মাচরণ। রাজাদের রাজ্য পাউ, বেন নাটুয়াব নাট,

ব্যবহার বেশার মতন (

ভূপতির ওভদৃষ্টি, কাণামেঘে ঘেন বৃষ্টি, , এ কৃষ্টি ভূষ্টি পাবিনে বৃক্তিতে।

় ক কল ভূল পাৰেনে ব্ৰেডে। তোৰে কত পোঁৱে আশ, বোৰে হয় সৰ্কনাশ, নাজি দেৱ দেখিতে অনিতে ॥

লোচন বাঁহার কাণ, চোখে না দেখিতে পান, শুনে শুধু করেন বিচার।

ইংগ বন্ধু কোতে পাবে, সে কথা কহিব কারে ?
সম্ভিত্ত চহণে নমস্থার #

বচনেতে কাৰ্য্য নাই, বাজখারে অর্থ চাই, কিনে হয় সংঘটনা ভার ? •

"মান" আর "অপমান", তারী ছই বলবান,

বন্দা করে ভূপতির ঘার 🛭

**बहें कथा कहा "मान, " थाटक मान, शारत मान,** এসে। এসো, খোলা আছে পুর। "্রপমান" ডেকে কব, অপমানে থাকে ভয়, **এ**দোনারে দূর দূব দূর ॥ মানবেৰ অভিমান, কত তাৰ পৰিমাণ. অসুমান বিছুতে না হয়। বিসেই বা বাডে মান. বিসে হয় অপমান. ব্যবহারে মনে কবি ভয় ॥ ধনী আবে রাজগণ, কি বলিলে ভুট হন, নিরপণ করিডেছি তাই। 🕠 মহিনার সম্বোধন, মানময় স্ভাবণ, "বিশেষণ,,গুঁজে নাহি পাই 🛊

যথন যে ভাবে রই. ভোনারে হে "সর্বস্বই, 'কৃমি' বোলে, 'ভুই' বোলে ভাঁকি।

যা বনি ভাতেই ভুঠ, কিছুতে না ছও কুঠ, মনে কিছু ভর নাহি রাবি ঃ

মাজুবের সংখ্যধনে, বড় ভর হর মনে, তুমি "তুই" দাধ্য কার কয় ? 🌞

"মহামান্য গুণমণি. শিরোষণি দুপুষণি" মুহাবাল "ৰাৰু" মহাশয় 🛭

যত কৰ সংখাধন, ভবু নাছি উঠে মূন, কি বলিব, ভেবে মরি ছবে।

ভৌষাহে হে লয়াময়, যদি বলি "মহাশণ" বাধো বাধো বেন হয় মুখে ॥

হেখানে দিপদ বত, প্ৰায় সব এই মত<sub>ি</sub>

ছই এক সাধু লোক বারা। স্বলাতির দেখে গতি, হোরে মতি ওদ্ধনতি, লোকালয় ছেড়েছেন তাবা 1

বান্ধব, কুটুৰগণ, আর আর নিজ জন, স্থাৰ বৰ সকলের সহ।

নাহি মুধ একটুক, দিন দিন ঘটে ছথ,

বৃদ্ধি হয় কেবল কলহ ঃ শোকাঢ়ারে দেশাচারে, ছান্ডি-প্রথা-ব্যবহাবে,

নাহি হয় সভ্যের প্রকাশ। मृट्डाद इहेरल माम, এ मकल इब्र नाभ,

ন্দাকেতে করে উপহাস **ঃ** স্মাজেতে যদি রই, সভা-সভা ছাভা হই,

ভোষা ছাড়া ছোতে তবে হয়।

সূত্য আর লোকাচাব, আলো আব অন্ধরাব, একাধারে কেমনেতে রয় १

ৰদ্যপি ভোষার শ্ববি, সত্যের সাঁধনা কবি, দেশ ভার থেব করে কত। '

खुनाठांदी निरक बाडा. **जनाठां**दी दल छात्रा.

হরি হরি ভেবে জানহত ।

স্বভাবে বিকারে মরে, ছরি বলে ভাস ধবে, মিগাময় লগহ অসহ ৷ আপনি অসৎ হয়, সভেরে অসৎ কয়, হার হার হার রে জগৎ। জগতের এই গভি. নর নছে মহামতি, स्रथ नाहि इद्र थरन करन । পুর্বতন সাধু বত, তপস্যায় হোয়ে রত. সাধ কোরে গিয়েছেন বনে 🛭 রাগ, বেষ, অহস্কার, অভিমান, পাপাচার, ধনের বিকার নাই যথা। बनहत-मन्नी दशास, दक्यन माधना लाएग, নিতা-স্থাধ রয়েছেন তথা **।** সে সাধুর সঙ্গ-বোগ, কপালে হোলোনা ভোগ. মিছে কেন নর বেহ ধরি ? যথা বোগা বোগাসনে. গিবে আমি সেই বনে-পণ্ড কিছা পাখী হোৱে চরি।। ওচে পণ্ড পক্ষিগণ! শুন মম নিবেদন, যান্তনা সহেনা প্রাণে আর । मानत्वर त्मरु निया, ट्लात्मत्र मंत्रीत्र मिया, কররে আমার উপকার ॥

সাধুরে তোরাই সাধু,
বিষয়ে না হও ঝালাপালা।

ৰ্থা কৃচি তথা বাও, যথা কৃচি খাও দাৎ, ভূগিতে না হয় কোনো জালা।।

ভূগতে না হয় কোনো আলা।।
কুল, মান, আতি, ধৰ্ম, নাহি জান কোনো কমু,
নাহি থাক দলাদলি ঘোঁতে।

প্রকাল নাহি মানো, রাজণীতা নাহি জানো, তাই থাও বধন যা ভোটে ৷৷

নাহি জান জ্রাখেলা, নাহি জান ৩৫%, চেগা, নাহি জান মহ পুলা তব।

নাই জান মন্ত্রপুছা তব। নাহি জান তোষামোদ, উমেদারি অনুবোধ,

কেবল শিখেছ নিজ বৰ।। অভিনান কিছু নাই, এক ভাব সব ঠাই,

অক ভাবে গাক চিবদিন।

স্লাই আনশ্যয়, স্থানর বলাশ্য, নাহি মানো মৌলিক কুলীন I

নাহি দেও রাজকর, বাজাবে না কব ডগ, ঠেকনিকো রাজনীতি দাব।

ঠেকনিকো রাজনীতি দার। দেওনি হাটেব কুড়ি, থাওনি গুরুব ছডি, নাহি জান বাদ আর আয়।

নাহি চড় পাড়ী বোড়া, নাহি পর জানা জোড়া,

নাহি পর বস্তু, অলঙ্কারণ

জ্ঞাপনি নাবাব্হও, কাহারে নাবাব্হও, নহিবও "বে আহতার" ভার। কিছুই বাণাই নাই, সম ক্ষে আছে ভাই, নালি চাও বালিস, মাজুর। স্থভাবে হয়েছ রাজা, নাহি আর বালাসালা,

স্বভাবে হয়েছ রাজা, নাহি আর বাজাবাজা, নাহি কর "চ্ছুর চ্ছুর ঃ" বেহ নও হাডি, মুচি, স্বাই সমান ভচি,

কখনই নাহত মৰিন্।

ধ্শা, কালা, কাটাবন, ভাহাতে প্রস্র মন, নাহি করে গাফা ঘিন্ ঘিন্।।

নাহি দান, প্রতি গ্রহ, ভোগ কব শুদুগ্রহ, দিরে।

ছিতি, নাশ কি প্রকারে, কি হতেছে এ সংসাবে, এহবার দেশনাবে। চেয়ে।

নাহি চাও রাজ্য দেশ, মনে, নাই ছেবাছের, প্রধন করনা হরণ ৷

ভাঙার উদর মাত্র, পূর্ণ কর সেই পাত্র,

নাহি জান সঞ্য কেম্ন ?

পরকুজ্। নাহি কর, পরিবাদ নাহি ধর, নাহি কর লোকাচার-ভর ।

সাধুব খাতক নও, আপনিই সাধু হও, সুলাকাল স্বয়-ছ্বর ॥

স্বাই মনেতে থুসি, নাহি ছোঁও কোণা কুনি, কুশো হাতে আছু নাহি কর ৷ নাহি লও কোনো হখ, কেবল কবিছ সুখ, ৰাপ, মোলে কাচা নাছি পর।। রবি আর ক্ষিতি গোল, শাস্তে শাস্তে কত গোল, সে গোলের গোলে নাহি থাকো। কিছুর দংশয় নাই, মীমাংদার হেছু ভাই,

শুকু বোলে কারে নাহি ডাকো।। থলে মানবের কাছে, পাপতাপ ঘটে পাছে,

মনে মনে করি এই জ্ঞাস। निक-नार् पानी-नह, विज्-शादन जह तह,

বিরল বিপিনে কর বাস ৷ লোকালরে এসোনাই, ভাল করিয়াছ ভাই, এলে পরে প্রমাদ ঘটিত।

মাহুষের ব্যবহারে, অভিযান অংকারে, হুদরের ভাগুরে ভরিত।

কিছ ভাই স্বাভি করি, সরল স্থভাব ধরি, সর্বতা দেখাও দেখাও ৷

স্বভাবের ভাব বাহা, বিশেষ করিয়া ভাহা. মানবেরে শেবাও শেবাও ঃ

তোমাদের আচরণ, সদালাপ স্থবচন, कारनमा क्यान नद रठ।

स्थार पात्र विकानी, छाई बर्ण नीह थानी, श्मित कानित चात्र कछ ?

দস্ত যার নাহি রয়, মহাপ্রাণী তারে কয়, অভিমানী মহাপ্রাণী নহে:

মত হোরে অহকারে, এই নর কি প্রকারে, আসনারে মহাপ্রাণী করে ?

ভোমাধের ভগবান, করেছেন 'বাহা' দান, তাই নিয়া স্থাপে কর ভোগ।

ভাব সেই গরপ্রভূ, শিবনা শিবনা কভু, মানবের অভিযান-রোগ ।

নান্ধ্য আভ্নান্ধ্য । দেখিয়া শভাৰ-ভাৰ, ক্রিভেছি অভ্ভাৰ,

ৰথন বে ভাৰ ঘটে ঘটে। ওছে ভাই বনচর, বদিও না হও নব,

মহৎ তোমবা ৰটে ৰটে।

ঈশবের "আজ্ঞা" বাহা, তোমরা পানিছ তাহা, কথনই করনা বজন।

বধাচারী নর বত, হিতাহিত জানহত, নাহি করে নিয়ম পালন এ

নাহি করে নিয়ম পালন 🛭

স্থভাবে শোভিত সবে, স্থভাবেই হুখে রবে, অভাব না হবে কোনো দিন।

4014 HI 204 COICHI 144 I

আমার এ কলেবর, অভাবে প্রিত হর,
আমি নর চির্লিন দীন 

।

নর দেহ, নেবে, নেবে, ভোর দেহ দেবে দেবে, নেবে, নেরে, ঘর, ঘার, চাণা।

#### কবিতাসংগ্রহ।

বিনর বচন ধর, হার হোতে মুক কর,
কীণ বেশে হোসনে রে বাপা ।
বোরে বাছবের বেব, বাছবে করিরা থেব.
বিহা কাল করিবাম বই ।
ব্যবপে নাছ্য কই, আমন নাছ্য কই,
আনি হো মাছ্য নিজে নই ।
কোথা বিভূ বিশ্বকর, আমায় করিরা নব,
বেগনা বিতেছ কেম আর ?
কর বেবি উপবেশ, কেম বিলে রাগ বেয় ?

কেন দিলে গড় অহমাব ণু তুমি নাথ ইচ্ছামুল, কৰ বাছা ইচ্ছা হয়,

ইজাৰ চালিছ এ সংসার। বে কলে চলাও চুলি, বে বলে ৰলাও বলি, সম্ভাৱনা কি আছে আমাৰ ?

স্থাবনা কি আছে আমাৰ লৈ কিন্তু নাথ মনে জানি, নর বটে মহা গাণী, ভাহাতে সংশ্র কিবা আছে ?

কাম, ক্ৰোধ, অহন্ধাৰে, লোভে যার ছারেথাবে, এই বড় দোখ ঘটিয়াছে ঃ মানবীর মানবীর, শক্তি অভি হনবীর,

হর তার অভাব যোচন। ,
নানারণ যুক্তি ধরি, নানাবিধ গ্রন্থ করি,

বস্তত্ত্ব করে নিরপণ 🛭

বাকিবণ, মলস্কাব, স্নোতিবাদি কাবা, আৰু, আয়ুর্কোন, নীতি-উপদেশ।

चावू (वसन, नाः ७-७ मानः) चड्ड चानि मंड मंड. विवस्यव विना। यहः,

জ্ঞান আরে বিজ্ঞান বিশেষ॥ জ্ঞানেতে তোমার লানে, ভক্তি কবি তাই মানে,

জ্ঞানে কৰে এছেৰ বচনা। বাশি, পক্ষ, গ্ৰহ, বাব, স্থিব কৰি বাব বার,

গ্রহণাদি করিছে গণনা। কবিকার্যোদের ভোগ, চিবিৎসার হবে রোগ,

শিল্পকার্য্যে হয় কত ক্রিবা।

প্ৰস্পার সহকাবে, প্রস্পার উপকারে, বার সব অভাব ঘুচিয়া 🛚

মাজবেৰ বৃদ্ধিৰলে, কলে, জলে ভৰি চলে, ভলে কলে চলে ৰাম্প্ৰথ ৷

ভাহাতে কল্যাণ কত, স্থা লোক শত শত,

দূব নতে, ভমাসেব পণ। বিলাতে হতেছে বাহা, এখনি এখানে আহা,

ভাবে ভার আদে সমানার। ঘটিকাদি চাপাকল, সকলি বৃ**দ্ধির কল,** 

্বিশেষ কহিব বত আর ? এড **গু**:গ গুণী নদ, ছোৱে গুড কার্য্যকর, এড সহ করি প্রকরণ । ছেব: দম্ভ, কার্ব্য-দোবে, নাহি থাকে পরিচোবে, না পার স্থাবের আস্থাদন ।

ভবসিদ্ধ পার হেতৃ, জ্ঞানরূপ এক সেতৃ, মানবে কবেছ ভূমি দান।

বংসার-সাগর পাব, কেছ নাহি হয় আর, অকুলে পড়িয়া বার প্রাণ ॥

হার হার, হাহাকার, মুখে রব স্বাকার,

জীবিকার স্থার কারণ। সজোবের সমাচার কেন্ত নাহি লব আর.

হুথা করে জীবন বাপন ॥

কুপা কর কুপাকর, মানবৈ মানব কর,

হর হর মনের বিকার। আমিও মায়ুব হই, মায়ুবে মায়ুব বই,

ধরি মানুবের ব্যহার **!** 

# সম্বন্ধ নিৰ্ণয়।

অনসর্বো তরা ধরা, কারো ত্রথ নাই।
আহি আহি, আহি আহি, করিছে গবাই।
শোক তাপ, বিলাপের, বেবলা কেনন?
কাতরে তাকিছে পরে, করিরা রোধন ৪
তাবের বে বরে কৃমি, নাহি বেও কাব।
চলনাকো তোলো কথা, হয়েছ গারাণ।

ভৌমারে ডাকিছে তবু, জোলে পুড়ে মরে। ष्यविमात्न इत्थ छाहे, नाहे नाहे करत ॥ माखिक, नाखिक चारक, नाहि मान्त (दह । আস্ত্রিক নান্তিক হয়, এই বড খেল। করনা কুশণ দান, বিহিত বিচারে। তুমিই নাত্তিক কোনে, তুলেছ দধারে । नालिएकवा त्यदं कााल, त्वारल नाहे नाहे। আছ, আছ, আছ, বোলে, আমরা বাচাই। 'নাই' হোলে মর তুমি, 'মাছ' হোলে বাঁচো। বাব বার বলি ভাই, আছে। আছে। আছে। ॥ বিছুইতো হইতনা, তুমি নাহি হোলে। আমবা স্বাই আছি, ভূমি আছো বোলে।। মনেতে না দেবা পাই, নাহি পাই 'পঁচে' | नारा करी क सत्त, ताबि कारह बारह।। পাঁচ ছাড়া, আঁচ ছাড়া, এমন বে ধন। সহজে কি হয় তার, ভত্ত নিরূপণ ? অক্টিরপঞ্জে পোড়ে, স্থির নাছি পাই। মনে यहि তর্ক করি, নাই, বৃঝি 'নাই'॥ শরীর আড়েই হয়, নাছি ছারে ধানি। (सं) शाहेबा (कुँरन डेडि, डबनि व्यमनि ॥ ভয়ন্তর সেই ভাব, না হয় গোচর। কেমন কেমনু করে, মনের ভিতর 🛭

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

ಲ್ರ

সে সমৰে 'কেটা' বেন, ভিতরে চুবিযা। ঘোৰতর অন্ধকারে, আলো প্রকাশিয়া ॥ বলে ওবে, দেখ দেখ, কেন হোস জড় ? ঠাস কোরে, মনের, গালেতে মাবে চড়।। চড মেৰে নাহি থাকে, কোথা চোলে যায়। সে চজে চেতন পেরে, করি হার হার॥ বাহিবে, ভিতরে আর, নাহি দেখি তাবে। (कम्या त्म आत्मिक्त, (शन कि ध्यकारत ? যথন প্রকাশ পায় সে জ্যোতিব ছটা। তখন ভিতৰে আৰু, থাকেনাৰো চ টা।। সমাগরা সপ্তথীপ, তব অধিবার। ছয় ছেডে শেষ ছীপে, করিছ বিহাব। পৰম পীষুৰ ভূঞা, করিতেছ পান। আপনি আপন স্বরে, ধবিতেছ গান ॥ इप्रशेष्ट इप्र थाटक. मना यात्र (मथा। তোমার সে নবছীপে, ভূমি থাকে। এতা । সেথানেতে নাহি হয়, ছয়েব গমন। বাজেই সহজে তাই, না হয় মিলন।। অগ্নি, জল্, বায়ু আছে, আছে চাকা, কল। চালাতে ভানিনে আমি, হরেছে অচয় ॥ অকরে অকরে বোগ, সম্ভান না হয়। কলের কুলুপ থোলা, শক্ত অভিশয় (

শেখালে না. লিখি নাই. কে শেখাৰে আর ? মিছিমিছি ডাক ছাজা, হোলো, বা হবার ৷ অধিক ভাবিতে গেলে, বেডে বায় বাট । এখানেও 'তুমি' 'আমি', সেবানেও তাই।। পিতা বলি, মাতা বলি, বন্ধু আর ভাই। ৰখন যা বোলে ড্ৰাকি, তুমি নাথ তাই ॥ ভাবের অন্যথা বেন, কিছুতে না হয়। বে ভাবে সে ভাবে, তুমি আছই সণর 🛭 তুমি, আমি, উভয়েতে, যে সুপাদ, হয় ! সে সুপাদ্ কথনই, বুচিবার নয় 🛭 কাণ পেতে গুন গুন, দোহাই দোহাই। ন্তন সম্পৰ্ক এক, ঘটাইতে চাই **ঃ** नाश्विदकता, "नाश्वि" (बारन, क्तिएक निश्न ! "অন্তি" বোলে, আমি কবি, ভোমার স্থাপন # তোমাব "অভিখবাদ" করেছি বধন। পাৰাপাকি এক খানা, করিব তখন 🏾 জন্ম দিয়ে "বাপ,, তমি, হরেছ আমার গ্র জন্ম দিয়া আদি তবে, কে হব তোমাব ? যদ্যপি আদর কর, মনেতে বিচারি। এ স্থপাদে ভোষার তো, বাবা হোতে পাছি 🕽 ৰারবার "বাবা" বোলে, ডেকেছি ভোমার। একবার "বাবা বোলে", ভাকনা আমার ?

ছেলের এ আবদ্ধারে, আগর তো চাই।
বাণ্ বেলে ভাকিলেতো, লজ্ঞা কিছু নাই।
অধ্যে বলিতে বাণ্, লজ্ঞা বহি হয়।
বা বলিবে, ভাই বল, বিশ্ব না সর।
ছেলে বল, হাস বল, বলা কিছু চাই।
না বলিতে কোনোযতে, ছাড়াছাতি নাই।
স্টে না বলিতে পার, ভক্কি কোরে বও।
"ওরে বাবা আজ্ঞারাম" হাবা কেন হও?
বেরণে জানাতে হর, সেরপে জানাও।
বেরণে লানাতে হর, সেরপে আনাও।

## বিভূর পুজা।

লয় লয় প্রসংগীন, লগতের সার।
স্কলি অসার আর, সকলি অসার ।
ইজার করিরা ক্টি, বিবিধ প্রকার।
ইজার করিরা ক্টি, বিবিধ প্রকার।
ইজার করিছ পুন, সকল সংহার ।
ইজারর ইজা তর, কে বলিতে পারে ?
বর্ণহারে বর্ণিবারে, সদা বর্ণহারে।
দেবে তব অসন্তর, এ তর বিতব।
ইবরণে বে বাাবাা করে, সকলি সক্তব।
বিবরণ, সর্ক্রিবার, সর্ক্র্লাধার।
আরারণে বিরাজিক, সেহে স্বাকার।

ষ্ঠ ভ্রমে ভ্রমে জীব, ভোষার উদ্দেশে। मिट्ड (इंडी मुशकुका, ज्यान मात्र त्यात ! বিশ্বভরা আছে সুধা, বিশ্ব নাহি চার। विव (थएक विवस्त्री, श्रांत्रवाद्य शहा অম্ল্য রতন করে, না করে ইউন | কাচেৰ কারণে কবে, শবীর পতন 🛭 বোর হল, ত্রমে অন্ধ, অন্ধকার ভার। নয়ন থাকিতে জীব, দেখিতে না পায়॥ মনোময় ভূমি কিন্তু, ভোমাৰ ভূলিয়া। কত ভাবে কত ভাবে, বল্পনা ভূলিয়া। করুক ধরুক শিলা, বদি থাকে প্রেম। ভব জ্ঞানে মাটা ধোরে, প্রাপ্ত হবে হেম ৷ কি দিয়ে পুজিভে হয়, কেহ নাহি জানে। গন্ধান্তল বিবাদন, গন্ধ পূপা আনে॥ অরপ শ্বরূপ তৃষি, 'কভ রূপ' বলে। তুমি কি অলের বশ, তুই তুমি ফলে? যোগ যাগ ভোগ রাগ, ভোগে করি ভব। আগে ভাগে পূর্ণ করে, আগন উদর ॥ বার থাক যত পারে, অনু জল ফল। তোমাতে থাকিলে মন. তবে পাবে ফল 🚛 एक माथ ! अनाथनाथ, शीन व्याप्त । আমি দীন, বোধহীন, ক্লীণ অভিশুর 🛊

### ८० क्विकांगः(अर्।

কি ভাবে ভাবিৰ ভাব, না পাই ভাবিলা। क्रगांक्ट्र, क्रमा कड़, निक खान पिड़ा ह স্বপতে বে কিছু দেখি, সকলি ভোমার। कि निश्न कतिब शृक्षा, कि चाह्य जामार ? ভূমি প্ৰভূ আমি দাস, ভোমারি হোরেছি। नित्त्रक्, श्राटबिक् स्मर्, द्वारबिक् क অামারে কোরেছ দান, এই দেহভূমি। তাহাতে দিয়েছ প্রাণ, প্রাণনাথ ভূমি 🛭 আমার না জেনে 'আমি', আমি আমি কট : তুমি বদি স্থামী হও, আমি আমি কই ? আমি আমি নই. কলে আর কেহ নই। ভগদাবা প্রযাকা তব সভা চট । মাটির নির্শ্বিত ঘট, নছে মাটা বই। नित्वर विष चात्रि, नित्वरे दहे ॥ (य नमार निक क्षेत्र), कतिरव इद्ध । लाहा लाह जिलाहेटव. इंडेटव प्रवत n व्याकान तरहरू धडे. परहेत व्यातारत । এই ঘট হোলে নাল, মৃত্যু বলে ভারে॥ শুনা হতে পুণা পাপ, গণা করি লয়। व्यक्त बार्तिना रुष, महिला कि स्त्र है ( es en se cates, lawe faste ! व्यक्टर क्षामांत्र क्षकि, व्यक्ति भाषांत्र ह

দাতার প্রধান ভূমি, দরার নিধান। দত্তহারী কেই নাই, ভোষার সহার 🛭 पिद्य थान भून नह, कतियां हतन। তথাচ ক্রণাময়, পভিতপাবন । উপকারী দত্তহারী, দেহ কত শিবঃ এ ভব-वद्गन-मात्र, मुक्त रह जीव 🕽 যভকাল এই দেহৈ, থাকিবে জীবন। ততকাল তোমাতেই, থাকে যেন মন 🛭 কবিতে ভোমার প্রভা, কোথার কি পাই। চারিদিকে চেয়ে দেখি। কোন ফ্রব্য নাই \$ প্রেমপুষ্প প্রদ্ধানীর, ভারবিষদল। সবে মাত্র আছে এই, পূজার সম্বল 🛭 শরীর নৈবেদ্য মম, উপচার মহ। সাজায়ে বেখেচি এই, বহ বহ বহ । চ্যবিপু দান শেষ, অতি বলবান। তোমার নিকটে বিভু, দিব বলিদান 🛭

বিশ্বকৌতুক।

হায়রে তবের কার্য্য, বনিহারি যাই। কুহবির কুহুকেডে, মোহিত সরাই। দেখিয়া কৌচুক কাণ্ড, নাহি মিটে গাঁই। বত বেধি তত আরো, বাড়ে জাপাবাই। र्यन (र निर्फ जामि, नवन कितारे। স্টির দৃষ্টির কলে, নাহি যেলে খাট চ কোথার কৌভুক করে, কৌভুকী গোঁসাই। নাচে সৰ ভুডচেলা, কোথা সেই চাই ? কোথা গেলে দেখা পাৰ, কোন, পথে ধাই ? একবার বারে মন, ভিকা এই চাই 🛚 মন বলে সে হে বছ, ভয়ানক ঠাট। কেমনে ছৰ্গম পথে, একা আদি বাই ! लागाधिक लाग मम, महामत छाइ। পারি বেতে যদি ভারে, সঙ্গে আমি পাই 🛭 কুধাহরা স্থা আছে, পেটভোরে থাই। চুল্নে স্থল হোয়ে, বিভূগুণ গাই। প্ৰাণ বলে, কি বলিলে, ফিরে বল ভাই। ভুনিয়া তোমার কথা, উঠিতেছে হাই s (मथ (मथ, या (मथिछ, कि (मथिख छाड़े। (नविट्ड म्युन्य, जामि जाकि राहे । আমি গেলে যাব একা. দেখা দেখি নাই। আৰ কিরে পাবি ধ্থতে, জননীর মাই ? আনমি বটে বেতে পাবি. কিন্ত যদি যাই। পুনর্কার আদিবার, আজা আর নাই ॥

# ভক্তাধীন :

বে হও, নে হও, তুরি, হে হও, নে হও।

তক্তাবীন ভগবান, তক্ত ছাড়া নাই।

তাবনন তাবলদে, অবহেই বও।

অবহনজন তুরি, কলাচ লা হও।

বাকালনে বুননার, তুরি বংবা কও।

সর্পালনার পুরি, নমুলর নও।

ভাবি হোরে ভবভাব, মভকেতে বও।

আবি হে কি দিব ভাব, বুবে ভাব লঙ।

হুবি, বে হও সে হও, বি হও।

হুবি, বে হও সে হও।

হুবি, বা হও বে হও।

হুবি, বা হভাবা নঙ।

### আমি।

সঙলি অসার আর, সকলি অসার।
চিদানক্ষ সদানক্ষ, এক যাত্র সার র
স্ব বন্ধপ বিষরপ, তুবি বিষ্কাব।
এ কগতে কেবা জানে, মহিনা তোনাব ?
চিন্নর চৈতনারক্ষ্য, সর্ক্র্যাধার।
আ্থার্কেশে বির্বিক্ষ্য, অধিব সংবার র
স্বভাকে তিনির্বর, অধিব সংবার।
আ্থারেশে তব্র রগ্ থেতেত্বে প্রচির র

ষ্ঠি না প্রকাশ পাত্ত, প্রস্তিভা তোমাব।

স্বস্থ কি ছোতে পাত্তে, পোভার ভাগুর ?

আমি বে ছে, 'আমি' বিদ্যু নে শংলামি' টি কার ?

আমি 'আমি' ভূমি, সে নছে আমার ঃ

গুমিই বলাও (আমি ) বলি, বারমার হার ?

এ আমি বাহার (আমি ) বলে সারা কার ?

এ আমি বাহার (আমি ) পুন ছোলে ভাব।

বলিতে বলিতে (আমি ) নে হোলে ভাব।

বলিতে বলিতে (আমি ) নই, কে হইবে কার ?

অভএর এ সংসার, সব ক্ষিকার ঃ

সকলি অসার আরু, সকলি অসাব।

চিচানক্ষ স্থান স্থান স্থান সার ঃ

### ভন্ত ৷

এই এই, সেই সেই, সেই সেই, এই এই, এ প্ৰকাৰ বাংবাৰ কক আৰ কৰিব ? বে আপাৰ হোগো আনা, প্ৰিল না সেই আপা, কত আৰ হৈছে ৰালা, আপাক্ষেত্ৰে চবিব ? পেৰিয়া কালেৰ বালা, ই সালা নাই চালা, ফেলে কত অপ্ৰশাসা, ধৰা আৰ ভবিব ? আমাৰ বে বিশ্ৰবৰ, সে ছাড়িছে কলেবৰ, কৰি তাৰে ব্ৰ বহু, কিছলেগতে গ্ৰিব ? এই আছে, এই গত, এই হোলো, এই হত, এই এই কোনে কত, শোক-আনে আনি হ ?
এই আদি, তুমি এট, আমি দেট, তুমি দেট, এই এই, দেই দেট, একে একে নারৰ ৪
শোতেছি তুলের বান, কোবা বান, বাবে বান, বাবে বান, বহুবান পরিব।
এবনো বিবন্ধ কোধ, কিছু নাহি হয় বোধ, হইলে নিখান বোধ, এখনি তো মহিব ৪
কাটো মহানেছ-আল, ভাব কান, মহানান, কোবে আর কান কান, কড কান হুৱিব ?
গাবেশে কবিবার, কম তার পদ সার,
তীম ভব-পারাবার, অনারানে তরিব ৪

জীবের প্রতি :

কে তুদ্ধি, কৈ ভূমি, জীব ! কে তুমি তা কও ? বে তুমি, 'বাহার তুমি, তার " তুমি " হও ॥ বেহে কর, আমি বোহ, "বেহ' তুমি নও ॥ আন্দর্যো, হংস্কলৈ, দেহে তুমি নও ॥ কে তোবার, বহে তার, কার তার বও ? জানার জুবার করি, কার তার বও ? ভিরমণ ক্ষিত হয়, এই বংগারর ॥ বনে কর, কিরগাতে, হোকে তুমি নর ॥

করিছ বে বেহ পেরে, এড অহস্কার। मिए एमर, अरे एस, मान कर कात ? মনে কর, কোঝা ভূমি, করিভেছ যাস ? माम कर, किकाल था, एस स्ट नाम ? মনে কর, কে ভোষার, তুষিই বা কেবা ' আমার বলিছা ভূমি, কর কার দেবা গ দেহেতে অভেদ ভাব, একি অপরপ। একবার ভাবিলে না, আপন স্কুপ ? কেবল এমেতে কর, আমার আমার। অদ্যাববি আস্থবোর, হোলোমা ভোমার॥ ষায়ার কুহকে ভূলে, কিছু নও আভে। ভূলিয়াছ পুরাতন, স্থা "অবিজ্ঞাত" ঃ কেবল দেখিছ সূল, দৃষ্টি নাই মূলে। পেলে নাম "পুরঞ্জন", নিরঞ্জন ভূলে 🏾 মুকুরে নির্ধি মুখ, স্থুখ কন্ত হ্বপ। মনে মনে অভিযান, হোয়েছি প্রস্থ । शनरम्य श्व निश्वा, श्व छात्र छात्रि । ' ব্রাহ্মণ" হোষেছি বোলে, কর কন্ত ভাবি ঃ

বেষপাঠে পূজা পাও, পঞ্চিত হইরা। সবে করে স্বাহর, কুলীন বলিয়া ঃ আগনিই ভবে পোড়ে, না পাও পাখার। অথচ পোড়েরে কঃ, তবমরী পার ঃ जिन बार्रे " विकृ " (वैटव, जाननात नतन ।

অিলোক বেঁধেছ তুনি, কুহকের বলে। একেতো মারার পুত্রে, পভিরাতি বার্টা। व्यवित्र व श्व (मर्ट्स, लाशिवारक शैक्षा । কোপায় সুবোর গোড়া, নিরুপণ নেই। थक (शरत केंद्विरक्ट्ह, क्छ दबहे, दबहे ।। করিয়াছ আরোহণ, অভিযান-রবে। কেবল করিছ গতি, প্রবৃদ্ধির পথে।। ছেড়ে ভন্ধ, মদে মন্ত, কিলে পাৰে পদ 🤰 হারাইলে পূর্বকার, সহায় সম্পদ।। ব্রাহ্মণ, ক্ষব্রিয়, বৈশ্য, শৃদ্ধ চতুইয়। অভিমান সার্যাত্র, কিছুইতো নয়।। " ডুমি" কোন বৰ্ণ নও, ভাতি তবু নাই। দেহধর্মে অহকার, কেন কর ভাই ? নর নও, নারী মণ্ড, ভুমি নও কেউ। ত্রিগুণ সাগরে কেন, গুণিতেছে চেউ ? তুমি, আমি, আমি, তুমি, ক্লেনো এই সার। ভূমি আমি, এক হোদে, কেবা আর কার ? দেহেতে অভেই জান, কর পরিহার। আমার ও বেই বোলে, ছাড় অহস্কার i। বিচারে ভোষার <del>তহু, কখনো জো নর।</del> ভূতের ভবন এই, ভূতে হবে লছ গ।

মধ্যে কেবা মন্ত্ৰীসূত, কবিল তোনাৱে ই কেন হও অভিচৃত, ভূতের ব্যাপারে ? ভূতের বুহকে বদি, হোমেছ হে ভূত । আর কেন নিছানিত্রি, লাশ কর ভূত দু সকলি ভূতের হাট, ভূতের কনন। ভূতাভীত ভূতনাধ, কররে করে।

নাহদে বাধিয়া বুক, প্রাকৃতির দেখ মুখ, मृत्त्र मारव अब इःश, विवरत्र विरम्ब ऋथ, হয় হয়, হোলো হোলো, না হয়, না হয়, হোলো, হর হর, নয় নয়, বিছে খেদ কোরো না। চিরভীবি নছে কেহ, পতন হইবে দেহ, পেরেছ ভূতের গেহ, মিছে কেন এত প্লেহ, बारक, बारक बाक् बाक, बाद बारव बाक् बाक, থাকে থাক , বার বাক , ছেবে আর মোরো না।। রবে আর কত কাল, কালে হর গত কাল, নিকট বিকট কাল, না ভাবিলে মহাকাল, এই কাল, সেই কাল, কালেই আলিছে কাল, ্ পাৰে কাল, বত কাল, বুধা কাল হোৱো না ট ভূলিয়াছ ভব ভাব, ভাবিভেছ ভব-ভাব, বভাবে স্থভাব ভাব, কর নিম্ব অস্থভাব, কি ভাব, কি ভাব, ভাব, কৈ বুবে ভাবের ভাব,

ভাবে ভাব আবিৰ্ভাব, অভাবেরে ধোলো না a মানসবিহারী হংস, তুমি হে তোমার অংশ, দেহিক্সপে অবতংশ, নাহিক তোমার ধ্বংশ, মানসের সরোবর, পরিহরি নিবল্পর, কর কিবে. গুণনীরে, আব তুমি চোরো না।। ছিলে ভূমি অপ্রকাশ, হইলে হে স্প্রকাশ, ভাল বাস ভালবাস, পেলে বাস কর বাস, কত আশ অভিশাষ, কত হাদ পরিহাদ, তন ভাষ ধর ভাগ, ভ্রমবাস পোরো না 🛭 আমি হে ছিলাম একা, পেয়েছি তোমার দেখা, নাহিক স্থাথের লেখা, আর কেন হও ভেকা. ঠেকিয়া ছোলো না শেখা, দিতেছ জলের রেখা, দেখো শেব ভূলে দেশ, আর যেন সোরো না 🏾 अभिरुदद यन नङ, बाइ जीद, शिंद हैंड. শিবরব মুখে কও, শিবেব সদনে রও, কেন হে অশিব লণ্ড, অশিবের ভার বণ্ড, বাব বার, বেহে আর, পাপভার ভোরো না 🏾

#### কে আমি ?

হে নাথ ৷ আমি আমি, আমি কেন কৃই ছে ? জেনেছি, জেনেছি নথা, আমি আমি, নই ছে ঃ আমি, কভু নই আমি, এ আমির ছুনি আমী,

ভবে কেন মিছে আমি, আমি হোৱে রই তে ' 'बाबि' 'बाबि' এই ভাষ, এ বে बाबि চিনাভাব, ভাবেতে দিশালৈ ভাদ, 'স্বায়ি' তবে কই হে ? मा (करन शरकृष्टि कारन, हैं।निबारक शात है।रन, বাতনার প্রাণ কাঁদে, কিসে মৃত্ত চই ছে? হোমে গেল যা হৰাব, উপায় ছিলনা তাঃ, বারবার কেন আর, করি হই হই হে ? লেগেছে বিষয় ফাঁস, নিজ অন্তে কাটো পাৰ, আশাবাস, কর নাশ, বলি পট পই হে। এমন কে আর আছে, বলিব কাহার কাছে ? আপনি তুলিয়া গাছে, কেড়ে নিলে মই হে ! ভরঙ্গ প্রথর অভি, নেগবড়ী ল্রোভয়তী, ব্রিবেণীতে তিনধার, খল তই তই হে। र ३ र ९ करूक्न, (मंद्र (मंद्र क्ल, অকুল পাথাবে পোছে, পাৰনাকো থই হে ঃ স্ক্ৰি তো গেল ৰোৱা, থাকিতে স্থপথ সোঝা, এ পাপ ভূতের বোঝা, কেন আর বই ছে ? थ मिरक रात्रहि मीन, (बाउँहि व्यानक मिन, **এ**थनिष्टे पिन पिन, ছোলো पिन गुडे हर । মিটে গেল আশাবাই, থেকে আর কাম নাই, व्यापनात्र (मर्टन शहे. रहारत त्रिश्रमहे रह। সমুদ্রের বিশ্ব বাহা, সমুদ্রের বস্তু তাহা,

নাটির নির্দ্ধিত ঘট, নহে মাটি বই হে ৪ বাধির না 'জামি' নাম, ছেচে এই 'পঞ্চপ্রাম', জামার বে নিজবাম, ডাই জামি কঠিছে। 'জুমি বিষ' প্রভাষর, এতিবিধ প্রভা হর, ভোমার ' ভোমাতে' নাথ, বহু জামি হই হে ৪

#### . কৈ তুমি :

তুমি কেবা আমি কেবা, না পাই সন্ধান। তোৰা ছাড়া 'আমি' হোৱে 'আমি' অভিনান ঃ এই তুমি এই আমি, এক বৃদি হয়। ভূমি ভূমি, আমি আমি, ভেদ নাহি বৰ ।। আসায় জানিলে আমি, আর নাচি দার। অহং-কার বোধ ভোলে, অভস্কার বায়°॥ বল বল ভক্ত কথা, শুনি স্বিশ্য। দেহ দেহ দেহ নাথ, দেহ উপদেশ # ভূমি আমি এই যদি, হোলো নিরূপণ। ঁতুমি আমি জুই ছাড়া, কারে বুলি মন **গ** (क मन ?—(कथन त्मडे, त्म मन किवल ? কেমনে জানিব সেই, মনেব স্থকপ ? তার হার, পারে আমি, সুধাইব আর ? ব্রিতে না পাবি কিছ, মনের ব্যাপার । তুমি, আমি. এক ঘরে, থাকি হুই জন।

কোথা হোতে এ আবার, আসিবাড়ে মন ? এক ঘবে ৰাস ৰটে, কিন্তু একা একা। গুপ্তভাবে থাক তুমি, নাহি দেও দেখা 🕯 তোমার না দেখে একে, বিবস ব্যাকুল। ভাহাতে আবার মন, করিল আছুল 🛊 না দেখি, না দেখি নাথ, না দেখি তোমাণ। মনেব না দেখা পেরে, ঘটিয়াছে দার। কোনোমতে নাহি হব, বাধ্য যে আমাব। ८३ (मथि, ७३ चाट्डा, ७३ नांडे चाद्र ॥ বাৰণৎ গতি কবি, কোগা বাব উদ্ধে ? কার সাধা ধরে ভারে, ক্রিভুবন টুড়ে ? কবে বা. এ মন হবে, মনের মতন ? কেমনে,মনের বেগ, কবিব বারণ <sup>2</sup> যত দিন এই মন, নাহইৰে বৃশ্। ভঙ্গিন পাইবনা, ভদ্ধ-প্রধারস ॥ মন যদি বৰে আদে, তবে কারে ভর ? একেবারে করি আমি, সমদর জর।। তথ্য এরপ ভেষ, আর নাতি রবে। मत्रामत्र निदक्ष कृषि, यत्नामत्र हटद ॥ কর কর কর প্রাকৃ, কল্যাণ আমার্ হর হর হব সব, মনের বিকার ।। মনের বৃচিলে রোগ, ভোগ হবে পেব।

ংহিংৰ না কাম, ক্লোধ, খোহ, মদ, ঘেৰ।। দূৰ হবে অহন্তাৰ, আছু-অভিমান। বিবেক বৈৱাগা ঘোঁহে, মনে পাৰে ছান॥ ভ্ৰমতম নাশ কয়, তপন হইবা। ব্ৰেখনা আপন ভাব, গোণন কয়িয়া॥

# অলৌকিক বৰ্ষা।

आलोकिक वरधान, विषय वााशाव । মারামেবে বেরিরাছে, অবিল সংসার।। অজ্ঞান-তিমির হোরে, হোর অন্ধকার। নধনেব জ্বোতি আর, না হয় প্রচাব॥ অন্ধকারে পরস্পর, আছে অন্ধ প্রায়। আপনারে আপনি, দেখিতে নাহি পায় 🛭 वाशनारत वाशनिहे, ना स्टब्स नहरन। পদার্থ নির্ণর তবে, হইবে কেমনে ? সভত্ত সমভাবে, মায়ারপ ঘন ৷ স্ষ্টিরপ বৃষ্টিধারা, ৰুরে বরিবণ 🛭 शाताव विश्वाम नाहे, वरह धक शात । সে ধানা কি ধারা, ভাহা কে কহিতে পারে ই বিল্যারপা ক্লপপ্রভা, ক্লপ প্রভা ধরে ৷ ভাষাতে চকিতে মাত্র, অন্ধকার হরে 🛊 খুভাবে অচির প্রভা, চির ক্তু নর :

এখনি উদয় ছেয়ে, এখনিই লয় ঃ ভাহাতে बीरदब्र मारे, किছু উপকার। চপলার আলোডে কি. বায় অন্ধকার গ বরবার শসা হয়, ক্ষেত্রে ফলে ফল। জীবের জীবিকারূপে, কৃষির কুশণ ॥ এ বর্ষায় দেহক্ষেত্র, জার্দ্র নিরস্কর। কোথা হোতে কৰ্মবীৰ, পড়ে বহুতব # বিবিধ বিষয় শস্য, হতেছে সঞ্চাব। ইন্দ্রির ক্রবকে ভাহা, করে অধিকার 🛭 বরবার পথ নাহি, পরিছার রয়। তুণ আর কাঁটাবনে, আচ্চাদিত হং ॥ পথের গক্তিক দেখে, পথিক সকল। ভয়ে ভরে গভি করে, ২ইরাচকল ৪ এ বর্ষায় সেইক্লপ, দেখ সর্বজনে। পাৰভের হেতুবাদ, তৃণময় বনে 🛭 পরমার্থ পথ আছে, এমন গোপন। পথ বোলে কখনো না, হয় নিরূপণ 🛭 সে পথের গুণ কেহ, দেখে না চাহিয়া। কুপ্ৰবে ভ্ৰমণ করে, স্থপথ ছাভিয়া ! बद्रशात्र थाएक बल, कश्चिम श्क्षित ? ध वर्षात्र गयान इकिन हिन्दिन ह (मर्वटक साजुक दिन, हिन्दिन वह ।

কৌন কালে কোল দিন কদিন না হয়॥ বংবার সন্ধ্যাকালে, খল্যোতের চটা : এ বর্ষায় ভার চেয়ে, অভি ছোরখটা । विषयत प्रवासन (कामाकित साँक्। ৰক্ষক করিয়া, জাধারে করে জাঁক । মানস চাতক হোমে, উঞ্চায় চঞ্ল। माबारमध्य (कर्तक वरन, तम सन तम कन ॥ নিরবধি নীর পানে, না হয় শীভল। য়ত খার তত হয়, পিপাসা প্রল ॥ কামনা ভেকের মধ্যে শুনিহা করব। বিবেক কোকিল আছে, ছইবা নীৰব ৷ ৰংবার মেগদল স্বল্ছইয়া। ভাবা, ভারাপতি, বাথে, গোপন কবিযা 🛭 जातिक बरदाम, महत्र खेकार i প্রবোধ চাঁদের প্রভা, না হয় প্রচার ঃ দয়া শাস্তি কমা আদি, তারাগণ যারা : ভারাপতি বিরহেতে, লুকাইল ভারা 🛊

## মনের মানুষ।

মনের মাসুষ কোথা পাই? মাসুষ বদাপি হবে ভাই! মাহা বলি কর তবে তাইঃ হিপদ হয়েছে যারা, বিপদের হেডু তাবা, কগতে মাসুৰ কেছ নাই!

মনের মাজ্ব কোণা পাই ?

মাত্ৰ মাত্ৰ করে স্ব. মাত্ৰ মাত্ৰ ভধু রব,

ফলে আমি দেখি সব প্র, মানুষ মানুষ করে সব।

নৰ সৰ দেখি একাকার, কিন্তু নাতি মানে একাকাৰ!

একাকারে স্বার বিকার। একাকার মিছে ধরে, একাকার নাহি ধরে,

মনে নাহি ভাবে একাকাব !

নৰ সৰ দেখি একাকার 🖁

ছাড় ছাড় ছাড় মিছা ভেক্, করিয়া জ্ঞানের অভিবেক, অন্তর বাহির কর এক.

হৃদরে পরম ধন, কর মুন দরশন, হওনা কমল বনে তেক,

হাতৃ হাতৃ চাতৃ বিহা তেক্ ।

তৃষিুতো চকোৰ বট মন ঃ

ভূমি জো চকোর বট মন,
হরেছে টানের(১) বরণান,
হথে বর পীত্র ভোচন।
এখনি যুঁচাও জুবা, প্রচাতে(২) টাদেব মধা,
চকোর কি পেরেছে কথম? \*

বল দেখি কোন এলে তবে ?

এ ভাবেতে ৰ'ত দিন ববে ?

কি ছিলে কি শেৰে তুনি চবে ?

মানিয়া জনমত্নি, তোমাঘ চেননা তুনি,

আমায় চিনিবে তবে কবে ?

বালে খার রহিবে না কেই, পেরেছ বে মনোহব দেহ, দেহ নয় ভূতের সে গেছ, কিল প্রাবের আপা, ভালিবের ভূতের বালা, নিয়ানিছি কেন বর বেচ ? ভুবালে খার রহিবেনা কেই ৪

বল দেখি কেন এলে ভবে ?

<sup>(</sup>১) চাদ-আরা।

<sup>(</sup>২) প্রভাঙ ৰুয়া।

এবনো বিভেছ কেন ক'বি ?
কৰি বা কি, জাৱ নাছি বাকি ?
কাপেতে কেমনে আৰু রাকি ?
হোবেছি মৰণগানী, কোথা তুলি কোথা আদি,
বিধন মুদিব আধি আঁবি।
এখনো বিভেছ কেন কুঁকি ?

## ভবসিন্ধু।

ঘোরতর নাদ করি, ডাকিতেছে দেবা। হাটে থেকে, ঘাটে এসে, নাছি পাই থেয়া 🛭 এ কুল ও কুল বৃদ্ধি, হারাই চুকুল। নঃবিয়া ভবেব কুলে, ভাবিয়া ব্যাকুল 🛭 আগেতে हा छाविनाम, नाविनाम चाहि। অকল পাথাৰ ইথে, সাঁডার কি থাটে ট বাতাদের চতাস, না মনে করে কেউ। কোণা হোতে আচহিতে, উঠিতেছে ডেউ ? থরভর স্রোভ ভার, ছোরভর পাক। না দেখি উজান ভ াটি, বিষম বিপাক ॥ কত **শত ভ্যক্ত, জন্**চর জলে। শত শত হুটলোক, অমিতেছে কলে ie কিরপে নিস্তার পাট, কিছু নাই ভির । ডেলাম বাবের ভয়, জলেতে কুমীর!

মিছে কেন ভ্রমিলের, মেলার মেলার ! गिष्ड दिन हातालम, व्यलाह व्यलाह ! সত্পার গেল সব্দ ছেলার হেলার। কেন না ছোলেম পাব, বেলায় বেলায় ? নিশা নিশাচরী প্রায়, হোতেছে বিস্তার। একে আমি হোর ঋহ, তাহে ঋহকাব ! निराकाद्य नीत्राकार, भर नीत्रमत्र । কোন থানে চর নাই, ভর তাই হয় ঃ ডাগর সাগর তার, তুমি নাত্র নেরে। (थरवह कारका माथा, नाहि क्य करता । বার বার ডাকিতেছি, দেখিরা তুফান। কর্ণহীন কর্থার, হারায়েছ কাণ 1 হায় হায়, একি দায়, কি হইল জালা ়া দেখে তুমি কাণা ছোলে, গুনে ছোলে কালা ! দেখিতে না পাও যদি, বলি শুন তবে। मित्न मित्न मीत्म (मृत्य, शाव कत्र छट्द # বুখার কি হবে আর, এখানেতে রোছে। षितहाता हीन आमि. विन यात्र caica s ক্ৰমেতে উথলে জল, ড্ৰে বায় ভূমি। ওরে জেলে পারে ফেলে, কোথা গেলে ভূমি ? অপার সাগরে এনে, অপারে রাখিনে। ভূবিৰে স্থপার ঋণ, অপার সলিলে 🏨

চাত্র করিয়া ভূমি, হয়েছ পাত্র। আতর প্রদানে অ।মি, হবনা ক।তব।। **এট বেলা চাল ভেলা, সাবা পর ভাটা।** পারাণির পণ দিব, মৃল ঘাহা মাঁটা ॥ কোরোনা ক্রাটুনি আব, পাছে উঠে বড়ি। বাধিবনা পাট্টনিব, খাট্টনির কৃতি ; রদি নাছইতে পার, পারি এই ভবে। ক্টাবে ও ধীবর জোবে, ধীবর কে কবে ? যা বলিবে তা কবিব, ভাতে আছি রাজি। পাব কর পার কর, পার কর মাঞ্চি॥ পার হোলে একেবাবে, হোরে বাই পাব। আবে না করিব পুন, এ পার ও পার।। ৰে পারের যত হুখ, সৰ জানিয়াছি। কোন রূপে পারে পাবে, পারে গেলে বাঁড়ি॥ কিছতেই পার নাই, অপারে ভাসিয়া। কে পারে পাইতে পাক, এ পাবে আসিয়া 🕈 সে পারে, সে পাবে থাক, যে পারে বে পারে। আমি কিন্তু কোনমতে, রবনা এ পারে।। चरमान दिकारे शिरा, अकारे अ मात्र । প্রাণ আছে পণ দিব, ভারনা কি ফ্লায় ? কি স্থভাব কি অভাব, ডুরি কেন ভাবো। বার ধন ভাবে দ্রিবে, পার ছোরে যাবো।

ভোল ভোল ক্ষজি ভোল, বাড়িতেছে লগ। যে পারের লোক আমি, সেই পারে চল।। পাবে চল, পারে চল, ছটী পার ধরি। দেখো মাজি, মাজামাজি, ভুবাওনা তরি II ভূমি ভরি ভূবাইলে, কে বাঁচাতে পারে? কাব সাধ্য এ অসাধ্য, পারে যেতে পারে ? 'পুর্বাড়' মনে ছোলে, ভয় হয় মনে। উত্তরে অনেক হঃব, 'উত্তর পবনে'।। वाकाम प्रक्रिन वटहे. ठाना व प्रक्रिटन ह যাইবে পশ্চিম পারে, পাইবে দক্ষিণে ॥ ছাভিয়াছি বার ধর, যাব ভার ধরে। তোমায় তোমায় দিব, পার হোলে পরে 1 তুমি আমি বলি ভগু, এ পাবেতে এলে। তুমি, আমি, বলা নাই, ও পারেতে গেলে 🛭 আমায় একেলা ফেলে, কোথা ভূমি যাবে ? আমায় না কোরে পার, কিসে পার পারে ? পার যাই, পার তাই, কর কর কই। না পার, না পার হব, পার আছে কই ? বোঝাপড়া হবে শেষ, ক্লণকাল বই। পেয়েছি খাটের ছাড়ঃ ছাড়িবার নই 🛭 যায় ছরি, হরি হরি, করে হরি হরি। হরিস্থত হরি ভয়, লহ হরি হরি॥

রবনা এ কুলে আর, খুলে দেও ভরি। হবি হরি হরি বোল, হরি বোল হরি।

# সংগীত।

আর কবে ভাই মাহুব হবে ? মাহুব হবে, মাহুব হবে, আব কবি ভাই মাহুব হবে ? দেবে ভোর আকার প্রকার, আচাব বিচার,

মামুৰ কৰে, মামুৰ কৰে?

হোতে চাও বাছত্ বলি, আজি নহী,
এই বেলা পার হওবে তবে।
মনেতে বোলে কোরে, ৩ছ হোতে,
তুব্ বিহে আহে পাকি-পাব (১) ॥
জঁৱত পেরে হুবে, নিরব মুবে,
নৃত হোরে বেল রবে।
লোকেতে বলুক্ নজ, সহানজ,
শবেতে সব্ সবেই লবে ॥
নরনে ছোট বছ, বেশ্বে যারে,
তুববে ভাবে নির রবে।
গলতে হাড়ী বৃচি, সবাই ভটি,
সমতারে ভাজে সাবে॥

<sup>(</sup>३) नेप-मुख्यारः। नेप-जगा

বননী পোহার পোহার, হইরাছে,
তিন্ বৃদ্ধি রাত, আছে গবে।
এখনি প্রতাত হোগে, কুত্রপে,
নিক স্থলে বেতে হবে।
ক্ষার কডবিন নাথার ববে!
ছান্তরে তোগের আশা, পুন আসা,
হবে না এই প্রবের ভবে।
ভবে না ভূমিই রবে, আমিই বর,
ববে কেবল রব্
টি রবে।
চরমে হবে ভালো, গুর আলো,
প্রভাহরে তোগো, গানী

# মনভ্রমরের প্রতি করুণাকুমুদ।

তনরে ত্রবর মন, কি ত্রব।
কি ত্রমে, কি ত্রমে, কি ত্রমে ত্রম ?
করণাকুর্ব-আমোল ছুলে।
বজুলে কামনা-কমল ছুলে।
জানুরে তাহাঁতে, করিয়া বৃধ্।
বুসিরা রসিয়া, থাইছ মধু ।

আমিতো সতত, স্বিল্যাসী। তোমার নিকটে হয়েছি বাসি ই তুমি তো হোলেনা, হুমুরবাসী। তবু হে তোমারে ভাল তো বাদি 🛭 নিয়ত বলিনী, নুতন রুষে। তোষারে আদরে, রেখেছে বশে ৪ दश्य मध्य, यहन मृत्ये । রাখিবে যতনে, থাকিবে স্থাধ # ভাল হে নাগর, ভোমারি ভালো। निवित आमार, धारद-आता । ভ্রমণ করিরা কত, স্বোবর সলিলে। বিক্ষিত শৃত শৃত, শৃতদল দলিলে 🖁 तक्नीक्त कृश्यत्म, त्कान वस्न प्रकाल १ বুখার হইল সৰু, যত কথা বলিলে 🖟 वैश् वथ-मधुणात्म. यन हारत विनित्य । প্রেমভরে নলিনীর, নলিনাকে চলিলে গ্র আমারে প্রবোধ দিয়া, মিছা ছল ছলিলে। সোহানের সোহাগার, স্বোণা হোরে গণিণে ॥ বিহিত বচনে শ্বের, ক্রোধানলে জ্বিলে। বঞ্চনা ক্রিলে প্রেমে, স্থব কল ফুলিলে ৪

### সংসার সাজ্বর।

বাঞ্জীকর কোন্তে কন্ত, করিতেছ বাঞ্জী। যথন যে সাজ দেও, সেই সাজে সাজি ॥ ভানিতে না পারি কিছু, কি সাজে কি সাজে। সাজা নয় সাজা চোর, তোমার এ সাজে। সাল্বরে বোসে তুমি, সাজাইছ কত। আপনি সাকিয়া সাজ, জ্ঞান হই হত ॥ সাজ পেরে নেচে উঠি, আপনার জাঁকে। কি ছিলাম কি ছোলাম, বোধ নাছি থাকে ঃ নীলগিরী-চুড়ায় বসিয়া আছি এই। দেখিতে দেখিতে আর, নীলাচল নেই। বুঝিতে না পারি কিছু, ইহার কারণুঃ কে আনি ধবলাচলে, করিল স্থাপন ? व नाज त्रांक कारन, तारे नाज करे ? এই আছি স্বল, অবল কেন হই ? ভাল ভাল ইম্রকাল, বাজী বটে জোর ! দেখাতে দেখাতে বাজী, বাজী কর ভোর 🖁 কিছুনা দেখিতে পাই, ওধু ওনি গোল I কে সাম্ভাৱে এই সাজ, কে বাজালে চোল 🕽 কেমন কৃহক বাজী, না পাই ভাবিয়া ৷ অন্তরে লুকাও কোণা, অন্তরে থাকিয়া ?

(बंदक बंदक केंद्र वांड, शूख किरम हाचि । আমার অস্তুরে থেকে, আমারেই ফাঁকি ! ধর ধর কবি কিক্ক, ধবিকে নাপারি। জানিলাম পোষা নও, মানিলাম হারি। ভূমি বলি পোৱা হোৱে, না মানিলে পোৰ ৷ আমার কি লোব তায়, আমুর কি দোব ? স্থির রূপে ভূমি নাহি, বাস কর মনে। ভূষিৰ ভোষাৰ কিলে, পুৰিৰ কেমনে ? जुति निका वाधि यमि, घटि त्यात नाम । শিকল কাটিরা কর, বিকল আমার ৮

#### সংসার কানন।

(मश्रात्क आवाध कीव. काम वाद्य यात्र । **সংসার-অর্থো আসি, कि করিলে হা**য ! কি দেখিলে, কি গুনিলে, কি ভাবিলে সার ? কি ফল পাইলে বল, ভ্রমিয়া সংসার ' বনের প্রথম ভাগ, দেখিতে স্থন্দর। লৈশৰ সময় নামে, ব্যাত চরাচর।। নাহিক জ্ঞালভাল, কন্টক-কামনা। পথিক না পাছ ভাতে, বিশেষ যাতনা । নৰ নৰ তক্ল চাক, পূৰ্ণ কুল ফলে। मन मधुकद श्रद्ध, व्यक्ति नरण मरण ॥

পরিষ্ঠ প্রমোদিত, সভাব সদন।

মধুমলিকার বেডা, মোহনীর বন।। বোল বিদা পরিমিত, ভূমির অন্তরে। শোভনীয় যৌবনের, বন শোভা করে। মন্ম মন্বহে গন্ধ, মক্ব<del>না</del>ভরা। সৌরভে মাতিয়া ধায়, মানদ ভ্রমরা।। উড়ে গিয়া বদে কাম-কণ্টক-কাননে। ফুটেছে কেতকী ৰুপা, স্থহাস্য আনুনে ॥ मान मा मधुकत, मा जानि वित्नव। লুক হেডু কুক হোৱে, পায় বহু *কো*প ।। কলন্ধ-কণ্টকশ্ৰেণী, অতি ভীক্ষতৰ ৷ মৃগ্ধ মধুচোর-অঙ্গ, করে জর জর। তগাপি আসক্ত অলি, ছষ্ট কুধাভৱে। স্বম ভরম ভর, স্ব ডক্ত করে 🖠 কাল গতে ছোলে কিছু, প্রবোধ সঞ্চার। ক্রমে ভুক্ত পরিহরে. কেডকী বিহার ॥ অন্য দূলে ফুলবঁধু, তত্ত্ করে রস । অংকতে জ্ৰমণ বাড়ে অনুত অবস ঃ ধনাশা-পিপাসা শাস্তি, করিবার তরে। প্রবেশ্বে পাতকপল্লে, লোভসরোববে 🛊 কালকুট সমারস, পাল করি ভার ৷ ক্ষিপ্তপ্রায় অলিবার, ইতন্তত ধার 🛚

### কবিভাসংগ্ৰহ।

سوی

ক্রোধ, কুছে, ৰুণছ, কার্পণ্য, কলাচার। চাপল্য, চাতুর্য্যা, পরপীড়া, পরদার 🛭 नानमा, नाम्लोग, माठा, ट्रोरी, विशाकशा। অনুত আচার, অবিচার, নিষ্ঠুঃতা 🏽 रेगानि विविध वृक्त-वित-गाथामान । ত্ৰমিছে ত্ৰামক ভূজ, মধু-আশা ছলে ৷ কিছু সেই পুপরস, চুম্প এ সংসারে। নিবুত্তি-কাননে আছে, মারাসিদ্ধু পারে ৪ যে বলে বিরাজে জ্ঞানবাপী মনোহর। মধুর স্লিল তাহে, অতি ভৃথ্টিকর 🛭 ভরল ভবঙ্গে ভার, কলিত ক্ষল 🕽 স্কোষ সুক্ষর নাম, নিভা নির্মণ । সেই ভাষরসপূর্ণ, সূব সুধারসে। বিবেকী মানসভঙ্গ, ভঞ্জে নিরলসে ॥ চল ওৱে মন মম. সেই বমাবনে। কাৰ নাই বিষ্কুরা, বিষয়-কাননে # ছেররে নিবিভ্তর, চুর্সম গহন। মোহ-অন্ধকারাপুত, ঘোর দরশন ১ অতএব আয় আয়, মানস আমার। নিবৃত্তি-কাননে বাই, মাধানদী-পারু।

### সংসার সমূদ্র।

বেমন ধীবরগণ, করি কর প্রসারণ, কেলে জাল সবোবর জলে।

যত সীন দিয়া ঝম্প, তার মাঝে মারে লক্ষ্, তার≱সঁব বছ হয় কলে দু

ধীবর তাদের ধরি, তথনি বিনাশ করি, পূর্ণ করে আপনার আশা।

ছিল মূর্ত্তি মনোহর, জল ছেড়ে জলচব, পেটের ভিতরে পান বাসা॥

বে মীন সন্মুখ দিয়া, নতভাবে লয় গিয়া, ভালিকেব চরণ শবণ।

মৃক্ত হয় অনারাশে, যুক্ত নর জালকাসে, আনুষ্ঠার নাজ্য মরণ ৪

সেইরপ বিশ্বপাল, পেতেছেন মারাজাল, ভীম ভব-তলনিধি-জলে।

পরতন্ত্ব-পরিহত, প্রমন্ত মানব যত, ভার মাঝে নৃত্য করে বলে ॥

সেই জীব সমুদয়, জালপাৰে যুক্ত হয়,

• স্থিত নয় কণকাল কুৰে !

ছংখ সয় অভিশয়, ভুমে করি কাল কর, নীত হয় ময়ণের মুখে ঃ বে জন ক্ষম বহন, বিজুর পরণ সর,
বন্ধ তার নাহি হয় জালে:
কাব কুক্স অকু, প্লাকে প্রিত তর,
ক্ষমী সেই ইহ পরকালে ই
আতথ্য তন জীব, প্রাত হবে নিজ পিব,
হইবে অপিব সব গড়।
মারাবাল মুক্ত হও, সত্যের আপ্রম লঙ,

### ন্ধরের হও পদানত। -----সংসার জাতা।

চপকাদি পান্যতম, অগতোর পতিত হয় বক্ষভাবে চক্ষ খুৱে তার। যত্ত মুখ্য বন্ধ হর্মে, পৃথক পৃথক স্পর্দে, চূর্ম হয় মেহ সবাকার ৪

চুব হয় নেই গ্ৰাহণ । কিন্তু বেই বেই দণ্ডে, ধরে গিল্লা সেই দণ্ডে, সেই দণ্ডে দণ্ড নাই আরে।

মূলের আল্রের লয়, পূর্মবিং মূল রয়, ভার দেহে না হয় প্রহার ঃ

স্বেইরপ বিশ্বপাতা, স্থচার সংসার স্থাতা, বিনা করে করিরা ধারণ: «

দর ভাগি জন্তচর, সমতাবে সমুদর,
কথবোধে করেন পেবৰ ৪

বেজন হুজন হয়, চক্ৰ বাবে নাহি রয়,
দতের নিকটে করে বাস ।
দত্তী নেই কছু নর, হুণী হুহ অভিলন্ত,
দত্তী ভার হত করে নাল ।
তন জীব স্বিবেশব, লোহে কার উপদেশ,
ভাত্তিরাছ আছু-আছু-রোহ ও
সংসার জাভার বার,
নাহি ভার কিছু মার বোর ?
চক্রে আর কেন রঙ, আছে বীর শিব হও,
হুখে শত্তর ভাতর আর হা বিশ হও,
হুখে শত্তর ভাতর আর হা বিশ হও,
বাবে কারে এই শত, সার কর এই শত,

### নাহি রবে কালদণ্ড-ভয়। ------

দেহখন।
পাঁচের বাঁধুনি এই, নববারে বাদ।
এত দিন বাহে আদি, করিদান বাদ।
এত দিন হাইবাহে, নাহি রব আর।
এতে একে তেকে কুরে, হল সুবার।
কান্দের ববাই বাইবং, তরনা কি আছে?
পুঁটাবনা,বাঁচা বর, কেমনেতে বাঁচে?
বাঁধন নিরাহে ধনে, হাঁধন হাছিরা।
কুঁহিনি বাঁধুনি রুধা, নাছিরা নাছিরা।

কাঁছে মন ঘন ঘন, গুলে ঘন ভাক। যে দিকে চাহিয়া দেখি, সে দিকেই কাঁক ! উভিয়া চালের খড, ঘর বেন ফাকা। পুঁটি দিয়া কত দিন, চাল আর রাধা? প্রন পেছনে থেকে, মারিভেছে চেকা। বংশহারা হতে হল, থাকে নাকো ঠেকা। বে বংশের ঘর এই, সে বংশ কি রয়? ঘুন ধরে একে একে, হয়ে গেল কর। हः**मरवती रज्यन श्राम, श्राम म**र हरद। অংশে গেলে অংশ মিশে, বংশ কোথা রবে ? যথন ঘরামি এসে, ঘর গেল গোডে। প্রকৃতি বলিয়াছিল, এই গেল পোড়ে। না বুৰেন্তখন ঘরে, চুকিলাম একা। এখন যে ঘরামির, নারি পাই দেখা ৪ ষরামির দর কোধা, জানিনেরে ভাই। মিছামিছি এখা সেধা, বুঁজিয়া বেড়াই ঃ কেচ বলি দেখা পাও, বোলো ভার কাছে। এ ঘর বজার রাখে, সাধ্য কার আছে। এ কারণ মাড়াবেনা, আমার এ ভূমি। ভয় আছে বলি পাছে, কি করেছ ভূমি <sup>?</sup> এই হেডু মজুরির, কড়ি নাহি লয়। **म्हिल हिंदि वाद्य मान भारह छन्न ॥** 

ৰব গোতে মছুৰি না, নিতে আনে কৰি। নিছানিছি থেটে গেপ-, ভূতের বেবার এ বল নাই বিলবাৰ, বলি আর কারে। বে গোছেছে লে ভাকিলে, কে বাধিতে পাবে? বার বাবে, বাক বঙ্গ, না বর না বর। আর বেন এই ববে, চুকিতে না হয়।

### সাধু।

রাগ নাই, বেছ নাই, নাই কোন লোহ। বোণা আব বুলি বাচে, সহ পরিকোহ। বেনানলপে নাহি রাবে, কিছু ভাতিমান মধ্যাবে বেছে গ্রুম আবান বাদ করে ইছর-চিন্তা, নুবে প্রেরম দ্বাদ্ নায়ু নায়ু নায়ু নাই আর হল। সায়ু নায়ু নারু বব, অনেকেই কয়। কলে সে সরস সারু, অনেকেই নর হ কলে সে সরস সারু, অনেকেই নর হ কলে গেলেক মুলু, শালা সরুল্ব। ক্লাচিং হুই এক, মন্তুক্ত হল।

# গ্ৰন্থ পাঠ।

পুঁতি পাঠ করে কিন্তু, নাহি তাম মন । ক্ষেনে পাইবে সেই, জ্ঞানকণ ধন ?

#### কবিতালংগ্ৰহ।

98

প্রদীপে না ভেগ দিয়া, বাতি যদি আলো। কোথার প্রতিভা তাব, কিসে হবে আলো >

## ख्वानौ ।

আপনারে জানী বোলে, বিতে পরিচর। সে বড় সহজ নর, শক্ত অভিনার ট বথা অসি মাত্রে কভু, ধরধার নর। একাধাতে করে ছেন, ভীক্ত বদি হয়।

#### ৰূপ ও গুণ।

এ লগতে হৃদ্ধা, হৃত্তপ বাহা হয়।
তথ না থাকিলে তার কিছু কিছু নয়।
হুবৰ্গ বুবৰ্গ ভিনি, চম্পত্তের ফুল।
হুবল হুবালে করে, অছর আহুল।
কিছু এই দোৰ বড়, বধু নাই তার।
এই দেতু তালি তাতে, করে না বিহার।

## শান্ত পাঠ।

লও ভূমি যত পান, শাত্রেব সছাল। ২ও ভূমি পৃথিবীর, পণ্ডিত প্রধানী। ঈশবের প্রতি যদি, প্রেম নাছি রয়। বত পদ্ধ, বত গুল, কিছু কিছু লয়।

### 9191

কান উপদেশ মাত্রে, পাপ নাহি হার ৷ জবে যায় বদি পায়, সার অভিপ্রায় ॥ করেছ যে সব দোব, মনে বাহা আছে। স্বীকার করিবে সব, ঈশবের কাছে। বিমল হইবে ভার, মানসের পুর। পাপ তাপ যত আছে, সব হবে দ্র 🏾 (य क्षकांत्र विलाकतन, देवत्सात्र वसन। कथनहे नाहि इब, वाधि विस्माहन \$ জবে হয় রোগীর, রোগের নিবারণ । যত করি যদি করে, ঔষধ সেবন। অতএৰ ভাব জীব, কিসে হবে হিছ । ৰ্যাধির বিনাশ হেতু, বিশেষ বিহিত 🛭 জ্ঞানত্ৰপ ঔষধ, করিলে বাবহার। পাণ ভাপ রোগ ভোগ, থাকিবেনা আর ॥

## જાની ા

শ্বভাবে অবোধ অভি, গুণ নাই বার। ভার কাছে কোথা আছে, গুণের বিচার ? বে জন আগনি গুণী, গুণ সেই আলে। দেখিয়া গুণির গুণ, গুরু ববে মানে। বাজাবে পড়িরে থাকে, অস্ণ্য রতন । চলে বার চাষা তাম, করিয়া দলন ॥ বত্ববিসায়ী বেই, সেই চিনে হীরে। বতনে রতন তুলি, বাধে বুক্ চিরে ॥

#### গুৰু।

গুক গুক গুক গুক, সকলেই কয়।
গুক বৰ গুক বটে, কলে গুক নয় ।
গুলে গুক লঘু হয়, গুলে গুক গুক।
বিচাবেতে গুক লঘু, হয় লঘু গুক ।
শিবোর সম্পাদ হলে, বে করে হবণ।
গুক বলে কিলে তাবে, কবিব বৰণ?
শিবোর স্বাধান বক, বে হরিতে শাবে।
গুকবোধে গুক বলে, পুজা কবি তাবে।

## সৎসঙ্গ।

অসতের সহ নর, বসতের বিধি।
কাচ সহ বাস করি, নীচ হর নিধি॥
বসত বিধান সদা, সতের সঞ্চিত।
তর তার সূর্বর, অভিত হতি।।
হৈতাহিত সদসৎ, সংলয় অধীন।
অসতের সদ্ভাধ্য, সাধ্য হা হীন।
অসতের সদ্ভাধ্য, সাধ্য হা হীন।
অসতের সদ্ভাধ্য, সাধ্য হা হীন।

অতি হীন কীট বারি, কুলে হান পার।
জনারাবে হান পার, বেবতার পার।।
পীপিডার বাস হলে, বেলের পাডার।
নাচিরা বেড়ার যুরে, পিরের মাধার।
নারী তক পড়ে বাদি, মাহুবের হল।
রুরনা পরির করি, রাধারফ বাং।।
রুরনা পরির করি, রাধারফ বাং।।

#### আত্মপর।

নিভ, শর, ভের করা, শক্ত অভিশর।
বারে বৃণি সহজ, সহজ সেতো নর।।
মনের তনর দির, মনের ত নর।
বার্গির কবি দেহে বাস, বেহ করে কর।।
বনাবী তক্ষতা, ঔবধ হইরা।
জীবের জীবন রাধে, আধি বিনাসিরা।

সার্বভৌমিক আঁতৃতাব।
দেখ দেখ দেখ এই, অনার সংসার।
বিরাজিত বথা জীব, অদেব প্রকার।
ভূমি, আমি, ভিনি, উনি, বত জন আছি।
পরশাব ত্বো ভামা, নত বিন বাচি।
সববের বিনাশ ববে, থাকিবে না বেছ।
সববের ববাই যাব, থাকিব না বেছ।
সববের ববাই যাব, থাকিব না বেছ।

#### 96 কবিতাসংগ্ৰহ।

वह जुनि वह बाह, वह बानि वह । দেখিতে দেখিতে আর, ভূষি আমি নেই ! আসিরাছি একরণে, বাব এক ঠাই।

क्रका क्रका क्रम दक्षा, शरत दक्षा नाहे ।। অভএৰ বভক্ষৰ, দেখা দেখি আছে।

সকলে ৰাখিত হও, সকলের কাছে <sup>1</sup>। পরস্বরে ভাই বলে, ভাক একরবে।

প্রশার প্রেমপাশে, হক্ষা কর সতে । পরস্পর প্রেমভাবে, থাক জীবগণ।

নদীর সহিত হথা, নৌকার মিলন ।।

## ছিভীয় খণ্ড।

## সামাজিক ও ব্যন্ত। বিধবাবিবাহ।

### बाविदाह्य वर्णामनि, नाशिदाह्य त्रान । विश्वात विस्त हत्व, वाश्वित्राह्ह छान । কত বাদী, প্ৰতিবাদী, করে কত রব। ছেলে বুড়া আদি করি, মাডিয়াছে সব 🛊 কেহ উঠে শাধাপরে, কেহ থাকে মূলে। করিছে প্রমাণ কড়ো, পাঁজি পুঁতি খুলে ঃ একদলে হত বুডো, আর দলে ছেঁড়ো। গোড়া হয়ে মাতে সব. দেখেনাকে গোড়া # লাফালাঞ্চি, দাপাদাপি, করিভেছে বত। ছই দলে থাপা থাপি, ছাপা ছাপি কত \$ ৰচন রচন করি, কড কথা বলে। थर्मात विठात भर्थ, (करू नाहि हरण ह "পরাশর" প্রমাণেতে, বিধি বলে কেউ। (कह बरण थरव स्मिथ, नागरवन रहते । काश वा कतिए लाक, ख्यू रुके रुके। (काथा वा वारवत्र निष्ठ, नाशित्रारह रक्छ ।

### কবিভাসংগ্ৰহ।

٠.

অনেকেই এই মত. গড়েছে বিগান ! "অক্ষতধোনির" বটে, বিবাছ বিধান # কেহ বলে কভাকত, কেবা আর বাছে? একেবারে ভরে বাক, বত র জী আছে। (कह कहर वह दिशि, (कम्राम स्हैरव ? ছিঁতর ঘরের রাঁডী, বিঁত্র পরিবে! বুকে ছেলে, কাঁকে ছেলে, ছেলেঁ ঝোলে কোলে। ভার বিয়ে বিধি ময়, উলু উলু বোলে ! গিলে গিলে ভাত ধার, ইাত নাই মুখে। হইয়াছে আঁতে থালি, হাত চাপা বুকে 🛭 घाटि वाद्य निद्य बाद, ठक्कारेया बाटि । শাড়ীপৰা, চুড়ি হাতে, তাবে নাকি খাটে ? ভনিয়া বিয়ের নাম, "কোনে" সেছে বড়ী। (क्यान वीनाद मूरब, ''वृक्षो वृक्षो '' ? পোড়ামুৰ পোডাইয়া, কোন গোড়ামুখী। 'इबी', 'छबी' यात्र रक्तन, रकेंक्र करव बुकी ? बाहि। चारक बाब खरह, दबन शाह थेरह । ভঙী মেরে প্রভী বলে, সে বসিবে কেঁচে ! গননের আয়োজন, শমনের ঘরে। विवाहत माथ (म कि. मान चार कार ? বেধানে সেধানে গুনি, এই কলরব। ৰালার বিবাহ দিতে, বাজি আছে সৰ #

সকদেই এইজপ, বনাৰ্দি কৰে।
ছু ছীৰ ক্ষাাগৈ দেন, বুড়ী নাহি তাৰে ব্ল পৰীৰ পড়েছে খুলি, চুল গুলি পাৰা। কে ববাৰে নাছ তাৰে, কে পৰাৰে শাৰা। জ্ঞানহাৰা হৰে বাই, নাহি পাই গালে। কে পাজিৰে গ্লুখৰাপা, নাহেৰ ক্লায়াৰে।

## বিধবাবিবাহ আইন

ভিন্দু বিধবার বিধা, আছে অপ্রচার ।
বহুলাল হতে বাবে, নাহি বাবহার ৪
নে বিববে কডাক্ষত, না হিবে বিশেষ।
কবিনেন একেবাবে, নিয়ম নির্দেশ ৪
শুচ শুচ প্রজা তার, বাবা পার প্রাবে।
তাবের আদ্বাদ নাহি, অনিলেন কাবে!
প্রান্ট (১) করি, প্রাক্টের সকল অভিনার।
কাববিন, কাবা হিব (২) করিনেন পাস ৪
না হইতে শাব্রমতে, বিভাবের শেষ।
কাব বিবলন, আইন আ্লাম্ম ৪
কবি বিবলন, আইন আ্লাম্ম ৪
কবি বিবলন, আইন আ্লাম্ম ৪

<sup>(</sup>২) ব্যৱস্থাপক মে একি সাহেব বিধবা বিবাহ বিবার যে অভিনত বাক্ত করেন, ব্যবস্থাপক মে কাক্ষিক, সাহেব ভাষা প্রাঠ অর্থাৎ প্রায় করিয়া কাল বিল অর্থাৎ (২) কালকণ আইব প্রকাশে মত প্রবান করেব।

বাহাদের ধর্ম এই, আর দেশাচার। পরস্পর ভারা আগে, কল্লক বিচার 🛊 বিধি কি অবিধি ভারা, ঘরেতে বুরিবে ৷ যা হয় উচিত ভাই, শেষেতে করিবে 🛚 কবিছে আমার ধর্ম, আমাতে নির্ভব। রাজা হয়ে পরধর্শে, কেন দেন কর? আগে ভাগে রাজাদেশ, কবিতে প্রচার ! এড কেন মাধাবাধা, হইণ রাভার ? যদাপি বিধান হয় বিধবার বিয়ে। আপনারা করুক, আপন দল নিয়ে 🛭 যুদ্ধি আৰ বিচাথেডে, যে হয় বিহিত। দেশেতে চলিত কৰা, ভাইতো উচিত 🛊 অনিয়য়ে কবি এ কি, নির্মের ছল। ভূপতি ভাহাতে কেন, প্রকাশেন বল ? কোলে, কাঁকে ছেলে ঝোলে, বে সকল মাঁচী। ভালারা সধন্ধ হবে, পোরে শাকা শাড়ী। এবড় হাসির কণা, গুনে লাগে ডর : কেমন কেমন করে, মনের ভিতর # শাল্প নয়, বৃদ্ধি নয়, চৰে কি প্ৰকারে ? (मनाहारिक, वावहारिक, वार्था देशि करते । যুক্তি বোলে বিচার, করুন শত শত। কোনমতে হইবে না. শাস্তের সম্বত ঃ

বিৰাছ করিয়া ভারা, পুনর্ভবা চরে। সতী বোলে সংখাধন, কিনে করি ভবে 🤋 বিধবার গর্ভকাত, বে হবে সস্থান। ''বৈধ'' বোলে কিসে ভার, করিবে প্রমাণ ? যে বিষয় সর্কাবাদি-সম্মত না হয়। সে বিষয় সিদ্করা, শক্ত অভিৰয় 🛭 কলে আবে ছলে বলে, যত পার কর। करण रम किছूरें नव, मिर्छ बारक मत्र ॥ গ্ৰীমান, ধীমান, নীভি-নিমাণকারক। यात्रा मदव दशास्त्र होन, विश्ववास्त्रक 🛭 मञ्जाद निर्वतन. श्रा करन करन । আইন বুক্ষের ফল, ফলিবে কেমনে ? বিধবার বিয়ে দিতে, বাহারা উদ্যুক্ত। তার মাঝে বন্ত বড়, লোক আছে বত 🛊 বাবে ইচ্ছা ভাবে হয়, ডাকিয়া স্থানিয়া। ঘবেতে বিধবা কত, পরিচর মিরা ঃ গোপনেতে এই কথা, বলিবেন ভারে। জননীর বিয়ে দিতে, পারে কি না পারে? মদি পারে, তবে তারে, বলি বাহাদুর। अथिन कृतिरण नव, कृत्थ स्व शृत । সহজে যদ্যপি হয়, এরপ ব্যাপার । ক্ষরিতে হবেনা তবে, আইন প্রচার 🕽

1-R

ন্দি কেই নাহি পারে, সাহদ ধরিরা। বিদল কি ক্ল তবে, আইন করিয়া? প্রস্থার আভ্যার মধ্যে এক এছ।

পরস্পর আড়ধ্ব, মূথে কন্ত কয়। কেহ আর মাথা ডুলে, অপ্রসর নর । গোলেমালে হরিবোল, গওগোল সার।

লোলেমালে হারবোল, গওগোল সার।
নাহি হয় ফলোদর- মিছে হাইাকার।
বাকোর অভাব নাই, বদন-ভাওারে।

বাকোর অভাব নাই, বুগন-ভাওারে। মুক্ত আনে তচ বলে, কে দ্বিবে কারে? সাহস কোথায় বল, প্রতিক্ষা কোথায়? কিচই না ছোচে পারে, মুখেব কথায়।

মিছামিছি অন্তানে, মিছে কাল হবা। মুখে বলা, বলা নয়, কাৰে করা করা।

সকলেই তুড়ি মাতে, বুঝেনাকো কেউ। সীমাছেড়ে নাহি ঝ্যানে, সাগরের চেউ।

সীমাহেজে নাহি ব্যালে, সাগরের চেউ। সাগ্রহ (১) বদাপি করে, সীমার লক্ষ্ম। তবে বুঝি হতে পারে, বিবাহ বটন।

নচেৎ না দেখি কোন, সন্তাবনা আর। অকারণে হই হই, উপহাস সার॥

কেছ কিছু নাহি করে, আপনার গরে। বাবে বাবে, বার শক্ত, বাক্ পরে পরে। তথন এরপ কবে, চোলে ব্যতিক্রম।

(>) নাথর শব্দের টাকা আহকেরা করিবেন।

"কাটার পোড়েছে কসা, গোবিখার নব।" রাজার কর্তব্য কথা, করিতে বর্ণন। একপ দিখিয়া খার, দাহি প্রহোজন । এইবার শেব কথা, কহিব দিশ্র। এ বিবারে বিহি দেখা, রাজবর্গ নর। মকক্ মক্ক্ বাবু, প্রধার একাম। কোন্কালে রাজার কি, হানি খাছে ভার?

# (कोनीना।

মিছা কেন কুল নিরা, কর খাঁচা খাঁচ ? এ দে দুল, দুল নদ, নার মারে খাঁচি । কুলের গোঁরৰ কর, কোন্ অভিযানে ? ঘটকের মূথে তব্, কুলীনের ভোগা। রস নাই বল কিনে, কুল হলো টোপা। ই আগর হইত তবে, ভাছিলে অরুচি। পোকাধরা দোঁবার ভার, দেখে বার কচি এ অতএব বুখা এই, কুলের আচার। ইথে নাহি রকা গাঙ্গ, কুলের আচার । কুলের সমুম্ম বল, করিব কেমনে ? লতেক বিধবা হয়, একের মরুগেই। বগলতে হ্বকাঠ, শক্তিবলৈ কেই। ভোলের কুমারী গরে, বিরা করে সেই !
ছবে র'ত ভালে নাই, পিও লার বার ।
"পিতামহী নম নারী, বারা হয় তার !
নর নারী কুলা বিনা, ভিলে মন ভোবে ?
ঘাভিচার হয় শুদ্ধ, এই সহ পোহে এ
কুলকলে নর রূপ, ভুলকণ বারা।
মনচে বে কুল তাহা, বেহারে কারণ।
পাপের গোইন কেন, করিছ বারল ?
বে কুক কান্তর, করিছ বারল ?
বে কিছু করুপানর, বিনর আনার।
এবেশের কুলগর্গ, করহ গংহার ৪

### স্থানযাত্রা।

ন্তবে বলিছারি বাই, সারু সাধু সাধু ভাই, বরাবানী বত বৃতিপরা।
আমাদের অই বজ, কোন ক্রমে নহে ভজ,
নানা রাগ-রজ-রলভরঃ র
বুবপূর্বিরার বিবা, আগাহ আনন্দ কিবা,
নাহেশে ছবের বছাবেলা এ

ज्ञानवाका श्राप्त वर्षत्र, धरे तिन महा हर्ष्य, स्मा त्यस्त्र क्ट्र नद रच्छा ॥ कियां थनी कियां मीन, नवांत प्रत्यंत्र मिन,

আরোজন কত দিন আগে।

সবিশেব দেখি বেশ, ইচ্ছামত করে বেশঃ

বাহার বেমন মনে লাগে।

বন্ধ হোয়ে আশাকীদে, কড ছাঁদে কড সাথে, গড়,নিশি করিয়াছে গড়।

মুখে আমোদের রব, অধিক আমোদী সব, বিশেষত ছোটলোক যত ঃ

চবণে বিলাভি শুভি, পরিলেন ধোপ খুভি,

হরিদেন শৈতৃক তসর।
চাপাতলা শুন্য করি, বান বড নরহরি,

থান বভ পরহার,
বন্ যন্ যদর্ঘ বাদ বভ পরহার,
বন্ যদ্ যদর্ঘ বদর্॥
বাটে পিরা কত চোট, সুবেতে দ্রাজান বোট,

' বাঁধে কোট্ ভাহার ভিতর।

দলে সলে থালাগলি, দলে দলে দলাদলি, বলাবলি হয় পরস্পত্র 1

ধৃতির কিনারা কালা, গলার পরিয়া মালা, রোবোবেকো রোকো সব সাজে।

রোবোবেকো রোবো নব সাবে।
চূল কোরে প্যান চিট, হর কিট কত চিট,
নাকে নাকে চিট তার মাকে ৪

এক্ষাত্র 🗢 🤸 ্ স্থলধর প্রেম্ছাত্র,

শত শত আছে ভাই থেরে !

### কবিভাসং এই।

ক্ষাণভাগত এই।
রন্ধিনীর বোর ঘটা, হেরির্দ্ধে রূপের ছটা,

7

্ শল্পীপ্রের পদ্দী বার হেরে ঃ

চোপার কে পারে আর, থোপার ফ্লের হার,

**একা মানী লাগারেছে হাট ।** রঙ্গংস ঠারে ঠারে, সাভার সাজার তাবে,

পুতে নরে দৃষ্টি পোডা বিষে। সনে এই হুখ লাগে, পড়িয়াছে নানা ভাগে,

গদালাভ হবে তার কিনে # বাবার কিঞ্চিৎ আগে, ধাবার তরাস লাগে,

আবার কে ভূমে দের পদ।
আদ্রুক্ত গণ্ডা, কেহ আনে লুচি মণ্ডা,

ৰণা সৰ ভাবে গদ গদ।।
নোচন গিয়াছে ঘর, নন্দীর হয়েছে অব,

°নোচন গরাহে ছব, নন্ধার হরেছে অব, লৈকা চড়ি আমরা স্বাই। লিভাই বারাণ এই, লৈভুন্ ইয়ার কই,

লন্ লিন্ লবীন্ লবাই ঃ' এ, ওরে, ফর্মান্ করে, এক জন রাগ ভরে,

কহিতেছে করি থচো মচো। বোতদের করি নাম, 'কড়ত্ব যোগুলাম,

তৰের করি নাম, 'লড়ভম্ মোড়্লা লল বঙরা লৈখচো লৈখচো ॥' पूरन कति कछ वृत्र, वृत्र स्थात केर्द्ध वृत्र, (मार पूम कहिन जिस्ति। কেত ৰলে 'ৰাবা ভাই, আহি এক গীত গাই, নাচ তোৱা বাগর লাগরী ১ মার মার নীচ জাতি, বাবু হোরে রাডারাডি, মাতাঘাতি করে কচ ছপ। কুলায় ৰুকের ছাতি, বেন নৰাবের লাতি, হাতি কিনে হোবে খনে ভূপ । मचर स्थान गांत्र, वाद करत स्मार्थकात्र, ( TE ( TE TE TE TICE ! ধোবার আনক্ষমর, পরধনে বাবু হয়, **चाडा किसे जब कर्य जारत ह** माञ्ज-नव्यव वाहा, शत्मह क्रूटवह छात्रा, ছলে হলে, ছলে শোকা গায়। লবে উপাৰ্জন কড়, বাহা নৱ বাহা বড়, महिल्हा सहस्र द्वार है হাড়ি মুচি বুলি জোলা, কন্ত বা কেকের পোলা, बाद बाद बाद बाद कार र्द्धनार्द्धन हुरनाहुनि, कारक कारक सूरवासूनि, লোকারণ্য কলে আর ছলে ৪ करण कर्र दर्भ कर वह का का द्वार

श्वरहत्य शाम श्रि**रह**ेशाय ।

আং# পাছে পাহাপাকি, আঁকাআঁকি ভাকাডাকি, বাঁকাঝাঁকি স্থান নাহি পায়।

প্রদে বাড়ী বত হাড়ী, কাঁকে করি কেলে হ'ডি, হাতে পাথা কাঁটাল যাধার।

ৰাতে সাম্য কাল্য নাৰায়।
কথা কয় ইলিবিলি; সুবেতে পানের থিলি,
সাল কেরে পিক পচ্ছ পার ॥

সাৰ বেৰে শিক পণ্ডে বৃংব ॥
ভক্ত বজ বন শালা, প্ৰশেষ কৰি চানা,
ক্লচিব তৰৰী ব্যৱ ভাড়া।

ক্লাচর তরণা গারে তাজা। বাহাতে আস্থাকি বার, সেই শক্তি সঞ্চে তাঁব, প্রবেজে প্রেল্ড ক্লেড ক্লেড চাডা।।

প্রবেশ্বে সোপে বেশ চাঙা।।
মধা শক্তি শক্তি সেবা, শক্তি বিলা আছে কেবা,
শক্তি-ভক্তি সকলের সার।

ভক্তি জাবে বত জীব, শক্তি বোগে হন শিব, শিব শক্তি পুৰে কেবা আব ?

সকলেই বোর শক্তি, কোন ক্রথে নহে ভাক্ত, সেইরপ আচার ব্যাভার।

সহজে ক্ষণের বোগ, রিপুর পঞ্চম ভোগ, আব্য ভার করে সহকার ৪ পারে গাটি, ভবলার দুগে চাটি,

প্রিপাট থান কোনে কোনে।
পূর্ব হোনো ইছা বেটা, সান আর দেখে কেটা,
সান পান এক ঠাই বোনে।

ব্ধিল না হয় ভাষ, অধিল ভরিয়া থাব, মনে মনে দাধ আহে ধুব।

ৰিলাভির শেষ হোলে, স্বেন শেষ ভাবে গোলে, বেনো গালে বেণো বলে ভূব 🛭

প্রথবেতে চুপি চুপি, শেব হন বছরণী,

আর নাহি থাকে লব্ধা ভর। চালে উঠে নয় ছবি, হাঁসা মূর্ত্তি গান কবি,

लात्क वान कह वावू कह !

লশ্যট যুবক যারা, বাচ কোরে কেরে ভারা,

ধীরে ধীরে ভীরে চালে ডিকে। বেধানে \* \* , সেই খানে গায় সারি.

কাকের পশ্চাতে যেন,ফিল্টে।

আমি যে অভাগা অভি, স্বভাবতঃ কীণ্মতি, কোন কালে মাহেশে না বাই।

ইচ্ছা হেন থাকে জান, করিয়া বিভূর ব্যান, पदा (यन मुक्कियान **गारे** ।

এপ্ৰাপ্তমালা তপ্স্যামাচ্ । ব্যৱহ কনকৰান্তি, কমনীয় কাম। গালভৱা গোঁপ ৰাছি, তপৰির প্রায় র মাহমের মুশ্য নও, বাস কম নীরে। মোইন মহির প্রভা, ননীর দরীরে ঃ

পাৰী নও কিছ ধর, মনোহর পারা। কুমধুর মিষ্ট রস, সর্ব্ব অক্টে মাথা ৪ একবার রসনায়, বে পেয়েছে ভার ৷ আর কিছু বুবে নাহি, ভাল লাগে ভার ট দৃশ্য মাজ সর্ব্ধ গাল, প্রকৃলিত হয়। সৌরতে আমোদ করে, ত্রিভূবনমর 🛭 আংশে নাহি ছেরি সর, কাঁটা আনাৰ্বাচা। रेष्ट्रा कला अस्क्यारत, शारम मिरे काँहा ॥ অপরণ হেরে রূপ, পুশ্রশােক হবে। মুৰে দেওয়া দূরে থাক, গদ্ধে পেট্ ভরে॥ কুজি দরে কিনে বই, দেখে তালা ডালা। টপাটপ**্ৰেয়ে ফেলি, টাকাভেলে** ভাজা। म। करत्र डेसरत रवहें, रखायात्र श्रद्ध । বুথার জীবন ভার, বুধার জীবন 🖠

রধার জীবন তার, বৃধার জীবন র নগরের লোক সদ, এই কর মান। ন' তোমার কুপার করে, মহাহুথে বাস র স্থাবেতে সহাই কেনা, কেনাকরে সর ঃ

ప్రా

কেন কেন, কেনা কেনা, কে না করে রব ? জলে স্থলে অস্করীকে. রেন আর নেই। যে দিলে তপস্যা নাম, সাধু সাধু দেই 🛢 সৰ গুণে বন্ধ তৰ, আছে সৰ্বাজনে। লোণাজলে বাস কর, এই ছঃখ মনে 🕫 অমৃত থাকিতে কেন, কচি হয় বিষে ? ল্ণ পোডা, পোড়া জন, ভাল লাগে কিসে? উলুবেডে আলো কোরে, করিছ বিহাব। নগরের উত্তবেতে, গতি নাই আরে # বেনোগালে জোর ভাঁটা, ভাতেই সম্বোষ। সমৃদ্ধের জল থেয়ে, বৃদ্ধি কর কোষ 🚅 ললধি কোরেছে তব, বচ উপকার। লুণ থেয়ে গুণ গেরে, কাছে থাক ভাবে 🛭 ক্ষীরোদ মথন কালে, অপূর্ব্ব ঘটন। দেবাস্থরে বোর ঘন, স্থার কারণ ॥ সাগ্ৰ সলিলে হতু, বিবাদ বিস্তার। গডাগতি ছডাছতি, স্থার স্থার ৪ সে সময়ে ভূমি মীন, অতি কুডুলে। থেয়েছিলে সেই জন, তপস্যার ফলে 🛭 অমৃত ভুক্ষণে তাই, এরপ প্রকার। সুমধুর আস্থাদন, হরেছে ভোষার ৪ এমন মুমুক্ত ফল, কলিয়াছে ব্ৰুলে।

नारहरवड़ा ऋरच छारे, महारमास्मि, वर्ण ॥ ব্যর **হেড় কোনমতে, না হর** কাতর। পানায় আনার কউ, করি সমাদর। ভিদ ভোৱে ফিদ লব্ধ দিদ বাবা যত। পিন কোরে মুধে ছিয়ে, কিস খার কত ॥ তাদের পবিত্র পেটে, ভমি কর বাস। এই কর মাস আব, নাহি ধার মাস ৷ তোমার অধরে ধরি, বাজে কত ভ্রধ। মাঝে মাঝে সেরির, গেলাসে দের মুখ। বেচিলর বারা ভারা, প্রসাদের ভরে ৷ वाद्रांच्द्र वद्यां शिटह. आद्रांचन कद्र ! হেদে ছেদে থেঁদে ঘেঁদে, কাছে গিষা বদে। পেটে হারামের ছবি, সুধ তবা বসে ৷ টেক ফিস বোলে ডিস, কাছে দেন ঠেলে। সশরীরে ক্মর্গ ভোক্স, এটো থেতে পেলে ৷ বাঙ্গালির মত ভারা, রন্ধন না কানে। আদ সিদ্ধ করি ওধু, টেবিশেতে আনে 🛭 মসলার গন্ধ পায়, কিছুমাক্র নাই। অঙ্গে করে আলিক্স, কমলিনী রাই। शास्त्रत निषय विधि, धिक् धिक् छात्त । কি হেড় বেলাক হিঁছ, কোরেছিস মোরে ? পোরা ছোলে ছোরা বেরে, চোডে মনোরথে।

#### কবিতার্সংগ্রহ ।

কেবিলে যেতেম থেতে, ডেবিলের সডে র প্রেমানকে পিদ করি, হবে ধার মিদ। বলিহারি যাই ভোরে, ওরে ম্যাক্ষেকিস 🛭 িকিন্তু এক মম মনে, এই ৰড় শোক। নী ভানে তোমার খণ. উক্তরের লোক ॥ তোমার চরণে করি, এই নিবেদর। কব সবে সমভাবে, দয়া বিভয়ণ এ গোঁৎ কোরে সোঁৎ ঠেলে, ভাঁটি গাং ছেছে। উজানের পথে চল দাছি. প্রের্ণ নেডে। শা থ ঘণ্টা বাজাইবে, যত মেরে ছেলে। ভিটে বেচে পুজা দিব, মিটে জলে এলে । যথা ইচ্ছা তথা থাক. মনোছর মীন। পেট ভোরে খেতে বেন, পাই এক দিন # তোমার তুলনা নতে, কোটকল্পডর । লবু হোরে হঞ্ তৃমি<sub>র্</sub> সক্**ট্রে**র শুরু 🛭 त्रव र्रा हे जानत जमाना, नाहे कड़। তদ্ধ সম্ব ঠিক যেন, পড়বার প্রভু 🛊 নিরাকার নিত্যানদ, মীন অবতার। নিতা থেলে নিভাবন, বাভ হয় ভার। থেতে যদি নাহি পাই, মুখে শই নাম। প্রণাম ভোমার গদে, সহল প্রণাম 🖁 কৃত কলে থাক তুমি, নাহি তার লেখা।

তোমার আমার হয়, সহজে কি দেখা? কতরূপ ভাৰত্র, বানবের মনে। পেরেভি ভোষার আমি. জেলের কল্যাণে ৪ গাভীন হইলে ভূমি, রম ভার কত। রীভা হোলে ৰাজা স্থা নাহি হয় তত ॥ তোমার ডিমের স্থান, স্থার স্থান। গণা গণা এলা বেরে, ঠাতা করি প্রাণ ॥ প্রদ্রক্রিবে বহু, তবুরবে তালা। व्यामात्मत्र व्यानीर्वादम्, स्टबनाटका बाँका ॥ জন্ম এরো হও ভূমি, রসবতী সভী। পোয়াতীর গর্ভে থেকে, হও গর্ভবতী ঃ কোন মতে নাহি মেটে, বাসনার ক্ষোভ। যত পাই তত খাই, তবু বাড়ে লোচ ঃ ख्य बाँहे द्वारत निहे, किशा निहे बारत । উদর পৰিত্র হয়, ছেরা মাত্র গালে ঃ আচার ছাডিয়া বদি, আচার বিশাই। সে আচাৰে কোনক্সপে, অনাচার নাই s কুলাচার কেবা ছাড়ে, হোলে কুলাচার। আছারে আচারে বাড়ে, সকল আচার 🛭 বাতে পাই ভাতে থাই, করি বাজী ভোর। হার রে তপদ্যা তোর, তপদ্যা কি জোর !

### আনারস।

বন হোতে এলো এক. টিরে মনোহর। সোণার টোপর শোভে, মাথার উপর 🛭 এমন মোহন মূর্তি, দেখিতে না পাই। অপরণ চারুরণ, অনুরণ নাই 🛊 ঈবৎ শ্যামল কুপ, চকু দব গায়। নীলকান্ত মণিতার, টাবের গলার ৪ সকল নয়ন মাঝে, রক্ত-আভা আছে। বোধ হর রূপদীর, চকু উঠিয়াছে 🛭 ভাবুক শ্বভাবে ভাবে, করে অসুরাগ। বলে ও বে রাঙা নয়, নয়নের রাগ এ রপের সহিত গুণ, সম্ভুল হয়। সুবাদে আমোদ করে, ত্রিভূবনময়ঞ নাহি করে মুখভঙ্গি, কথা নাহি কর। সৌরভ গৌরবে দেয়, নিজ পরিচয় 🛭 চপলা রূপের কাছে, হর চনকিত। দৃষ্টি মাত্র কুল গাত্র, নেত্র পুলক্তি 🛊 সংশয় হরেছে দেখে. সকলের মনে। (क कामिनी, धकाकिनी, वान करव वस्त ? লোকে বলে আনারস, আনারস নর। আনা হব ছোলে কেন, আনা হব হয় ? ভারে ভার জানা বার, রস বোল জানা।



## **৯৮ কবিভাসং**এহ।

অরসিক লোক ভব, বলে ভারে আনা চ কেলিয়া পোদেরো আনা, এক আনা রাখে। এই হেডু "আ**নারদ" বলে লোক** ভাকে 🛚 অরসিকে নাহি করে, রসেতে প্রবেশ। আনাতেই হোল আনা, না লানে বিশেষ 🛭 কোণা বা আনার রস, এ আনার কাছে ? কুদ্ৰ দাৰে থেতে পাই, এছ টুকি গাছে। (बनानां छोडोड़ नोय, नोना दोड़ छड़ा । (क्यान व्हेर्स स्वहे, नर्समानावा १ রুস বস্ত, বল ভক্ত, বেদানার আছে। আমাদের কাছে নয়, ধনিদের কাছে। এক আদদের খাস, আছে বার ধন। কুৰেৱেৰ হোলে মন, নাহি পার মণ। মৰে মলে কত মণে, আবার উদর। करन करन रकान कारन, मन नावि वह । প্রবোজন নাহি জাঁর, এখানেতে এসে। यक्त कक्त खिलि, यक्तवद स्टान है আমাদের আনারকে, বোগ আনা হুং। ধরিকের প্রতি তিনি, না হন বিমুখ। খানা দরে খানা বার, বত খানারব। অনাহালে করি হলে, ত্রিভবন বল ৪ শীরং নহতো কৃষি, নহ প্রধাকর।

তবে কিলে স্থাভরা, তব কলেবর ? পণাৰতী কেবা আছে. তোষাৰ সমান ? মুভ হোরে লোকেরে, অমুভ কর দান । পঞ্চানন পঞ্চমুখে, নাছি করে দীয়া। এক মুখে কি কৰিব, ভোষার মহিমা ? সে বড় দূরের কথা, ছব বড বেলে। হাতে হাতে স্থাহন, হাতে হন পেলে ঃ কুপণের কর্ম নয়, ভোমার আহার। চাড়াবার দোবে সেই, নাহি পার তার ॥ ভাঁটা বোঁটা নাছি বাছে, মনে লোভ ঝোঁকে। रहाक **७६ (बर्ड क्यारन, रहाकरबरका रनारक** ॥ ফলে আমি মিছা কেন, নিলা করি ভার? সাধ পুরে বাদ দিতে, বুক কেটে বার ।। शन (स्त कांडे किंद्र, हकू छात्र सत । ভর আছে লোকে পাছে, চোক্থেকো বলে । লুণ বে**ং লেবুরস, র**সে যুক্ত করি। চিম্মরী চৈত্তনাজপা, চিনি তার ভরি।। টকি টকি থেলে পরে, রমে ভরে গাল। নেচে উঠে নন্দবাল, মুখে পড়ে লাল।। একবার বে জন না, পার তার তার। সে জন মানুৰ নয়, বুখা জন্ম ভার ।। छ छाहे (शरमद (धार्मी) खाखिनीन बाता ।

# ১০০ কবিভাসংগ্ৰহ।

ভোমার নিগুড় রস, নাহি পার ভারা।। আস্থাদন নাহি জানে, পেটভয়া থোঁছে। ছই হাতে থাবা মেরে, নাকে মুথে গোঁলে।। রসে রভ ধেই সেই, রস করে পান। বসিক রসনা ভার, যশ করে গান।। वर्गायं नक्तिःनं, शाह पहामन । ছই হোলে এক বোগ, ধরা করে বশ ।। ভাব সহ আনারস, ভোর আনা রস। রসে রসে মিশে গিরে, ক্লথে গার বশ।। বুঝহ রসিক জন, রস বোধ বার। সে রসে বে অরসিক, রস কোণা তার ? রসে রসে রস পেরে, রসে মন রসে i नारि क्षान विद्याविद्यः त्याव त्यव मत्त्र ॥ চিরকাল খেরে গুরু, ছোলা আর আদা। শাদাচোখো যত সব, হোমে বাক্ শাদা ॥ নব্দন বনেতে ছিলি, দেবরাজ-প্রিরে। শচী ছেভে স্থাৰ্থ ইস্ত, ছিল তোরে নিয়ে।। বাসবের অঙ্গে সদা, করি আলিজন I

পাইবাছ সেইবপ, সহল পোচন । নানারপ নবরণ, বসালাপ গোগে। বেবগণে স্থাকি বিবা, ছিলে ইপ্রভোগে।। বেববার ইক্ষা মনে, করে সুধকোগ।

কোনমতে না হইল, সেই বোগাবোগ।। স্থরকুল প্রতিকৃল, পেরে পরিভাগ। ক্রোধাকুল হোরে শেষ, দিলে অভিশাপ ধ সেই উপদর্গে ভূমি, ছেড়ে স্বর্গবাস। অভিযানে স্থিয়মাণ, বনে কর বাস।। चानावम नाम छारे, अरम अरे किछि। লজ্জায় যদিন মুখ, বনে কর স্থিতি॥ সাধু সাধু বাট, দেব পুৰুদ্ধ। ভৌমার শাপেতে হোলো, আমাদের বর 🛭 গোপন হইবে কিনে, কনে করি বাস। লুকাবে কেমন করি, শ্বীরের বাস # বাদ পেরে পূর্বকার, বাদ গেল জানা। রস পেয়ে জানা গেল, স্বর্গ থেকে জানা ৷৷ নানা রদ-শ্রেষ্ঠা ভূমি, ভোষার প্রণাম। জানা বদ হোষে গেলে, আনারদ নাম ঃ শচীর সপত্নী হোরে, সহা থাক শুচি। ांचि (नवा मृद्र थाक, शंक हम कि ! অরুচির **কটি হয়, মুখে দিলে** প্র। সাধ করে নিতা **খার, বেচে বাঙী** ঘর 🛊 তিনলোক্ত <del>লয় করে,</del> তব <del>আখা</del>দন। বালকের কাছে ভূমি, জননীর স্কন 🛭 তোষার সমান কোখা, আর নাহি আছে ৷

যুবতী-অধরামৃত, মুবকের কাছে ।
হরিনাম ক্থা ভূমি, যুক্তের নিকট ।
প্রকট বছনে হাসি, দেখিতে বিকট ঃ
বিজ্ঞাগতে তব্ ভগে, বাধা আছে সব।
বিজ্ঞান পান করি, প্রাণ পার শব।।
জাতে বেন এই হর, আমার কুপালে।
গালে এনে বাস কোনো, মুবলের কালে।

হেমন্তে বিবিধ খাদ্য। শরদের রাজা লরে, হিম মহাশর। कुषानात श्रका जूल, कतिराम बह । উন্তরীয় বায়ু অখে, করি আরোহণ। অধিকার করিল, গগন-সিংহাসন। রজনীর পরিমাণ, বৃদ্ধি করে অভি। দিন দিন দীন দিন, দীন দিনপতি। বুশ্চিকের দক্তাঘাতে, হোরে জর জর। শীতভারে অগ্নিকোণে, গেল দিবাকর। হিমের প্রভাব হেরি, ভাষরের দ্বংগ। নলিনী মলিনী হোৱে, লুকাইল সুধ। े কুবারে ভুবারকর, কর শুপ্ত করে। কুমুদিনী সরোবরে, অভিমানে মরে। স্বৰাতীয় বিলাভীয়, শব্দ করি কাক।

শিশিরের ভঙ হেডু, বাবাতেছে ঢাক । কিছু মাত্র হঃখ নাই, মগ্ন সবা হুবে । ধান্য হুবে হুবী হোরে, বাব্য করে মুবে ।

রিক্সল নিজনলে, পক্ষ পক্ষ ধরি। লক্ষ্য করি বহুদ এদে, বৃহ্ন পরিহরি 🖁 শূক্তব, সহচর, সহ চরে চরে। নানা সুরে গান গার, সভাবের স্ববে ৷ রাজদতে ভয় নাই, লবে সহচরী। চঞুপুরে শদ্য ধার, দহাস্থৃতি করি ঃ কিছু মাত্র চিন্তা নাই, আশাপুরে থায়। ভালবাসা ভাল বাসা, আশামাত্র ভার । সূভাবে অভাব নাই, পূর্ণ ফুলে য়বে। পুলকে পুরিত সব, নিজ নিজ দলে। পেয়ে শীত বিকশিত, বাকসেব সুব। মধুপানে হরবিড, বিহঙ্গের কুল । পরস্পর লাগে বলি, বিবাদের চোট। শালিক মধান্থ হোৱে, ভেলে দেব বেঁটি i দেখ দেখ বিহলম, কিন্তুপ প্রকার। শিশিরে কি ছথে করে, আহার বিহার। ক্ষেতে পোছে ধ্বতে পাহ, কড ভাহ সূব। সদাই স্থাধীন হোবে, করে দুব হংগ ।

#### কৰিভাসংগ্ৰহ।

5.8

অভিমানে মহকারে, লা হর পতন ।
প্রকৃতির গুণে করে, স্থৃকৃতি সাধন ।
পাথী, পণ্ড, কীট আদি, বত বত প্রাপী।
মাহুবের চেরে সবে, ভাল বোলে আদি ।
বড় বোলে অভিমাল, কিসে করে নর।
নানা রপ চুংধ নার, মনের ভিকুর ।
এবেতো অভাব ভার, রিপু বনবান।
কেমনে হইবে ভারা, প্রাপির প্রধান ?

স্থভাবে শোভিত সব, অত্তুল ধাতা। নানা শদ্যপরিপূর্ণ, বহুষতী মাতা। ত্রীহিব্যুহ পরিপঞ্চ, হরিৎ আকার। **(र हेम्र्य अवनीत, कार नमकात ।** সকল শরীরে শোভে, নিশির শিশিব ১ শ্বধির জটার বেন, মন্দাকিনী-নীর। প্রভাতে পরন চারু, চামর চুলার। প্রকৃতির ভারভরে, মক্তক ছলায়। ভুর ভুর বাজে বাদা, বুরি অভুভবে। ঈশবের ৩৭ গান্ধ, বুর কুর রবে। কুবকের মহানন্দ, আশার হুসার। শন্য-শিবে দুশ্য ভাল, উবার ভুষার ঃ ৰ্ম বাম হৰ্ ভাষ, পরিপূর্ণ আশাঃ

ক্ষেত্র প্রতি নেত্রপাত, সুথে করে চারা ৪ बीरवर बीविका दिशा, रक्ता करत बस्र । রত্বগর্ভা ৰম্বমতী, শস্য ভার বস্থ ঃ বে করিল ধরণীরে, ধনের ভাগুরে। কল, মূল, শাক আদি, শস্যের আধার। ধরার ধারণা ঋণ, কড ভাব ভার। ধরাধরে ধরা ধরে, যাছার রূপার। হার এই ধরাধামে, যে দিয়েছে ধান। তার পদে নত হোরে, কর ঋণ গান । অল (১) যদি নাকরিত, অলের স্কন। কিরূপে বাঁচিত ভবে, ভীবের জীবন ? অরেতে হরেছে এই, শরীর ধারণ। বত কিছু করিতেছি, অন্নের কার্ণ। ৰূপতে অল্পের দাস, হয়েছে সকল। ছেতে বন্ধা আদি সবে, অন্নের পাগল। ওরে আই জর বিনা, বল এ সংসারে। কঠোর অঠর আলা, কে জুড়াতে পারে? অর বন্ধ, অর বন্ধ, এই কেনো দার। সভাবে করেন বিভু, অল্লেডে বিহার। আলের বে কভ গুণ, নাহি ভার দীমা। धक्रमूर्थ कछ क्रव, बहात बहियां ?

<sup>(</sup>३) चत्र-इस्।

### क्विजन्धकर ।

\$•

আদি নাই, কুনি নাই, উনি আৰ ইনি !
তাবে ভূনি এজ বল, জরবাতা বিনি ।
অবের বারেতে বেব, হইরা কাতর।
অগাধ জনবিভাগে, ভূনিতেহে নর ।
বাবের মুর্বেডর বার, তর নাই বনে।
অনারানে হাত বের, আরু নাইনি।
ভূনির ভিতরে হতে, আরু নানি।
ভূনির ভিতরে হতে, আরু নানিত নি

অনের বে অস্থরাপ, মনে মনে রাথো। ভাল চেলে ভোগ পেরে, তাল চেলে থাকো।

গোৰ্ব পেকেছে মাঠে, নাম বার গম।

ত্বনার অনুসেব, কাছে নন কর ৪

অভিশব গুণবাস, পান্যের প্রধান।

'বহুছুর রুনান'' হরেছে অভিযান ৪

হিলু, মেল, বহনাহি, বত বাভি আছে।

এ ববন (১) প্রিরুত্ম, সকলের আগে।

মবুলার কাছে আর, হিনুই না লাগে ৪

হংগ গমে, বিবার ভাষা, নাম বার সুটি।

চেগে, বুজুর, সকলেরি, গুলুরেনাত কচি ৪

১০০, বুজুর, সকলেরি, গুলুরেনাত কচি ৪

<sup>(</sup>१) यस्त-क्षेत्र .

সনোহর, কচিকর, দ্রুরা এই বটে। **७**ड़ि मारे, मुड़ि मारे, मुडिद निकारे । ৰত থার তত মন, থাকে আবো কোভে। গদ্ধ পেয়ে নেচে ওঠে, অদ্ধ হয় লোভে ।। পেটুক বদাপি গুলে, লুচির ক্বার। দক্তি ছিঁছে ছুটে বাহ, রাথে নাথ্য কার? এই বুচি বাদ্মণের, পেটের সহল। विरावक ब्राक्षश्रद्धक देवनिरक्त नग । ৰত পাৱে ডত খার, ডত লয় ডুলে। কর্ম্মির কুলান্ কিলে, ভাবেনাকো ভূলে 🕽 আচার বিচার আর, কিছুই না করে। महे भाषा नूहि श्वना, निवा राव पदि 🛭 দেও দেও, গোল করি, ওঠে পাত হৈছে। কোঁছত্ব পুরণ করে, হাঁড়ি থেকে কেড়ে। রবাছত রেও ভাট, শত শত কৰ। বৃচির কুণার করে, উদর পালন ঃ গালি, খেরে, নাহি হর, খানের লাখৰ। কে দিলে 'রাঘৰ' নাম, রাঘৰ, রাঘৰ । शाबा, शबा, भारि कति, छरधव स्थारि । ut शाम बच्च गांक, करतहरू नवारे श কুমধুর মিষ্ট অন্ধ ভোজনের সার ই বে ৰা পাব ভার ভার, বুণা বস্ত্র ভার 🛊

204

নৱবার মহিমা, কেমনে বিব গেরে।
বোট্টারা কেবল বাঁচে, পূরি ক্লটী থেরে।
দেট আর বসাক, উাতির শ্রেট বাঁরা।
ক্লটী বাকে কত হুব, জেনেছেন উারা।
কেট আর বিস্কৃট, সাহেবের থানা।
কেব নামে হুজিতে, মেঠাই ব্যের নামা।
কৃমিতগে না হুইদে, ববনের চারা।
ব্যবনের দেশে পরে, প্রাপ্রে বারা।
ব্যবনার দেশে থানা, পৃথিবী যুরির।
কতগোক বেঁচে আছে, গোধুর বাইরা।
প্রার্গে বে বাঁচার, জীবের জীবন।

'ব্ৰহ্ম' বোলে সংবাৰন, কর তারে নন । হিমকয়েঃ প্রতাকরে, প্রেমতার ধর। অননীরে প্রকার, প্রশিপাত কর। অননীরে প্রকার, গোধ্বের বাড়া। নিনানে বিবেক্তে, বের, তালা হাড় বোড়া। বল্য, বীর্ত্তা, ক্ষতিকর, বেহু-ছিডকর।

শীতক অবঁচ বাহ, নৰ ছিব কৰে। শুক্ত হৈছিল পাকভৈনে, গলু গুল বহুর । ভোগির জৈবির বন, স্থবের আহার। রোগির স্থাপন্য হোরে, করে উপকার।

বভাবে সারক, বাড, পিড, দাহহর।

লিশিরে যবের শীষ, কিবা মনোছর। ধান্তবান্ধ নাম ভার, দেখিতে কুন্দর 🛭 বাভাসে ছলিছে ডগা, করি বার বার। মরি কত অপর্প, শেভা মনোহর ৷ চুমকিক্ষড়িত চাক, পীতাম্ব চেলি। কেলি (১) যেন তাই পোরে, করিতেছে কেলি ॥ এ বৰ দোষের নয়, গুণের কেবল। মেহ, পিন্তু, কফ হরে, মধুর, শীতল 🛭 নানা কর্ম্বে হিতকর, নানা গুণনিধি। নানাত্রণ রোগে হয়, যবমগু বিধি ॥ ষব-ছাকু খেয়ে বাঁচে, পশ্চিমের দীনে। वक्रमान्य बाटक मान, ठक्रदक्त मिरन ॥ (मथह यदवर ७१, क्यम क्रांम । বে ভারে পেষণ করে, রাখে ভার প্রাণ র

হথের শিশির কালে, কৃষির কৃপার । অচ্চিত্র তক চাক, কিবা শোভা পার ॥ শাখা নেডে হুলিতেন্টে, বাহুর বিক্রমে । কটাখারী খোলী দেন, চলেন্টে আবামে ॥

এখন তথন নাই, বুৰে বদি খায়। যবে ৰল, ববে ৰল, চিত্তকাল পায়।

<sup>(</sup>১) কেলি-পৃথিৱী ৷ ১০

### কবিভাসংগ্ৰহ।

আহারেতে পূর্ব হয়, প্রাণির উদর ৷ কতরপ বোর ঘটা. জটার ভিতর 🕯 মনোহর "অভহর" বীর-প্রিরতর। স্বলের ব্লদাতা, অবলের ব্য 🖁 কাছে যেন নাহি আনে. পেটরোগাদলে। থেতে সুধ, কিন্তু হু:ধ, বুক বুড় জলে॥ এপ্রকার মুবপ্রির, ভাল নাই আর। নিত্য বেন খায় সেই, অধি আছে বার 🛭 পশ্চিমের পাবোরান, বোক সমুদার। অভহর বিনা তারা, কিছই না ধার ! ভীষের যমান ভারা, বলে ও আহারে। **जान, को** ये भारत, क्लाम क्लारत मारत ॥ কল, পিক্স, ৰাভ, রেখা, বে করে সংহার। বায় রদ্ধি করে সেই, এই দোৰ ভার 🌡 এ দোব দোবের মাবে, করিনে প্রহণ। আপনার দেহ ববে, করিব ভোজন ।

অবশ্যই ভাতে আছে, নানা রপ বিভ ঃ
——
কেং ভরা বেঁনারী, পেকেছে এই শীতে ।
কাতিছে রুঁ।টিছে নব, হানিতে হানিতে ।
নাডিছে বাড়িছে বুনা, কাড়িছে বাগাবা ।

ষার স্থাদে শত শত, মানব মোহিত।

220

কতবা ছাড়িছে কত, নাড়িছে তলার ।
গাবিবের গুণনিধি, অশেষ বিশোবে।
অতিশ্য সমাধ্য, বাজানের হেশে।
পূর্বদেশী বড় বড়, বড জমীবার।
বিবের বেঁসার ভাল, করেন আহার।
ইহাতে বিশেষ্ গুণ, বদি নাদি রবে।
সে দেশেতে এত বিল্ল, কেন হবে তবে?
আস্থাদ উত্তর বটে, দেবিলাছি বেবে।
এই হেড়ু মোটাষ্ট্র, গুণ বাই গেরে।

নাঠে এনে শোভার, সকল বাই ভূলে ।
কনকের নিভা হতে, চণকের কুলে ।
ফুলেতে ধরেছে কল, ৬টি ৬টি কুঁট্টি।
ইফা করে বিবানিশি, নধ বিয়া খুঁটি ।
হাল খুলে মুখে ভূলে, কচি কচি ধাই।
এমন অধের স্থার, আর নাহি পাই ।
কাচার বিচছি তার, অধার অধিক।
এটি প্রানে প্রানে ক্ষের মুননা রিক ।
পাকাছোলা ৬ব বর, অশের প্রকার।
বিশেষ করিরা নব, লিখে উঠা ভার প্র
বির্মির ক্ষিণিন করে, ভিব্লে হোলে পর।
বুলু বর্ণ ক্ষিকর, বাতপিড্বর ৪

225

সে ছোলার মল হয়, অতি উপকারী। চন্দ্রকরবৎ শীত, পিস্তরোগহারী। ভিত্তে ছোলা ভেত্তে থেলে, কত উপকার। ' পিত কম হরে, করে বলের সঞ্চার । শুক্ত ছোলা ভালা অভি. সুখের আহার। **म्हे बाद्य जात्र मद्या, माळ प्र्याह्य रात्र श** খোষ্টারা এ ছোলা লয়, পরম আদরে। ভালা খেরে, ছাড় খেরে, দিনপাত করে 🛭 ऋकारव शहम दीवा, वक्ष श्रम शह । অগ্নিজার না থাকিলে, বিপরীত করে 🛊 অধিবল না বৃঝিয়া, বে করে আহার। সে ছোলা, আছোলা হয়, পেটে ঢুকে ভাব 🤉 বিধবার পক্ষে ইনি, অতি গুণময়। সকল বাঞ্জনে মিশে, করেন প্রণয় 🗈 ছোলার ডেলের রস, আত গুণকর। পাকে মধু, বাত, ৰুক, খাস,কাশহর। यम दुष्टि करत, कति छेनरत श्रायम । মহারোগে পথ্য বিধি, পীনসে বিশেষ 🛊 শাক অতি মুধব্রির, মন্ত্রশোধ হরে। ফলের আদর ভারি, ঠাকুরের ঘরে॥ চণকের খোসা পুলে, দেখ দেখ নর। কিল্প পদার্থ আছে, ভাহার ভিতর 🕽

আত্মা আরু জ্যোতি বেহে, চণকের প্রার । নিয়ত ররেছে চাকা, নারার খোনার ৪ আর কেন ? সার লও, ছাড় নিস্তাবোগ । খোনা থুনে কর কর, বস্তু কর তোগ ৪

বাজনাব' নাম জাঁর, বরবাট বিনি । হোগা আর মইরের, গোল্লীপতি জিনি ॥ গাঙক সে কচিকর, অতি বনোহর । কড়, তক্ত, আন, দিখা, চেরের আকর ॥ পূজার নৈবিধ্যে জাঁর, আরে আরমন । কাঁচা পাবা চুই চলে, হুগের কোজন ॥ ইথে বহি না হুইত, কুপ্ন সাবন । কপনই হুইজ না, বীজের স্কন ব

মাঠে সিরা দেখ সব, মুগের আকার।
পরীর হরেছে কিবা, শোভার ভাঙার ৪
ভাউল সে তক বটে, কুটিলভো নর।
এবন্ সরবা বীজ, জার নাকি হয়।
ক্পান্তেট, ভাক্তিপ্রার, রনোভ্যর আব।
ভ্রমণ, বলিয়া নান, ব্রেছে প্রচার এ
দেবভার প্রির বাংস, মুগের জমুর এ
ভ্রমণানে প্রকাশিত, প্রতিষ্ঠা গ্রহুর ৪
ভ্রমণানে প্রকাশিত, প্রতিষ্ঠা গ্রহুর ৪

ঔষধ পথোর ছলে, স্বার প্রধান। स्त्रहरू. ७७वर. यह काद हान ह সকলেরি শোনা আছে, ছোণামুগ ভাই। এ স্থোণার নিকটেতে, স্থোণা হয় ছাই। মুগেব ডেলের গুণ, কি লিখিব আর ? সর্ববোগ হরে করে, বক্ত পরিকার ॥ খভাবে দারক মুগ, পিত করে কর ৷ जनाकालां सम्राह्म क्रिका हत । नाडे (१७, मना ८४७, (थाक ८४७ १४८०)। সকলি অমৃত হয়, মিশে এই ডেলে। এই শীতে মূগের, বিচুড়ি যেই খার। সেজন ভোজনে আর, কিছুই না চার 🏽 মুগের মুগৰ্ব লাড়ু, মেঠারের রাজা ৷ সেই জানে তার তার, বে থেয়েছে তাজা **৪** व मुत्रके छोखां चूनि, मुक्क करत मूच । বাসি বাও, তাজা খাও, কত ভার স্থুখ। हेश्त कनिर्क विनि, कुक्षमूत्र नाम । লবাপ্তৰে শ্ৰেষ্ঠ ভিনি, বছগুণধান । যুগে বুগে আছে এই, মুগের গৌরব। মনে আদ বৌগ কর, ভোগ কর সূব।

ক দাই বড়াই করে, নিজ অমুবাগে। তার কাছে কেবা আছে, কেবা কোথা লাগে ? চাদাৰ আশার ধন, তেমন কি আছে ? অপরপ কিবা ফল, ফলিয়াছে গাছে 🛭 স্তার শ্যামল রূপ, ধরিয়া কলাই ৷ मृव करत छम्द्रत्रत, मकल वालाई। खाला जिल्ला किंद्ध निका, द्रार्था यसि (काल । থাবা থাবা মেরে দেও, কিছু নাই গোল # গরিবের গুণনিধি, মধুর ভোজন। মুখে দিতে উলে যার, খুলে যার মন 🛚 দীন লোক বারা ভারা, এই ভাবে সার। कनाहे शाकिरन घरत, वानाहे कि बात ? काँहा बाब, जाका बाब, कठि बाब बाटक। কোঁৎ কোঁৎ গেলে ভাত, বন্ত দেও পাতে ম গলার পশ্চিম পারে, যত সৰ রেডো ৷ সমভাবে সকলেই, কলায়ের ভেড়ো। অতিশ্ব হঃধ সৃহ, বাস্তু বাড়ে টানে। কলাই না খেলে তারা, মারা বার প্রাণে 1 কলাই মালারে কন্ত, কচুরি মেঠাই। পাকে লঘু সমুদয়, পেটভোরে থাই ! जकरणतं मुचित्रित्र, कलास्त्रत रिष् কুমুড়া বাহার পার, হার গড়াগড়ি 🛊

সহত্তে খবেরছে ঋণ, কিঞ্চিৎ দীতল । বায়ু হবে, দেহ হুতে, কুজি করে বল । কলাবের দেহ দেখে, নাহি বার খানা। বাহিরেকে খোলাভরা, ভিতরেতে দানা। সেইজপ ভাব বর, সমূদর নরে। ভিতরে কুঞ্জর ২৬, বাহিরে জ্বিকরে ৪

বহুর অপৃহতোরী, ত্বর-প্রির্ভব।
রূপে প্রশে কুই বিকে, নাহি তার সম ।
জন্তবীক্ত নাম বছে, গেলে পরে জারা ।
তরুপ অরুণ ভঙ্গ, টুক্ টুক্ রাজা ।
ভাতে দেও, ভাগ রাঁবো, ব্যবের তুপার।
বাঁড়ির বিচুড়ি খেলে, ভূনিবনা আর র
ব্বের জর্পেতে হন্ধ, ব্যবের সংহার।
কক, পিত, অর নালে, নালে অভিনার।
কর ভাই নত্রির, উপের বিচার।
অসারের বাবির, উপের বিচার।

দক সক কৰু সৰ, চাককণেৰর । নৰঘৰ শ্যাযক্ষণ, চূপ্য মনোহর ৪ কটিশ রামের ন্যায়, শিরে শোভে কটা । মোকণক দের ভারা, পেটে বার বটা ৪ নিজে বটে ছোট, কিন্তু দানাদার ছেলে। कर्छ रुव चर्च नम, चन्छे (कारत (थरन । আনাজেতে তুল্য আর, জুটি নাই ছটি। বলিহারী বাই তোরে, মটরের হুটি। স্থাটির থিচুক্তি করি, থেরেছে বে জন। ভূলিতে না পারে আর, ভার আস্থাদন । काँहाइ निकटी नग्न, शांकात्र चान्द्र। दिनगरक 'इरत्रपृ' नाम, পেয়েছে মটব ॥ ভাজা বেন বাজা বার, ভাজা বীর বারা। পেটরোগা বারা তারা, প্রাণে বার মাবা # (माठी गाँदि करन बाजा, कांडारनज कारता। অনেকেই পেট পালে, মটরের ডেলে। ক্ষা আৰু কৃষ্ণ ৰটে, ফলত মধুব ১ পাকে গুরু বটে করে, পিত কফ দুর। পীজিতের পক্ষে বনি, গুভক্র নর।

শিশির সমরে দেখ, ক্বির কুশন।
তিশির তকতে কিবা, কলেছে ফসল ॥
অতদীর কুম শোভা, বাই বলিহারি।
হেরিলে নরন আরু, কিকতে না পারি॥
কুসের ভিতবে বীজ, সমুদ্র সার।

তথাপিও অনেকের, উপকারী হয়।

হেবে হয় প্রথোদয়, আলোর আধার ! বীজের নিজের গুণ, উত্মভাব ধরে। कक, शिखकाती वटि, वायु नाम करत ॥ মদগদ্ধী, মধু স্থাছ, পাকে কটু থেলে। বায়ু, কফ, কাশ দোৰ, নাশে এর তেলে ! কত মতে বিলাতে, হতেছে প্রয়োজন। বেখানে সেখানে দেখি, তিসির ওজন । चा छन इराह हर, विनाट ह सेंहि। দিশি হোমে তিসি আর, আমবা না পাই। मनिनात कुछवीत्य, त्य नित्त्रह् तम । একবার মৃক্তমুখে, গাও তার বশ । বে বীজের তরু এই, অধিল সংসার। মনে কর ক্রেই বীজ, কিব্রুপ প্রকার। ৰস্মতী বস্বতী, বাঁহার কুপার। হার হার কি কহিব, কত রস তাত.? দে বীজের তেল গুণ, কহে সাধ্য কার? द्रवि, भनी, जादा चाहि, चाह्या हर शह है

নবন প্ৰকৃত্ত হয়, গেলে পরে মাঠে। পরিপূর্ণ নানা শোভা, স্বভাবের হাটে । শবদ পড়িল বরি, সারস্থল চেড়ে। সরিষার ভূল ভার, শোভা নিল কেড়ে। মনোলোজা কিবা শোলা, চটা ভাব জলে। দামিনীর হার বেন, জলদের গলে ॥ ফুল ফল অভি ক্ষুদ্র, ভার মধ্যে বসু। আলোকে পুলক দিয়া, রাখিয়াছে যশ 🛚 সরিবার সার অংশে, বাঞ্চনের ভার। অসারে গাভীর স্তনে, হয়ের সঞ্চার ৷ যার গুণে রজনীর, অন্ধকাব হার। ক্বকের ক্ষেত্রে তাহা, শীতের কুপার। भाषा, कारना चापि कति, नाना तह धरत । কতরূপে মানবের, উপকার করে ॥ वीत्कत्र चात्मव खन, निष्ठात्न खकान । কফ, বাত, ক্রিমি, কুর্ছ, ত্রণ করে নাশ। গুল্ম আর কণ্ডুরোগ্র ছই করে শেই। वहत्तरक अन नव, कि कव विश्वध ? বিচির ভিতরে রস, আলোর আধার। '(जन' नारम नाम गांत, शरहरक क्षेत्रांत ह শরীর হতেছে র<del>কা</del>, থেরে আর হেথে। অমকারে আলো দের, প্রদীপেতে থেতে ! অবিকল গুণ ধরে, স্বতের সমান। সমভাবে বাঁচাভেছে, সকলের প্রাণ । যোগী, ভোগী, রোগী, রাজা, দীন হীন জন। সকলেরি করিতেছে, মদল সাধন ।

১২০

ৰীক্ষের ভিতরে বস, নাম বার বেছ ।

এ মেহের গুড় ভাব, নাহি বুকে কেছ ।

ওরে নর । পাইরাছ, বনোহর দেছ ।

মনেরে পেষণ করি, বার কর কেছ ।

সরিবার কেছ দেখে, তার হত সবে ।

কের কর প্রথিবান, মানব সকল ।

দেখ বিবা লৈবের, মেহের ভৌশল ।

পরস্পর কেছ-রসে, সবে ববে বশ ।

সর্বপে দিলেন ভারি, মেহকের বল ।

স্থলে কলে, সুনোভিত, হইরাছে ভিল ।

হেরে ভাগি কিরাতে, না পারি এক ভিল ।

ভাতি ছেটিটা বীক্ষ ভাগি, রমের সমন ।

বাত, অৰ্ণ হবে, করে, বল বিভরণ ।
সৌরভের ছুলোল, কুলোল নাম যার।
তিলের তেলেতে হয়, জনম তাহার ।
বাহুহর হিতকর, বকে আর চুলে।
কুলে বে কুলোল বাবে, মবে সেই কুলে।
তিল কুল রূপের, আভাগ বেহে হবি।
কিলোভার নাম পেনে, স্বর্ণ-বিকারবীর।
অ কুলের লোভা বে, বেগেহে একবার।

রূপের গরব বেন, সে করেনা জার।

হায়রে শিশির জোর, কি গিকিব বর্ণ ? কালভণে অগরণ, কাটে হর **রস** <sup>‡</sup> পরিপূর্ণ স্থবাসিদ্ধ, থেজুরের কাটে। कांत्रे (कर्ड़ केंद्र बन, यक कांत्रे कांत्रे । (एरवर केन क बन, जीवरणद बका। এক বিশু পান, করি, বেঁচে উঠে মঞ্চা। না থাকে বিরুস ভাষ, রুস পেটে পঞ্চে। विकृ शान, यहि शान व्याव शान शरक ह সে অলের ভাল ধর্ম, মর্ম তার পূচ়। ত্বভাবের ক্রিরা বালে, দ্বালে হয় শুড় । আমাদের ভাগ্য দোবে, বিছে করি থেব। বিজাতীর রাজা হোলে, নই করে দেশ। লোভ ভারি আবকারি, যুক্ত করি কই। «এমন থেকুর রদে, বদাইল কর। মাওল উত্তল করে, রঙ্গে আর ঋডে। পরে বৃথি গ**লাকলে, কর দেবে বৃক্টে।** মূল্য দিয়া তবু খাই, কর পরিষাণে। र्थकरहरे मा स्वित्न, खर्च दाहि खाल ।। মাদকতা শক্তি নাই, লেটভরে খেলে : . বিবাদী ভূইল ভাষ্ক, ফলনার ছেবে ৷৷ গুণ বেখে, অভিযানকর্তা, গুণহাম। (थक्त गारहत दिल, 'हरिखिता' नार ॥

ब्राम्य वर्णां, नां रव ध्यकाम । দেহ করে বৰ্ণমা, মেহ করে নাশ ।৷ বায়ু হরে, মল মূত্র, করে পরিকার। রসনা পবিজ্ঞ করে<del>, তথার স্থভার</del> । শুড়ের নিগৃচ গুণ, কি কহিব জার ? স্থানে আমোদ করে, মধুর আগার।। নুতন থেঞ্রে ঋড়ে, দেবতার সক্। नाम अत्न जन गरा, त्नाना नक् नक ।। এ প্রকার স্থাস্ব্রে, আর নাকি আছে। निनीत मधु (काथा, निल्लित कारक ? মাতে মন ভুখন 'পরড়া' গুড় পেলে। व्यक्तित क्षि इस, नृति नित्य (थरन ।। 'ভোজালের পাটালি', যে থার একবার। ক্ধনো দে ভূলিতে, পারে না তার ভার।। নূত্রন নলেন গুড়ে, মঙা মনোহর। পারস পীবুর সম, অতি প্রেমকর ।। এ শুডে পিষ্টক হয়, বিবিধ প্রকার। কাঁচা পাকা ছই চলে, স্থাৰর আছার !। যারু পিঞ্চ হরে করে, মৃত্তের শোধন। विनि चात्र विश्वातित, कतिरह रखन । মিছারি চিনির খণ, স্বাই বিদিত। বিশেবেডে লেখা ভাই, না হর উচিত ৷৷

#### কবিভাসংগ্ৰহ।

দেশহ খেজুৰ গাছ, কক গুণ ধৰে।
গলা কেটে বজুৰ দিবা, উপকাৰ কুৰে।
বৈ তাহার মাথা কাটে, তারে দেব প্রাণ।
খেজুবেৰ মাথি নানা, শুণের বিথান।
বাটেব ভিজ্ঞাব বেখে, অমুদ্র জল।
মানবে শিখান প্রজু, করণা-কৌশল।।

শিবা সহ সদাশিব, ছাডিয়া-কৈলাস। অবনীতে স্বিষ্ঠিত, এই কয়ু মাস।। কল মূল বস থান, সাধ যত আছে। निनारगार्थ निक्षा यहा, अकल्व गारह ॥ ঘন ঘন হিমবৃষ্টি, তাহে স্থান কবি। উলঙ্গ হইল ইকু, বস্ত্র পরিহবি ৷ ু স্থভাবে হইল ভাষ, মধুর সঞ্চাব। পাপে পাপে রস ভরা, মিষ্ট তাব তাব 🌡 খতে পাপ ধার যেই, খণ্ড এক পাপ। বাছতুলে স্বৰ্গপুৱে, নাচে ভাব বা<del>গ</del>। অন্নপূৰ্ণা বিখেখৰ, মনে ভালবাসি। আকেরে দিলেন স্থান, পুণ্যধাম কালী ঃ কি বুৰিবে **মৰ্ম্ম গৃছ,** যত সৰ মৃচ ? বানে চুকে ব্ৰাক্ষ্য, আল দেন গুড় .৷ শির শঙ্গ-আভা পেবে, শোভা ৰাজে ভার ৷

# ১২৪ কৰিডাসংগ্ৰহ 1

कोनी नात्म नाम शांक, श्वन बाकार । শিবের স্থানিত বন্ধ, নাম হলো চিনি। সাংহবেরা শিরেশ্বরে, ভাল রূপে চিনি ঃ মহৎ কে আছে আর, আংকর মন্তন ? তাহাবে অমৃত দের, বে করে शीखन । যত পার ভত খাও, দেও দেও পেটে। স্থাৰতে ভোজন কর, পাথ হেটে কেটে। গেঁটে গেঁটে বদ ভরা, রদের আধার। 'মধুতৃণ' 'মহারদু', নাম হোলো ভার ৪ श्रीका स्रोत शकशास्त्र, स्था स्वातापन । গেটিতে লবণ রস, মাঞ্চর লবণ। জিলোব বিনাশে এই, মধুমর যাসে। वर्षनात्म द्रव ८४४- नावना शकात्म ह গুডের বিশেব লোয়ে, গুণেব সন্ধান ৷ 'শিক্তির' অভিধান দিলে অভিধান। कि, हिनि ? कि, हिनि आमि, कि कब विराध ! সবাই সেহিত খেয়ে, মেঠাই সন্দেশ। ভাতে খাও, খাতে খাও, চধে আর জলে। हिनि विना बार्च्यक, खाकार मा हरण । সৰ দেশে প্ৰিয় ইনি, স্কুল স্মৃত্ন। ছেলে, বুড়া, সক্লের, সমান প্রথম । আহার ঔষধ চিনি, অভি হিওকর।

#### কৰিতাসংগ্ৰহ।

চিনিতে শোধিত হয়, স্তুবা বহুতর । রোগী, ভোগী, উভরের সম উপকার । স্থাবের সামগ্রী হেন. কোথা পাব আর? আকের মিছারি হব, অমুতের কোব । সকল গুণের নিধি, কিছু নাই দোব । আদের রস, বনে গুড়, গুড়ে চিনি হয় । চিনিব শবীর পার, মিছারিতে লর । সকল অসার গিরে, সার থাকে শেব । অতথ্যব লহু জীব, সার উপদেশ । কর্ম বেণ্ডে ধর্ম হয়, ধর্ম হোতে জান । নিতাধাম-প্রবেশের, সে জ্ঞান সোগান এ কামনার রস গুড়, দিওনাকো মুখে।

চাক তক কুলাকার, ফল তার বৃকে।
বেগুণের গুণ নাহি, ব্যাখ্যাত্র মুখে।
শাদা কালো নানা প্রপ, দ্বিভঙ্গ স্থঠাম।
দোলার ছলিছে বেন, ক্রণ্ড কারাম।
বোঁচা রূপ চাক চূড়া, কাঁচা প্র্যুক্ত ভাতে।
রাত্রিদন আলাপন, রাখালের লাতে।
পতিতলীবন নাম, মহিমার গুণে।
সমভাবে যুক্ত হন, সুকল বাঞ্জনে।

চক্ চড়ি স্কুস্ বি, লৈছো আর ভাছা। আবার উদরে দেন, কত কত রাজা ॥
আর ববে বহু নিলে, গোরী উদ্ধ বাতে।
গরিব নোরাফ নাম, গরিবের কাছে।
তাহার অকটি বার, আহার বে করে।
বোচক, পাচক ছোরে, বাত, কদ হরে।
ববঙৰ স্থবণ ইংব, অগুলতো নাই।
অগুল বেংক পুল গোরে, পেট ভোরে আই।
বো ববের কেওবে, এ গুলের নিবান।
নিতে নিতে তার, তার, ৬৭কর গান।

লোড়া সক আগা শুক্ল, দিৱে পোচে টোগ।
খেতকাত্তি পথাকার, ভিন্ন ভিন্ন থোগ।
দূলে তার মূল নাই, নাম ধরে মূলো।
লোগাপেটে থেতে হোলে, বেতে হর চূলো।
ধ্ব কিন বাবাখীরে, করিলে আহার।
ছমান নির্পত হয়, সরান উলগার।
ধোটাবের কাছে স্তার, সমাদর বাড়ে।
ঝাটাবের কাছে স্তার, কিছু নাহি হাড়ে।
ঝাটাবের কাছে স্তার, ক্রে পাটি হাড়ে।
বাড়ভারে নাহেবের, ক্রে পেট পাট।
নিরত হাজির করে, হাজিরের কালে।
জবপানে সমাদর, স্ববের কালে।
জবপানে সমাদর, স্ববের কালে।

কচুবির সহ প্রেম, ৰোট্টাব দোকানে 🛭 গোষ্ঠিপোসা ব্যক্তনেতে, বড মান বাডে। বাবাজীরে বেপ্তণের, সঙ্গে সঞ্চে ছাডে 🛊 कि मृता झकिकत, जिल्लाय-मानक। পাৰিলে বিনাশে বায়, পিন্তেব জনক। শোপ, বাত, শ্লেমা নাশে, ভথাইলে পরে। অথচ শীতল গুণ, আপনি সে ধরে।• মূলাতে হিঙের গুণ, আছে অবিকল। কাঁচা থেয়ে নেচে উঠে, সবল সকল। মূলক মূলক বটে, অমূলক নয়। ব্যাভাবে পেয়েছি তার, মূল পরিচয়। মূলে কোন দোষ নাই, ভাল ৰটে মূল। মূলে যে নিপাত কবে, তারে দের মূল 🛭 মূলকের কাছে কিছু, অমূলক নাই<sup>8</sup>। মূলকের মূল বুঝে, মূল রাথ ভাই ॥

প্রাচীনার জন সন, আছের ধরণ।
বোটা সক, মোটা মুখ, বিনল বরণ।
কথনো নাচার বাস, কভু বাস চালে।
বুক্ষের উপরে উঠে, মুক্ত হোরে ভালে।
বড় বড় ধনীলোক, কব দিয়া হাতে।
বড় করি হান দেন, তেভালার ছাতে।

পড়িয়া চাসার হাতে, ভুট নছে মন। অভিযানে করে তাই, মাট্টতে পরন ঃ সীতার **খত**র বিনি, দশর্থ ভূপ। ভাব সঙ্গে গলাগলৈ, ভাব অপরপ a চিক্জির সহ বোগ, লাউ বদি করে। . হাতে হাতে স্থর্গে বাই, মুখে দিলে পরে 🛭 মহাফলা তথী এই, যদি হয় কচি। ক্লধা ফেলে ছুটে আদে, বাদবের সচী ॥ কতই আনন্দ বাডে, আহারের বেলা। **छां हो, (शाला ज्यापि, किছू नाहि शाल (क्षणा ॥** ভাতে কিখা কোলে ডাঁটা, যুক্ত হোলে মাচে। তেমন কথাদ্য আরু, জগতে কি আছে ? निदामिर नाउँ नाल्, ऋथाद नमान । অহলে ৩০ ডেব সহ, অভিশয় মান। ভেদকর, কফকব, হিম কিছু বটে। পিত্তর কেহ নাই, ইহার নিকটে 🛚 🧍 একমুথে কি কহিব, কত গুণ ধরে ? ক্রথাইয়া 'বচ' হোযে, কাশ নাশ করে । যোগী ঋষি, সকলের আরের আধার। (यथार्म त्रिशास यान, जुब कहि मात्र है জেলে যালা বভানেতে, করিয়া প্রহণ ী कारण कुरु कुरुष करह, जीविका माधन ।

ভানপুরা, বীণাবন্ধ, মধুর সেভার।
এই লাউ হুইরাছে, সর্বানুলাবার ঃ
পিব হুইলেন সিছ, গীত আলাপনে।
নাবদ আিলোভপুঞ্জা, বীণার সাধ্যন ।
পেপ দেব কেমল, মহুৎ এই ফল।
এ কল যে ধ্যে তার, সকলি সকল।

মনোহৰ ফ্লকপি, পাতাবৃক্ত ঠাছ।
সাটনের কাবা কেন, বাব্দের গায়।
শ্রেণীৰছ চাক পোতা, এলো আর বাঁধা।
সাংহরেরা প্রেমডোরে, চিরকাল বাঁবা।
রহনেতে তাঁর সঙ্গে, বুক্ত হোলে কই।
বত পাই, তত বাই, আবো বলি কুই
স্থার ক্ষাহে বেই, নাহি বার কণি।
তারে কি মাছর বলি, নিজে কেই কণি।
কপির সকলি গুল, দোহ কিছু নাই।
তাবেই আবোদ বাকে, বিছু নাই।
তাবেই আবোদ বাকে, বিছু নাই।

বহৰিধ শাকর্ক, শোভা কলে পাতা। ইল্লের সূতার বেন, সহলক পাতা। পেটে কেয়া হূরে থাক্, দেবে ভূট আঁথি। ইফা হর পালভেরে, পার্লভেকে রাধি। অৱ ভাগ কটু, আর মধুব সকল। বক্তপিত্ত নাশ করে, সুপথ্য শীহলু। বিট নামে পালঙ, কি মহাত্রব্য তিনি। বিলাতে তাহার রমে, হইতেছে চিনিন্দ

চ্ধার চ্ধার মৃথ, হথ কব কতৃ ? হাতে হাতে উঠে বার, পাতে পডে বত র অতি অর, উম কবে, অমিব প্রবাশ। শূন গুল, আম, বাত, রেমা করে নাম র

অপক্রপ বস্তু এক, মৃত্তিকাব নীচে।
গাছ দেখে বোৰ হব, সমুদ্র মিছেও
কচুৰ স্মান্ত্র তার, অভিসর মান।
তথা দেখে প্রসিক্তে, নাম দিলে মান ।
মানরাস বাবাজীব, অভিমান নাই।
পরিমাণে বাভে নান, মানে দিলে চাই ।
মান্তের সহিত কোম, যুক্ত হোলে বোলে।
একবার বে খেলেছে, সে কি আর ভোলে ?
কোলের সহিত্তদেখ, মানের এ মান।
গঠিল প্রকার্ত্তদেশ, করিল প্রস্থান।
মানের মানের কথা, কি কহিব আবঁ
আনাব্যের বাজা ইনি, প্রেই সবাজ্যর।

শোধৰত, পিত্তৰ, পাকে স্বাহ্, লমু।
এ মানে যে নিজা করে, ভাবে বলি গিমু'।
মানেব কেনন মান, দেখ দেখ ভাই।
ছাই বিলে মান বাকে, মানে শেও ছাই।
বেখিয়া মানের মূল, মান রাখ মূলে।
মানের মূলের মত, উঠনাকো কুলে।
এই মান, মানে করে, জাপন ব্যাঘাত।
যথম কুলিয়া উঠে, তথান নিপাত।

্মুত্তিকার জন্ম লয়, গাছ বেন লতা। একমুথে কত কব, মহিমার কথা? পুর্বে তার বাস ছিল, ইংরান্সের দেশে। 'গোলআলু' নাম হোলো, বাঙালায় এদে \$ मारहरवदां 'भछाष्ठेम्' नारम, नाम श्रवि । থানার আনায় তারে, সমাদর করি ৪ মটনের অগ্রভাগে, ধরে ভার ডিসু। স্থাধ দিয়ে বুকে কাঁটা, মুখে করে পি**স**্ঞ কাঙালের আগক্রা, অধ্যতারণ। অনেকের হয় তাহে, জীবন ধারণ। किছू यनि नाहि शाहे, मतिरनरका इरथ । গোটা বুই ভাতে দিয়া, ভাত মারি স্থাৰ # ভাতে দিই, বাতে দিই, ভাতে হর রস।

গুণভাগ, দোৰ নত্ত, আপু পেটাটন্ । । ইউরোপে কোট কোট, বেকাকার নত্ত। কেবল নির্দ্ধিত করে, আপুত্র উপর ৪ মাস, কটি, নাহি পাত্ত, বীন হীন জন । জ্যালুখেরে করে গুণীবন ধারণ ও গুণে গড়, স্থাবাহ্য, বল করে দান। অবিকল গুণ বাত্ত, আম্বাহ সমান ॥)

শিমেব হইল জন্ম, হিবের কুপার।
শ্যামল ধ্বলকান্তি, শোভিত লতার।
শরীরে সংলগ্ন শির, অসির আকার।
তক্তরসে মুক্ত হোলে, সমানর তার য়
শীতল অধ্চ কন্দ্র, পাকে গুরু হর।

ভূই ভূঁতে 'পূঁই গাচ' হইহাহে থাড়া। অধ্যতারণ নাম, ববে তার থাড়া। ভূদে ভূদে চিঙড়িত, সহ হোকা বোগ।

व्यविक थोहेरल शुरं, रल करत क्या ।

ক্ষে ক্রে চিঙড়ির, সহ হোরণ বোগ।
মধার আন্থান হর, মধের ক্ষডোগ।
তেদকর, ডক্রেকর, কফ বছ করে।
পাকেতে মনুর হর, দিশ্ব গুণ ধরে॥

পলাপুর শ্রেণী বেন, যুদ্ধের লক্ষর 1 মুকুটের পর উড়ে, মাধার উপর। ফুলে যুক্ত মুলে যুক্ত, মনোহর কলি। তিন যুগ জয় করি, ধ্বজা তুলে কলি 🛭 ববনে ভবনে আনে, বছু কবি নানা। ভাঁহার সংযোগ বিনা, জাঁকেনাকো থানা লুকাচুরি ধেলা তাঁব, হিন্দুর নিকটে। গোপনে করেন বাস, বাবুদের পেটে 🛊 পাকে আর বদে পঁয়াল, উষ্ণ নাহি হয়। বল,বীর্য্য করে আবে, বাযু করে ক্ষয় # মাংসভোজী জনের, বিশেষ উপকাব গ একবার যে থেয়েছে, সেই স্থানে তার। পঁ ালখোর বারা তারা, আহারে সঞ্জীয়। লোমসুঁড়ে গন্ধ ছুটে, এই বড় দোব।।

<sup>্</sup>ৰেডকান্তি শ'ক-আনু, অভি তুপীতন।
পূৰ্বিবাঁতে ভোগ করে, নিজ কর্ম্মকল।।
শশ-চক্ষ-গদা-গল্পথানী ভগবান।
বন্ধের বৈষ্কুঠ, ভবন বাঁর খান।।
বিষ্কুব করেতে থাকি, না বুজিরা হিড।
কলত্ত করিত শশ্, চক্রেক বাহিত ।।
চক্র করি চক্র ভার, কেটে দিলে নাক।

অভিমানে ভৃতদে, পড়িল তাই ল'কে । স্থৰ্গ ছাড়া হোৱে তান, হংগিত জন্তন । লক্ষাৰ লুকাৰ মুখ, মাটিব ভিতর ।। স্থামৰ বলে কৰে, বিলোৰ হবণ । মুখের জড়তাহাবী, কে আ

বাহিরে গৌরাক তার, ভিতরেতে শালা।
শাক-আলু হন্ বার, সহোবর নারা॥
বরনে কনিউ হোঙে, জ্যেট পুণ তার।
কাঁচা পাকা দিই মুখে, সুখের আহাব।
ভালা, পোডা, ভাতে আর, ব্যক্তনে নিয়োগ।
বাতে বাব, তাতে পার, হথেব স্থাতাগ।
পাকে লমু, ভাকর, মোর বড় নাই।
ভণ সেতে, চিনিকক, নাম বিলে তাই।।

ব মলা কমলাভ্রপে, অবনীতে একে।

ওজনাত্তী অধিচাত্তী, বাঙ্কালের দেশে।
প্রীমতীব আধিচাত্তী, বংশ অধিপ্রাম।
প্রীহট্ট হইল তাই, ছিলেটের নাম।।
প্রেকান্তি রাভাম্প, বিদারী বারা।
উবিলেতে কেট নিরা, টেট গান তারা।।
একবার তুই বেই, কমলার তারে।

অন্ত কৰা আৰু নাহি, তাল লাগে তাৰে।। বাদ্, পিন্ত নাশ কৰে, মধুৰ অন্থল। অকচিত্ৰ কচিকৰ, মুখেৰ সন্থল।।

আমতার চামন্তার, ক্রবর্ণের পোতা।
সৌরতে আুমোর পেরে, কথা কর বোবা।
ক্রমধুর মিইতার, গুল কর কত ?
রসনা রসিক হন, রস পার বত।
ইজা হব ক্রতাবেরে, ছাইপেতে কাটি।
এমন্ আমতা কলে, কেন বিবে আঁটি গ
কিঞির আধী রোক, আন্তাতক রবে।

বল কবে, ভৃত্তি করে. পিন্ত, ৰফ হরে।

চালতা পেকেছে গাছে, হইবা সরস।
কপে আর গাকে করে, মোহিত মানস র
আমাদের নিকটে, আদর অতিশ্র।
পূর্বদেশী লোকে করে, বফ যোলে তব।
কাঁচা বেলা মুখপ্রিয়ে, নাহি হর তত।
পাকার আস্থান মুখ, মুখে বব কত ?
মৃতনু নোহেন্নু তড়ে, মুখ্য বে বায়।
রসের সাগবে তার, মুখ্য ভেনে বায়।

তারে তারে চোঁক গিলে, থেতে লাগে থাসা।

বসনা রসিক হব, গছে নাজে নাসা ।
টক বটে, কথা বটে, অথচ মধুর ।
স্কুলাকে শীক্তন, করে পিন্তু, কক দূর ।
কিছিৎ অন্তীৰ্ণকারী, গাকে হব ওক ।
মুখ্ছিকৰ অভি, স্বাহু কয়তক ।
চালিতাৰ অকন, বে জন নাহি থাব ।
বিক বিক বিক ভাব, বিক বুনদার )

পেকে হোনো কথবেল হুগছের ধাম ।

চিরণাকী, দ্বিকল, গছ্কল নাম ।

কাঁচা বেলা বড় কিছু, হিতকর নব ।

মধুর অছল হব, পাকার সমম ।

কতই আনোদ বাডে, করিতে ভোজন

খাস বমি হবে করে, তিনোম হরণ ।

সমলাত-তুরা কুলা, হব এই বেলে ।

বদন পবিত্র হব, ভাবে ভাবে বেলে ।

ইহার পাতাব ভব, কি লিখিব আর ?

পাতাবেভার বন, বক্ত অভিসার ১

বৃক্ষের উপরে হেরে, নানা তুল কুল। শোভাকুল হোরে মন, নাহি পার কুল। পাকালোভী পাকা থার, কাঁচা থায় কাঁচা। কুলেকে অকুল লোভ, বিচি নাই বার্ছা । প্রনের পুত্র প্রার, অভিলাব ভোগে। উদর ভ্রনে ছাড়ে, সর্বের বোগে।

রিপুর পঞ্চম বার, নারীফুলে ফুল।
সমাধরে ধার দেই, নারিফুলে ফুল ঃ
বিশেষ সময়ে পোনে, কুলের আচার।
কোন কমে নাহি থাকে, কুলের আচার।
গুণাতে বহব, বাহু, নিজের নাশক।
মধুর শীচল আরু, রুলের রুচক ঃ

কুলের মহিবা কথা, কহিবার নর।
আচারে অকচি হরে, বায়ু করে কর ।
রেখে কুল থাও কুল, খত লাখ কর।
কুলাচারে কুলাচার, ধর্ম বেন রয়।
এ কুলের কর্জা বিনি, তার নাই কুল।
অধচ বিনেন ভিনি, সকলের কুল।

অ ক্লের কথা বান, তার নাথ কুল।

অথচ দিয়েন ভিনি, সক্লের কুল ।

কুল দিরে কুল দিরে, বে ধরেনা কুল।

অক্লনাগরে কর, তারে অস্কুল।

অক্লে বে কুল দিনে, সেই বেবে কুল।

কুল কুল ভৌরে কেন, হতেছ খাকুল?

বাহার কুলার ক্লে, হতেছ খাকুল?

তার কাছে নাথি আর, একুন ও জ্ল । প্রতিকৃলে প্রীতি ভার, নহে প্রতিকৃল ।

## ১**০৮ কবিভাসংগ্ৰহ**।

নকল কুলের পতি, স্বভাব জ্বুল ।

যনে বেন অভিযান, আর নাহি রর।

কুল শীল বত কিছু, ভাহে কর লর ।

———

সকলের দার মেরা, ফল অতি বাসা।

বিশেষত শীতকালে, যবি হয় উলো ।
কোনা লানে উলো, গাক), কেঁবা লানে কচি।
পোৱাবার গাছে হয়, অকচির কচি।
সাস বিচি দুরে বাছ, খেলে পরে ছাল্।
অকেবারে পরিতোর, তুপ্ত হর গাল্।
পাকা কল পোনে গারে, তুপ্ত হর গাল্।
তুক্ত চুবে রন থার, বল গার কত।
বালকেতে বাহা পার, তাহা থার কেছে।
আগে ভাগে হাতে লার, মাতৃত্তন হেড়ে।
তানার আবল আবি, বুবংবর কাছে।
ইছা ব্র দিবানিনি, বোনে থাকে গাছে।
ব্যাব্র আইলাক অভি, চর্কারে কালে।
কোরে অতি মন্বরতি, রন চোকে গালে।

কিন্তু পার তার তার, রহনবদন। আপনার অন্তহীন, হইলে বদন। এবড় আক্ষর্যা তাব, তেবে জ্ঞান লেপে । বদন হারারে জন্তু, প্রকাশে প্রকোশ,। নগাঠ, নণাঠ হোলে, খদন আছাডে। অঙ্গহীনে অঙ্গরাগ, কত রঙ্গ বাডে। धारे वक मान (थम, मध्य वहे (बाव। পের্যারা পেরারা ছোলো, বেরারার দেশে। সে দেশের খোট্রালোক, থেতে নাহি ভানে। কি স্থাধ বিরাজ ভূমি, করিছ দে ধানে ? ছাতু ধার, চানী ধার, ভোটা ধার বারা। তোমার আদর বল, কি জানিবে তারা<sup>?</sup> বাঙালী আছেন ধারা, তাবা সেইরপ। সঙ্গ দোযে অঙ্গহীন, হোরেছে বিরূপ। স্থদেশের প্রতি ভার, স্নেহ কিছু নাই। তিনি বঙ বাবু হন, বাই বার বাই। মোহিত ছোরেছে মন, মিঠেনের জলে। আধা তেরি মেরি বাৎ, থোটাচেলে চলে। মাচ ভাত খার যারা, তারা চলে বেঁকে। কাব কি তোমার আর, সে থানেতে থেকে? এদেশে বাঙালী বাবু, ব্যবহুরে হড়। বাড়িৰে আদর অতি, দর গাঁবে বড । দেখানে তোমায় কেহ, জিজ্ঞাসা না করে ? উঠিবে স্থোপার থালে, বালাখানা ঘবে। আমরা গাঁরিব অতি, স্বোগা রূপা নাই। ফলত স্থফল ভূমি, তোমারেই চাই॥

আস্থাদন এক বুপ, সম সুধ থেতে। ভোমারে ধবিব বুকে, ছেড়াচট পেতে। নিবত হাজির আমি, আঁজিব ভলার। ইচ্ছা করে কোদে খাই, গলায় গলায় ৷ ভাঁসা থেতে ধাসা লাগে কড তার স্থা এখন পড়েছে গাত, এই বড় ছঃখ। हर्स्तापत्र स्था वह, कहित्म नः है। र । হাৰ বিধি কোথা গেল, সে কাল আমার? যে মুখে পান্তর কেটে, করিরাছি চুর। ध्यम रहेन जात, जहकात स्व । वहन दुशांव इत्र, वहन विहरन । অদনের স্থপ আব, হইবে কেমনে ? এখন পডেনি সব, সবে গ্যাছে ছটা। উপরে ররেছে সব, নীচে আছে কটা। এ দাঁতে বিশ্বাস কিছু, নাহি করি আব । ভাঙন ধরিলে গাঙে, রাবে সাধ্য কার?

কত চেৰা, কচ গেলা, গোনেমালে সারি। একেবারে হইব মা, এই খুখহত। আন বুঢ়া কালে থাব, আদ পাকা বহ। শীতল হুখাছ অভি, কল অধিকর। মুখের বৈরস্য হরে, বহুগুগর।

এ কটা বদিন আছে, ক্লেলেণেতে পারি।

নাশে ৰাষ, পিত্ত, কফঁ, বক্তন, ক্রিমি, শুল । সদবেব পীজা নাশে, হোবে জন্মুক্ল । যে করিল পেবারার এত গুণধাম। তাব লোনে, তাব পায়, কবহ প্রথম ।

তই কলা অপ্রপ, রূপের মাধুরী। বাবেলে বিবাজ কবে, বেদানা ক্রন্সবী। মক্ষণ কবেন তিনি, মক্ষণের দেশে। বনিষ্ঠাদালিম কামুপাটনাৰ এসে ৷ তিব চকে চেবে দেখি, উদ্যানেব গাছে। এমন মুবুৰ হা, আব নাকি আছে। ত পাচ ভত খাই, নাহি মিটে সাদ। বিস্কু মনে ছ'ধ এই, বিচি বাৰ বাদ। কে বলে বসিক বিধি অভি বসম। ' বসময় হোলে পবে কেন কেন হয় গ বসবোধ নাই তোব, তাই বলি ছিছি ৷ বিধাতা অমন কলে, কেন দিলি বিচি ? উদর পবিতা হয়, বার রস খেলে। থেতে খেতে তাব বিচি, দিতে হয় ফেলে। স্বভাবের অন্তরোগে, অপরুপ কাটা। চার বর্ণে বিভূষিত, চোউচিব ফাটা ঃ महे यांक त्यांव हर, त्क निवादह त्करते।

এখন অমৃত ফল, কেন বায় ফেটে? স্থাসিক লোক সব, করে অভুযান। त्नम (मार्थ मांकियात, नाहि थारक मान । দানাদাব নহে যত, খোট্টা তালকাণা। অভিযানে ফেটে তাই, দেখাতেছে দানা পুনর্বার ভাবি আর, এপ্রকার নয়। বিবাতার অবিচাব, দেখি সমুদ্য ॥ ষ্বতীর হৃদ্ধেতে, প্রোধর বযু। मानित्यत वानकान, तृष्ट काँग्रेगर । मानिनी कलनी वामा, वालनात इः १४। অভিনানে কেটে তাই, থাকে অধােমধে ! দান কবি ভাগুারেব, সকল রতন। একেষাবৈ কবিভেছে, শ্বীব পতন। ফাটিবার আব এক, আছে অভিপ্রায ইঙ্গিতে বালকগণে, কবে "আয়, আয় গ

আমার নিকটে আর, খবে শিওগণ।
নিছে কেন পান বর, প্রস্তীর জন ?
চূবিলে আমার বিচি, বুড়া খাঠে বলে।
কোষা ইন্দু, অ্বাশিদ্ধ, একবিন্দু বনে।
"আমার মধুব চন, একবার খেরে।
আর ভোৱা হবিনেকো, ক্ননীর চ্ছলে।"

उनद्द मानिम धरे, कत्रि निद्दमन !

আমাদের প্রতি কর, প্রীতি বিভরণ । সভাবে মহৎ তুমি, উপাদের ফল। সেখানে তোমার থেকে, নাহি কোন ফল । বছ বছ বাঙালিরা হত বাব ভেয়ে। গাহিবে ভোমার বৃশ, গাচুপাকা থেয়ে। 'সেইতো শেয়েতে তুমি, স্থদেশে না বও। পোস্তার বাজারে এসে, বস্তাপচা হও। অস্তরে তোমার প্রতি, অতিশয় ক্লেছ। পচা বোলে ঘুণা কোরে, নাহি থায় কেই। 'মধুবীজ, স্কল, বোচন কুচফল'। 'মণিবীন্ধ, রক্তবীন্ধ, আর বৃত্তকুল'। নিদানে লিখিত আছে, এই সব নাম। গুণভেদে নাম দিলে, বৈদ্য গুগুধাম 10 সকল রোগের পথ্য, পাকা ছোলে পর। ত্রিদেবে বিনাশ করে, হরে দাহ জর। ভক্ত, বল বৃদ্ধি করে, তারে স্থমধুর। হৃৎ, কণ্ঠ, মু**থরোগ, সব করে দুর**॥ শীতল অথচ উষ্ণ, পাত্রক লঘু হয়। কাশ, বফ, পিত্ত, বাজ, তৃষ্ণা করে ক্ষয় # अम हरत, कृष्टि करत, अधि करत शारक। দাড়িনের মহিমা জানব আর কাকে ? क्दन मध्य हाल, हिल कदा निहू।

হটলে অম্বলমধু, পিস্তাক্রে কিছু॥ পিতের জনক হয়, ছোলে পরে টক। ফলত সে ফল, বাত কফের নাশক॥ ডালিমের ক্ষেতে গেলে, সফল নখন। ভাকাৰ সে দিগে কেটা, পাকায় বখন । ইচ্ছা করে শুয়ে থাকি, গাছের তলার। কেবল আহার করি, গলায় গলায়। দিশিতেই খুসি কত, দেখি যথা তথা। পাপ মূৰে কি কহিব, 'ৰেদানার' কথা ? - সাধরে 'কাবেল' তোর, সদাই মঙ্গল। মঙ্গলের দেশে এই, জঙ্গলের ফল। दिवानात्र नानात्रन, त्नाके यात्र यात । সাধু সাধু সাধু তারে, করি নমস্বার। দেখ এব গাচ কত, হিতের কারণ। পাতা, চাল, শিক্ড, ঔষধে প্রয়োজন । গাচ দেখ, ফল দেখ, ছাল দেখ ভার। ফলভোগ করি কর, কলের বিচার। চাকো চাকো মদ লও, ফল হাতে লোৱে ৷ বলে আর বেড়াওনা, 'ফলচাকা' হোষে। **उरवर्ड मक्त मद, यनि इद्र क्त**। करनहे कवाहे कन, ना हद विकृत । যদি বল বে গাচেতে, ফল ফলিয়াছে।

দেৰিতে না পাই গাচ, কত দূবে আছে ই তি কল বিফল ভাই, গিবে তার কাছে <sup>2</sup> কল বোরে কল পাবে, কল নাই গাছে ৪

অনেক ডেনে ভোবে বসময় আতা। বিশেষ বিরশে বুসি, গোড়েছেন ধাতা। স্কাৰ শ্যামৰ বৰ্ণে, স্থামেডিত পাতা। মনোহর কলেবর অতি সুখদাআর। ছদবে ধোরেছে ভোক্তে বস্থমতী মাতা। প্রণাম কবিছ তাঁরে, কোরে ট্রেই মাতা ! ∡থাপ থোপ টৌপ গাঁখা, সকল শরীবে। কেমকেব ছাতা যেন, প্রাক্ততির শীবে। থাকেনা রবৈর লেশ, নব অন্তরাগে ১ ফুটিফাটা হোয়ে যাও, পাকিবার আগে 🛭 তথন বিচিত্র থক, রূপ বার ছেখা। नीवन (चारबरक दवन, शावरमब दाथा » যার বাডী বাদ কর, সিদ্ধ তার ভিটে। ত্রিকগতে কিছু নাঁই, ভোর মত মিটে। কোথার পায়দ ক্ষীর, কোথা গুড়পিটে ? ट्यांटी ट्यांटी कृषि **ट्रिन, मूर्थ मिरव हिर्छ ।** यक शारे कक जात्या, मान माहि मिट्डे। বিচিভরা সমুদর, কত পাব সিটে?

মনে মনে অভিশব্ত, থেদ আছে ভাই। পাৰির দৌরান্ত্রে নাহি, গাচপাকা পাই। এমন ৰজাৎ চোর, আর নাকি আছে। উত্তে এসে, ছুড়ে বসে, সমুদ্ধ গাছে। कितियिति छाक हाएक, विषय विक्रे । ভোক পুরে কোথা আছে, তাদেব নিকট ? গাচেতে পাকিলে ভূমি, মান্তুরে না পায়। বোগেলাগে ক্লাগ দিয়া, তোমায় পাকায়। বেরপেতে পাক ভূমি, ক্ষতি তাহে নাই। আশাব সময়ে তোরে, থেতে যেন পাই। বাহ, পিত উভরে, ভোমাতে হয় হত। কিঞ্ছিৎ বিরাগ করে, কোফোখেতো যত # দেখিলে ভোমার মুধ, লোভ অভি রাছে। বিকার স্বীকার তবু, তোমায় না ছাড়ে। গ বনের প্রবশ্তা, আমাদের খেতে ৷ কোনক্সপে ভয় নাই, কত ভথ থেতে **।** শিশিরে ছোকলা ভূমি, অভি স্থমধুর। মুখে গিরে অক্টির, ক্রটি করে দুর 🛭

এসেছে কাবেল হোতে, সুধার আঙুর। নানস দোহিত হেরে, রূপের ভাঙুর । সমাদরে রাধে ভারে, কৌটার ভিতর।

তুশাব ভোবক'গদী, করে ধর ধব। তথাচ গলিবা বার, **এমন কোমল**। ক্রচিব বল্পড রূপ, করে বালমল । বহুমূল্য কল এই, ডুল্য যার নেই। সাধ পূবে, স্থাদ লয়, ভাগ্যধ্ব বেই 🛭 शरित कारन का नाम, मृत्त शाक् मूछे । দাম ওনে রাম বোলে, উঠে দে⇒ছুট ঃ বধুর অধরে এত, মধুব কি আছে? \*\* স্থৰদেৰ উপদেৰ, হবে এৰ কাছে ? মৃতকে অমৃত করে, অমৃতের কোষ। त्रमृत्य छणमञ्, किছू नाहे (नाह ! বোণ ভেদে পথ্য নয়, ভূবিব স্থীকার। দেহ যাব স্থস্থ ভার, স্তথের আহাব 🕏 'গালে দিয়ে ছির ছোরে. যে গঁইবে ভাব। সে জন জানিবে ওধু, কত গুণ তার ॥ শ্ববিৰে বিভূর গুণ, মন কবি স্থিব। গলিবে প্রেমের বলে, টলিবে শরীর n

স্থেৰ স্কল পেজা, বিচি ৰাই বাছা। কুট কুট ,ৰাতে কেটে, থেলে কেল কাঁচা । ভাৰিলে স্কাৰ আৰো, দৌলা গীল ছোটে। ভোৰদেৰ কালে মূলে, কভ সুথ থঠে । ুপুতার মেঠাই অভি, উপানের ছয় ।
আত্মানের কাব সন, আব বিছু নব ॥
পানে কুর, গুণেতে গ্রহম অভিনব।
বন, বীরা বৃদ্ধি হনে, শিশু কবে করি ৪
আব আব বত মেরা পোকছে এ শীতে।
সকণেবি অন্নগাত আমানের হিতে।
বত তাব ছুখ ভেগ্ন বে মারে আহাব।
প্রপ্রেম বিক্লেতার, কত উপভার ৪
করেন করনের ব্যক্তের হতেছে ভূপব।
বিশ্বের বাবিন্দ্রাতে, মানের সকশ।

ভাত্রত কল চাক, মুখ্য প্রথ ভাষ নারি বারি বাভাবের, ক্ষে বারি গাণ ৫ এক পত্রে কত শুণ, পত্রে শেখা ভার সেই লালে, বে পোবেছে, ভাষাকেব ভার। কতালৈ পত্র ভারি ভাতৃ করিরা। কত কত নহীপাল উলীর নবাব। ভাষাকে লাম্যর করে, ফোলিরা ভাষাব ৪ প্রশ্ব ক্রিলা উভারে, বিশ্বারে বার্টী। পুছির প্রদীপে ইনি, উছিবার ভাটি। ক্রম্ব করিশে ইনি, উছিবার ভাটি। মধুর অধরে ধরে, চুরুট করিয়া। ধুমুপান আস্থাদন, বে জন না পান। বদন সদনে দেন, যুক্ত করি পান ঃ সর্ব্ধ শাল্পে স্থপতিত, অধ্যাপক যারা। সদাকাল দঙ্গী করি, সঙ্গে লন্ জাঁরা 🛭 না লইলে সর্কনাশ, নাম তার 'নাশ'। বিচারের স্থানে হর, বৃদ্ধিভদ্ধি নাশ্,ঃ পশ্চিতেরা আছে ওছ, নসা খণে বেঁচে। ना क निया ब्राप्थ थान, रंग्रह्र गाह् (रंह ॥ বিশেষত ধনীবোকে, সার গুণ জানে। পেঁচাও কৌশল আসে, পেঁচোরার টানে । আল বোলা বোল বোলা, ইছি খুব পাষা। শীতকালে বন্ধ তার, তাত্রকুট ভারা<u>,।</u> মোটাবৃদ্ধি মোটা টান, ছঃধী সৰ হাবা। আমাদের ক্রাণকর্তা, থেলো আর ডাবা । এ পীতে শীতল হোরে, খনের অভাবে। কডা টেনে কড়া ছই, কড়ার হিসাবে। শিশিরে তামাক টান্, বে জন না লয়। ভাবি তার কিরপেতে, দিনপাত হয় ৷ ক্ষণমাত্র যুক্ত নহে, ধূদ্র আর জলে। বদ্ধির জাঁহাজ তার, কিরপেতে চলে ? নাশে নাশে পিন্ত, কফ, বায়ু রাংখ স্থিব।

ধূদ্র পানে স্থা হন, সকল স্থাব ঃ মুথ বোগ হবে, কবে, দাঁতের কুশল। महर्रवाश रवानी नव, "हक्टि" नकन । দিবানিৰি "পিকা (১)" খায়, আলিয়া অনৰে দাতপক্ষা বাছা নাই, উদ্ভের মহলে। যত সৰ নারীনৰ, ছোজনা খার পানে। দন্ত কুখ, মুখ কুখ, ভাষা ভাল কানে । বদে ভিক্ত, ক্রিমি, কাশ, রোগের নাশক। সতত্ই কৃচিকৰ, অধির দীপক। গুড়কের তুণ মূখে, ব্যাখ্যা নাছি হয়। শোকহর, প্রেমকর, প্রিয় অভিশয় । পুলকে পুরিত করে, কবির হাদর। টানিতে-টানিতে ভাবে, ভাবের উদয় 🛭 खाद इ**ब अञ्**कृत वहन बहर्स । यक द्वामि होनाहानि, नाहि इत्र शत 8 বল কবে, বৃদ্ধি করে, করে পরিপাক। কেমনে ভূলিৰ মামি, এমন ভাষাক? বে,করে লেথক্ ছোরে, ভাবের প্রয়াস। মন বুলে হোক সেই, ওচুকের দাস ঃ क्ष, कामका श्रा, क्ष-क्रा मूच। কোনরপে হঃধ নাই, সব দিকে স্থপ ।

(১) উড়ে তাবার চুক্ট।

গীত, বাদা, নৃত্য বাবা, করে আনোচন।
তামাক তাকের পক্ষে প্রমারতন ঃ
এ তামাকে বে করিল এত গুণুমর।
তাব প্রেমান আরু, প্রাণ কর লব ঃ

বলনী ব্যেত্ত দ্বাকৈ, ভোগের ভাবনে।
অভবে কামিব থাও, হরবিত ননে।
কর নান বাও নান, উবব ভবিষঃ।
বত পাব থাও নান, ইবব ভবিষঃ।
বত পাব থাও নান, কবলে আছার।
অনন হ্রেছে কণ, ভাবনা ভি আর ?
নিশিতে নিজার আরে, কে ববে ঝাখাত।
মূবে চোহু পতে ভবু, না হয় প্রভাত ॥
প্রাতে উঠে সুব্যে কিবে প্রশে বর।
তথান হবৈত হব, ভ্বাব ভাতর ॥
বান, ভাচ, ভিম থাও, চুচি বাব বাতে।
স্বাদ্য কুবিক্তব্যুক্ত বিশ্ব বাতে।
স্বাদ্য কুবিক্তব্যুক্ত বিশ্ব বাতে।
স্বাদ্য কুবিক্তব্যুক্ত বিশ্ব বাতে।

এই শীতে "হণস্বীদ্ধ" অভি মনোহৰ। পাকৈ গলু, বাতহৰ, বল, বীৰ্লাকর। কুপেতে মোহিত করে, মহিমা অসীম । সর্বাদ্যে নাশ করে, এ ইাসের ভিম।

সিছ ৰাও, ভাজা থাও, সং বিকে হিত।
ব্যক্তন করিবা থাও- আলুর নহিত ১
অতিশহ কচিকর, এ বীজের "ধন"।
গোটাকত, খেতে হোঁগে, নিতে হর দম।
মুগর বে নাহি খার, এ হাঁগের ভিন।
মূলক পে, চিককাল, খেরে তেডো নিম ৫
বুগার কুননা তার, মুখা ভার মুখ।
কোনকালে নাহি গার, আহারের হুখ।

ভিমভরা কাঁকড়া, এ নিনিব সমর।
আহারেতে উপাদের, অভি প্রথমব ।
সে ভিমের অব আমি, কি কর বসনে ?
মোহিত হরেছে মন, লোহিত ববণে ।
ভিম বাও, সান বাও, খোনা কেও কেশে।
কন কবে, বারু হবে, পিত হবে খেলে।
বিশেষ হয়েছে ৩৭, কাঁকড়ার মাসে।
হাডেতে ভামিলে দোর, সেই দোর নালে।
বেরূপে রাখিনা বাও, উপবার হয়।
আনার্ব নহ ভার, আবিক প্রমন্ন ।
স্বাধিন বার ভাল সেই, খেলে গ্রাহ বন।
মুক্টেড়ার আর ভাল সেই, খেলে গ্রাহ বন।
মুক্টেড়ার বার ভাল সেই, খেলে গ্রাহ বন।
মুক্টেড়ার বার ভাল সেই, বছে গ্রাহ বন।
মুক্টেড়ারিবে কি সে, কর্কটের রস্ব হ

ফলের ভিতরে মাচ,.কত রসভরা। नाष्ट्रि, श्रीत, कंत्रावादी, कामारवाद्या नदा । শিবে অসি কাঁটাহীন, গন্ধ নাঁই গায়। আগা গোড়া মধুমাবা, মধু তার পায়। বিশেষত শীতকালে, অমৃতের ধনি। আনিষের স্ভাপতি, মীন-শিরোমণি,। গলদা চিঙ্জি মাচ, নাম যার 'মোচা'। পতেছৈ চরণতলে, এলাইয়া কোঁচা। 'कानित्य, (शानांख' वै[स्था, वाँस्था नांडे मिशा। ভাতে ধাৰ, ভেল্পে ধাৰ, হবে মুৰপ্ৰিয়া। ভিতরে থাকিলে ডিম, কি কহিব আর ? ত্রিভুবনে নাই হেন, সুধার আহার i শ্বভাবে রোচক হোমে, বল বৃদ্ধি কবে। স্থাদে সুধা, পাকে গুরু মেদ. পিত হরে গ দীনের ভারণকারী, চিঙুড়ির সুযো। সমধুৰ, বাতহর, প্রসার ছশো 🕯 মুলক, বেশ্বৰ, শাক, খাতে ভাতে লছ। সমভাবে সদালাপ, সকলের সহ। আখ্য পুঁরের ডঁ.টো, ভারে নিরা তাবে। বারন মভাতে আৰু, এমন কে পারে ?

তথাণৈ চে বীল, বিল, খানা, সংবাৰৰ বাজাৰে বিক্ৰম কৰ, চুনা বছতৰ ল টেছৰা, মৌৰলা, শুটি, বেলে আৰু টালা পুৰাল অভৃতি কত, বাতা, কালো, আলা। এচ শীতে তাৰা আতি, উপকাৰী হব। এচপীৰোপের পথ্য, নাশে লোকতে ল আচৰকা, গখুণাহা, ক্টিকর আৰু । বা, তক্র পতে, বংল, বাতেৰ সংহাৰ। কে লানে অক্ল, বোল, বেৰা লানে ভাছা

নীনব'ছ শোহিত, অহিতকৰ নহ।
সমত'ৰে সহালগ, সকল সম্ম।
বিশেষ বেচেছে গুল, শীতকাল পেয়ে।
চংগছে সে অতি মিতে মিঠে জন থেছে।
কালো, দুপল আহি বত মাচ বত।
কালে উপদতলে, সবাট প্রগত।
কতলা অগোহৰ ভৌজনেৰ বেলা।
তেল, কাঁটা আদি করি, মাহি লাব কেলা ছ
বান্তেম কত তথা, বুলটার কোলে।
সনা শেখৰ পাব, আ মাচেৰ কোণে।
প্ৰণাবের বালা নাচ, না চর এমন।

স্থধাক আথাক এই, বরের ব্যঞ্জন ।
বল দেব, বৃদ্ধি দেব, বাক নাপ করে।
নবনের জ্যোতি বাজে, মৃত্যা থেলে পবে।
চকুরোগা বারা তাবা, গুপ জানে ভালো।
দুডা থেকে সুকে দেবে, জককারে আলো।
বাব জ্বাপনে ক্লুই, নানাবের সার।
সাধু সাধু সাধু সেই, নানাবের সার।

নাউ আনু বেওণ, বাজারে দেবে উটি।

নই, কই ? কই, কই ? করিছে সবাই ।

কেহ বিদি বহে ওই, আনিবাছে, বই ।

দেখিতে দেখিতে দেব, বরে কই কট ।

বেহ কর, কাঁটামর, সাস তাতে বই।

এট হেতু এই কই, নাম পেলে কই ?

আমি কই এর সম, জিলপতে বই।

কই নামে নাম বিষা, কাই হুও কই ?

হত বাব কেট তত্তে, স্থাধ লাভ কই ।

এমন মধুর মাচ, নাহি হুও আব।

বেণলী ভোগী, উত্বের সম উপকার ।

ব্ববেৰ কত স্থাৰ, ব্ৰতীর কোলে? বতবা অনুত আছে, বালকের বোলে? বত বা আনোল হব, পূর্বিনার লোলে সকল আনোল এই, নাজবের কোলে বালু নালা ববে হবে, আর্ল অভিসার। অথচ করেনা বক, দিত্তের সক্ষাব। নাভবের ভোট ভাই, লিভি নাম যার হিঁত্রে নিকটে নাই, সমাবর ভাব। কলে হব ভিগমর, ইহার সমান। ববনে মভিমার, ইহার সমান।

ভেটকী, ভাঙন, বাটা, পাৰিস্বে বাঁক। আনগেট অটি ককি, মাটের কি জাক! বাঁজাবে বাজাবে দেখ, সবার আনর। সকলেই কিনিতেছে, দিয়া ছুনা দ্ব । কেনেই কিনিতেছে, দিয়া ছুনা দ্ব । কোনা গাঙে জন্ম লোদে, এ সকল মীন। হইতেছে আমাদেব, পেটের অধীন। সকলে সুখাল্য হয়, অতি উপকারী। পুথকের গুলে আমি, রাই বালহারী। শীতকালে সুখী সেই, কড়ি আছে যারা। ধনের বোগেতে হয়, ভোগের আহার।

ভবন বাঁহার ভবা, ধাানে আব ধনে। অনাবাদে কিনে খাব, বাহা লব মনে।

পাডাগীযে পদাভীবে, যাবা বরে বাস। ভালৰপে খাষ তাৰা, এই ক্য মাস । উঠিবাছে নেটোবেলে, বেলে গুড়াগুডি। এক আনা পণে পাই, মাচ এক ঝডি। বেশ্বণেতে মজে ভাল, চভ চচি তার। ভলিতে কি পাৱে কভ, যে পেয়েছে তাৰ ? ১লাদর **স্থালে গুলে, এক** কৌটা ঝাল। 🤋 বিছ চডি কব, কাটে বিনা ঘাল। এমন মধুব আব, পাবেলা পাবেনা। তেন ক্লথদেবা আবি, থাবেনা থাবেলা । নগবেব ধনীলোক, থেতে ন'ছি পান। উত্তবে মিঠেন জলে, বস্তিব স্থ'ন ॥ ভাগ্যধৰ দুবে থাক, সে দেশেৰ দীন। এ শীতে আহাবে ছঃধী, নহে কোন দিন। ডাঞ্চা ডাঞা ভবকাবি, ভাছে নেটোবেলে। অমতের স্থাদ পেযে, পেটে দেয় ফেলে। মিছে মরি গুণ লিখে, খেতে নাহি পাই। ইচ্ছা কবে এখনি, নগব ছেডে বাই। সে দেশে আমার বাস<sub>ং</sub> যে দেশে এ মাচ।

## কবিতাসংগ্ৰহ।

242

মেচনীর কাছে গিবা, কিনি বাছে বাছ ।
বুকে কোরে নিবে আগি, নিজে বাঁবি ভাই ।
সাধ প্রে এক দিন, পেট্, ভোরে বাই ।
মনে ননে আগা ভাই, এই বেলা বেচে ।
শীতকালে গেলে আগ, পাবনাক বেতে ।
আহারের কানে হয়, অভিসক্ষ ভোব ।
প্রতি প্রায়ে সুছা বাই, কিছু নাই দেশি ।

নরন জুড়াব দেখে, অতি প্রেমকর ।
"ব্যবাব" পেট বেন, মহ্বাব ঘব ।
অভ্রেব ডেলে তার, তাব বার মেতে।
ভাজা ডাজা ধর ভাজা, মলা বড থেতে।

মানবের উপাদের, আহার কাবণ। জলে করিলেন বিজু, মীনের স্কন র সব দ্বিকে উপকারী, এই জনচর। আহার, ঔবধ, মীন, পথ্য ভতকব। সনিল-শাধির এই, কন স্থামন। দেবের ছর্ম্মত ধন, একন কি হর ? বে দেশেতে যে গুকার, ধারা হয় বিধি। সে দেশে গুকুর কাই, দিয়াহেন বিধি। ভাত, মাচ, পেরে বাঁচে, বাঙাদী সকন। ধানতবা ভূমি তাই, মাচতবা জল।

এ পেশের থায় এই, যদি নাহি হবে।
এত ধান, এত মাচ, কেন বল তবে ?
বে কবিচে শদ্য আব, মাচ বিতরণ।
১০জ্ঞতা-বদে তাব, ভবে রও মন।

দৃশ, নেৰ, চাগ, স্থূৰ্ণ, পাৰী জনচন্ত ।
কৰ মান, কৰ মান, অতি পিৰব ।
বাংদেৰ বিদেব গুল, নিগানে প্ৰকাশে ।
বন কংক, কতি কৰে, বক হবে মানে ॥
ক্রমী আবে অমি বনি, এই চুকনার ।
ক্রমী (১) ভোজনে হয়, কত উপদার ।
ক্রমী, এইবংটি, অন্, আর ব্যাকাশ্য

<sup>(</sup>১) ৹ তরৰ – মাণৰ।

<sup>(&</sup>gt;) এবন -হিলেক শন্তী ওপন। হিন্ত নগৰ বাহুল বান্ধ-নাগ হিচকৰ নহে, পদিব নহয় চীন, হিনেক, কোন, বাল, কাক ওপাত প্রকৃতি অংকটা পদী অভার মণ। তাবাহিদেয়ে নাগ আভিলয় আনিষ্ঠিকর। এবং পত্রৰ মধ্যে বানদ, ছিল্লাল, শুগার ও কুছুমানির মানে বিধেব নহে, কাংশ আংশা এবং বালিক।

সকল প্রদহ দুগ, ভাল কিছু নয়। ত'ই থাবে গুভ আব, প্রেম ধাহে হয়।

ছাগল ভৌজনে হব, পাগল দ্বাই। বাব চেৰে প্ৰেম্বৰ, বস্তুবর নাই। অভিশ্ব সুশীতন, পাকে হয় ভাব। নহে বাহু, পিঞ্জ, কফ, দোবেঁব আধাৰ।

মেৰমাস ভাব ৰটে, শীতল মধুৰ।
আগাৰে আইলাদ বাডে, গু:ৰ হব দুৰ।
তক্ৰ মেৰেৰ অতি, মনোচৰ বীন (১)।
তাৰ কাছে কোণা আছে, চিনিমাৰা জীব গ

বনচৰ, বনচৰ, পাৰী আছে বত। হবিষ্যাল, চৰা, ডাক, আদি শত শত। এসৰ আহাবে হয়, দেখেব রশা। ক্ষীণতা বিনাশ ৰবে, বৃদ্ধি কৰে বল।

কত মতে শুভ হয়, কছপের মাসে। বল, নেধা, শ্বতিকব, শোগ-দোষ নাশে। সহজে কোমল অতি, নানা গুণধর। ব্যাত্তব্য, শুক্তকর, নেত্র-হিতকর।

—— শিশিবে মুগের মাস, প্রিয় অভিশ্র।

াশ শবে মুগের মাস, প্রের আভশব। বাত হবে, অগ্রি কবে, পাকে লঘু হয় ॥

সল্লিপাত হবে, ক্বে, শ্বীব স্বল । ছয় বনে অভুক্ল, মধুর শীতল ।

কদ, পিণ্ড হবে, কবে, ত্রিদোব খণ্ডন। আচা মরি কত খণ্ড, ধবে স্প্রেচিন (১)

ष्मानं मात्र के छण, धर्म श्रुतानम् (१)। देननाम निवाद (चारक, हाद्य श्रुहेमन ।

হরিণ (২) কবেন স্থবে, হবিণ ভোজন ॥ অভিশয় প্রিয় ভেবে, এই কৃঞ্চভায় (৩)।

কতবার লগেছেন, ক্লণ্ড তার তাব।

মুগধার ছলে বধি, কাননে হরিণ।
আনন্দে দিলেন তাই, উদবে হরিণ ( ৪ ) ।
এ হবিণ বাসি হোলে, যক্ষ নাহি লাগে।

বিচালির সহ জলে, সিদ্ধ কব আগে।

(১) হলোচন – হরিণ। (২) হরিণ – শিব।

[২ ] হারণ⊸াশৰ । (৩ ] কফতাব≛হবিণ ।

[৪] হরিণ−বিহু।

পরে সেই কম আব, বত গুলি (ফলে ।
তালকোরে তেকে লগু, সবিবাব তেলে ছু
কেটে আর পচাপক, দূব হবে তাব।
বীতিষত রাখে শেষ, দুত মসনাব ।
পচা নামে পুঁট-বাজা, তুখার সমান ।
দেইকন স্থাব বাব, বে ভানে সভান এ
তাননের নিকটেতে, বাস কবে বাব।
তাজা তাজা সুগমাস, দেহে পাব তাব। ॥
পচা ধেবে গুল সভাসতা।
পচা ধেবে গুল জাব, বহা বাবে কত ?

নাংস ভোগ বাঞ্চলোগ, ভোগেব প্রধান।
আহামেতে নাহি কিছু, ইহার সমান।
বলকর, বৃদ্ধিকর, সর্বান্তপ্রব।
স্কাব প্রাক্তর, সদা প্রথকর।
বে মাদে মাহার কচি, তাই খাও স্থাব।
কোন কাদে নিজা কপা, এনোনাকো সুবে।
ছাগ, মেব, দুগ, শুলী, খাবে প্রেম কবে।
আহারের পাঠ বেন, না উঠে উপরে ৪
তাহাতে বে সব দোর, জানেন অমীব।
সাবধান-পথে চন, সকন নবীন।
ভীবন হতেছে বজা, বার চন্ধ ধ্রেয়।

কল্যাণকারিণী সেই, স্থননীর চেরে 🛭 শাল্পে বাহা মানা কবে, যুদ্ধি তাৰ নানা। বিচাব কবিলে যাব, সহজেই জানা ঃ নিতা বারা মাংস খাব, হবে প্রেমাধীন। ৰশীতাৰা, জ্ঞানীতাৰা, সদাই স্বাধীন 🛭 যে নর না মাংল থাব, পেরে কলেব**ব**। বুরার শরীর তাব, বুথার উদর । ष्माभिष-भाषावीत्रात, त्कान प्रथ नाहे। মাংসভোজী পত্ত-পাখী, সৰল সবাই 🛭 ইউয়োপ আদি কবি, ব্রহ্ম আব চীন। মাংগবলে বাছবলে, সদাই স্বাধীন ঃ ভাৰতে ধ্বন ছিল, ব্যবহার কীব। বোদা ছিল যোদা ছিল, সবে ছিল বীব 🛭 ধন, মান, যশ, ভাগ্য, স্থাধীনতা, সূথ : नमूत्र हिन, गाँदि, हिन, द्कान इव ॥ ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শৃক্স, চতুষ্ট্র । हिल्म आमियलाखी, हिन्दू मधुन्त । প্রচুর প্রমাণ ভার, নানা গ্রাছে আছে। সৰ্বই প্ৰিয় ছিল, মানে আৰু মাচে 🏽 মাংদ, মাচ, হিতক্ব, ব্দ্যুপি না হবে। বৈদ্যশাস্থে এত গুণ, কেন লেখে ডবে ? সৰ দেশে সৰ শাস্ত্ৰে, ভেষক নিপুণ।

লিখেছে বিশেষ কোরে, আমিষের গুণ আমিৰ ভোজনে যদি, নাহটত শিব। বিজাবিষা গুণ কেন, লিখিবেন শিব ০ যে মানব দুগা কবে, আমিষ আহাবে পণ্ড ৰোলে সম্বোধন, কবেছেন ভাবে জীবের কারণে হলো, জীব বছতব। খাদা আবে থাদক সম্ভ্ৰূপবস্পৰ ৷ প্রকৃতিব শান্ত দেখ, শান্ত বটে এই। যুক্তিৰ বিচাবে কোন, ব্যতিক্ৰম নেই ঈশবের অভিপ্রায়, মাংস্থারে নর। স্থানৰ কৌশল ভাই, মুখেব ভিতর ॥ বদনে অদন স্থা বদনে প্রকাশে। "পশুরাজ-দত্ত" সম, দত্ত ছই পালে॥ প্রমান প্রভাক দেখে, ভ্রাস্ত তবু জীব। হার হাব! নাহি বুঝে, নিজ'নিজ শি' এ মতের বিপবীত, কথা যাবা কয়। তাদের সে নীচ উল্লে. গ্রহণীয় নয়। সে যে মত, মত নছে, মল অভিশয়। কে বলে অক্ষৰ-মত, কে বলে অক্ষৰ ? প্রণিধান কর সবে, গুণের বিচারে। সে মত অক্ষয় হোলে, ক্ষয় বলি কারে গু অক্ষ্য, অক্ষয় মৃত, ভেবে এমে রয়।

কর হাতে কব পাব, সে নৰ সক্ষ আমিষ অৰিধি বোলে, যে করেছে গোল। সে এখন দিত্য খাব, শামুকেৰ ঝোল। নোদে, শাস্তিপুৰ ফিবে. ফিবিৰা হগলি ঃ শেষ কৰিয়াছে যত, দেশেৰ গুগলি 🎚 নিবামিষ আভাবেতে, ঠেকেছেন শিথে। গুবিতেছে মাপাম্ও, মাণামুও লিখে। কোথা তাৰ 'ৰাহ;ৰয়ত' মানৰ-প্ৰকৃতি। এখন ্বটেছে তাই, বিষম বিজতি। উদ্বেৰ বোগে আৰু অৰ্শে পাৰ চুখ। দিবা নিশি যাথা যোৱে. সদা<sup>ট</sup> অস্থুখ ॥ মত চালাশৰ তাব, নিখিলেন বই। এখন সে শিখিবাৰ, শক্তি ভাঁব বই ? কলম ধৰিলে হাতে, মাধা বায় ঘূৰে। **र**চনাৰ কালে আবে, কথা নাহি **ভ**ুবে ॥ মাস, মাচ বিনা ভাগে, ছিলনা ভাষার। কিছু দিন কবিলেন, বিপ্ৰী ক্ত আৰু । শেষেতে পেলেন তাব, সমূচিত কল। ভাসালেন বল বৃদ্ধি, হাসালেন দল । সমাজ হাসিছে ভাব, ভাব এঁচে এঁচে । দৰে ভূলে পাকা ঘুঁ টি, ব'সলেন কেচে। দাবে পোডে পূৰ্বভাৰ ধৰিলেন পিছু।

## কবিতাসংগ্ৰহ।

১৬৬

ভধু মাচ, মাদ নয়, আবো আছে কিছু॥ সমূদৰ দুটে লেখা, নাহয় বিহিত। মসলা চলেছে কত, পানেব সহিত। ছেডে দেও ছেলে থেলা, ফেলে দেও"কুম ( > )"! মাস, মাচ, ভাত থেঁবে, স্থাথ দেও ঘুম। কবোনাকো ধুম্ধাম্, টুম্টাম আব। ভিডে কেল "বাহাবন্ত" সে মত অসাব । মাথিতেছ "বিকাঠেল" তাই মাথ থার। আব বেন ভেবে ভেবে, নাহি ঘটে দাব। পাৰতেল মাৰ আৰু নিতা বৰ সান। সেরপ আহাব কব, বাহর বিধান। বোট কোটি গ্রন্থকার, বিধিছেন বাহা। "কুম" ধােৰে একা কেন, কাটো তুমি তাহা ? मत्म कर यह निम, शृष्टिय तरश्म । उठ दिन चार्ड **এই.** मरत्व चारतम् ॥

<sup>(</sup>১) কৰি, বিজে ঈৰ্যা বিশিষা বিশাজন, বন নামক একজন এগৰাবেৰ মতে বাৰ্ ক্ষকত্ত্মাৰ দত "বাচ বন্ধৰ সহিত নামৰ অব্যাহৰ সৰুৰ বিচাৰ" নামক যে এক এই বছনা কৰেন, ভাষাৰ কোকালো কতিপথ চিবি সোনা বিজ্ঞান কৰাৰ বিশিষ্ট কৰিব নাতি প্ৰায় কৰিব কৰাৰ বিশিষ্ট বিশেষৰ এই বছল বিশাল কৰেন এই বাব ভাষাৰ ভোগ বিশেষৰ কৰাই জুলিয়েছেৰ।" মৃত্যাৰু অকীৰ-বাব দত বাবিৰ একজন প্ৰিয় ছাত্ৰ ছিলোৰ।

দ্ৰব্যেৰ যে তুপ হয়, সব যায় জানা। যাহে যাব কৃচি কেন, তুমি কৰ মানা ? দেশ, দেহ, বোগ ভেদে, থাদ্যেব বিধান ৷ কেমনে করিবে তুমি, বিরূপ প্রমাণ ? গুরু হোয়ে উপদেশে, কবিয়াছ সোঁডো 🕈 মিছা মতে আনিয়াছ, গোটা কত ছোঁড়া ॥ ভোমার হইবা চেলা, ওরু বারা বলে। তাবা যেন এই মতে, আৰ নাহি চলে 1 ওহে ভাই যদি চাও, নিজ উপকাৰ। অক্ষরে মতে তবে চলোনাকো আবে ॥ শেষে ভূমি চেলা হও, মন করি ক্যা। আগে গিয়ে দেখে এসো, গুক্জিব দশা। সেই গুঁক গুৰু হয়, গুৰু বোধ যার। শুকু নিজে লঘু হোলে, কিলে হবে ভার ? "রাজসিক'' এই ভোগ, দিয়াছেন যিনি। নানাক্রপে জ্ঞানম্য, দ্যাময় তিনি 🏾 ইথে ধৰি না হইবে, মঙ্গল তোমার। জানী লোকে ক্রিডনা, বিধান প্রচাব ঃ विनि नर्कानिवनव, नर्कमृताबात । ভোগ পেয়ে কব তাঁর, মহিমা প্রচার 🖁

কোন দিকে নাহি দেখি, কিছুব অভাৰ ।
সমূহৰ সম্পাহন কমিছে প্ৰভাৱ ।
সৰ্কবিবালে ভবৰৰ, দীন হয়মৰ।
সমভাবে আমানেং, আছেন সুগৰ ।
বিবাৰ এ দীতকালে, দবা নেৰ উবে ।
কবিনেন বংগীতে, দবো কাতাব ।
বংগ, মুন, শন্য কত, আমানেংব দেশে।
আহালনে বংসবী, হইবে বসনা।
মন গুলে কব উাব, মহিমা খোবগা।
এবংব শীহ্ব উবি, মুহেমা খোবগা।
ভাব ডাং উচ্চে খনে, এবংবালা ।
কতাভতা বংলা বাদ্যান, এবংবালা ।
কতাভতা বংলা বাদ্যান, এবংবালা ।
কতাভতা বংলা বাদ্যান, এবংবালা (বাদ্যান)

## পৌষপার্বণ।

প্লাগিণী আড়ানাবাহার,—তাল আড়বেষ্টা। এবারে বছবফার দিন, কণাণে ভাই, জুট্লোনাবে।, পূলি পিটে। যে মালির বাছার, হাজার হাজাব,

যে মাগ্যির বাজাব, হাজার হাজ। মোর্ব্রেছে লোক, কপাল পিটে॥ ভাত না পেবে উদর ভোরে, কত হংখী পেল মোবে,

· চেলের বাজার শহা কোরে, দেয় না রাজা চেড়া পিটে।

ৰবে হ'াতি ঠণ্ঠনান্তি, মশা মাচি ভনভনাতি,

१८९ २ ॥७ ४७मा स्तु, भना भाठ उन्हेमार भीटि मंद्रीद कनकर्नास्ट,

একটু কাপুড নাইকে। পিটে।

লাবা, পুত্র হন্তনাতি, অভি, নাতি, নজানতি, লিবে বালি খেলে চাতি.

াণবে রাজে বেতে চাজি, আমি বাটো মবি থেটে।

আমি ব্যাটা মরি থেটে। আদ পেটা ভাত কদিন্ থাবো, ছদিবৈই তো মোরে বাবো,

আদ পেচা ভাত কাদন্ খাবো, ছাদৰৈই তো যোৱে বাং পেটের জালাব জোলে ৰূবি,

বেচ্তে ছোলো কোটা ভিটে 🛊

ভিটে গেলে বথা তথা, 'বল মা ভাবা ক্ষয়াই কেংধা '

রামপ্রসাদী গীত গেবে শেব, কান্দে হবে বেয়েদ ঘাটে ॥

বাংক গৈলো, "আছে" থাওয়া 'চেলের পানে নাব না চাওয়া,

তিল্ নারকেল, তেলেব লাওয়া, টাকায় ছ্থান নাগৰী চিটে।

গিলী মাণীর বদন্বীকা, কাতে মাত হুগাচ্শাকা, সমুখে না পেলে টাকা,

কপাঁন ভাঙে আন্ত ইটে। ১৫ ব কু হাতে গিরে খবে, কাছেতে ইাড়ালে পবে,
'ভাাক্যা বৃতেটা নাম্কুলা করিন্''
বোলে দেবে বাংবা পিটে ॥
পোব্ পাৰ্কীৰ পোলা শালা, হোবোনাবোৰা বাঁউনি বীলা,
খবে বোলে বিহেড কালা.

মোনেই যাবে স্বল মিটে।
বাব কাছে বাই মাগা বেঁতে, হুটো প্রসা নাহি জ্বেচে,
পাবে পোল ভান ভো পোচে.

नारव राना चान एका राना क, वाक़ी वाकी हर्द हिं हर्द हैं। कारकृष्ट्रेय कर्दर, हान् दकोंगे नार्ट कारता घरन, तानिव भारक तिकि करन.

টে বিব পাছে টেকি হবে. • নরে কেবল্মাথা কুটে।

নেৰে গুণো বেবৈ বৌপা, তবু মূখে বঁরে চোণা, পুৰুষ্ গুলো তাদের বাছে, পাবেনাবেশ কথান এটে !

বারাঘবে কারাহাটি, তথাচ না বাক্যে অ'টি,

अटकवारव कारणम् माछि, वेंगिस्व मिटल कथाव (ठारछ ।

ভিক্ষে কৃষি চুরি করি, স্ল্যুক্ত বোঝা বোবে স্বরি, থাবার কুমীর কেবল ভারা,

তাৰের তোনা \* #। কাঁসারি পদারি কত, ছুতোর, ধোবা, 'মামা' যত, তাবাই **থাচে**র রাজার্মত, দিয়ে নতন গুড়ের বিটে।

নিত্তি আনে নৃতন কভি, ভেট কিমাচে, কুম্ভোবভি,

জাৎকুট্ধ ছড়াছড়ি, ণডাগড়ী দিজে গেটে।

ণভাগড়ী দিচ্ছে পেটে।

ভাজা ভাজাপুলি দিনে, আন্দেদ্পুরে পাবেদ্থেয়ে. থেঁকুর হেঁকুব, চেঁকুব ভূলে,

গুছে স্থবে ছাপর খাটে । জন্ম পেষে ভদ্রজেকে, কারকাছে না পাবি বেংড,

জন্ম পেষে ভদ্জেতে, কারকাছে না পাবি বেং বিষ্হারাশো ভোঁভার মত,

অভিযানে মরি কেটে।

পেট প্তে যায় অনাহাবে, ফুটে নাছি বলি কাবে, ধান বোৰে সেই বিধাতাৰে,

ধ্যান বোবে সেই বিধাতারে লুকিয়ে কাঁদি, এসে মাটে॥

মাজে মাজে উপৰাসী, পোডাৰ মূৰে তবু হাসি,

বেচাই যেন খোদাব খাসী,

দিবানিশি হাটে বাটে।

তাসিও পার, কালা ধরে, এবাবে ভাট অনেক ঘনে,

বৌ, শা**ভড়ী, ননদ্** ভেজেব-চকলি করা গেল উঠে ৷

পূবের বাজীর সেকোদাদা ছণান্ গ্যনা দিয়ে বাধা, এনে দিলেন বিছু বিছু, ধামা নিবে গিবে হাটে। তাই দেখে "বৌ" বেগে মবে, কোনো কিছু থাক্লে ঘণে

তাই দেখে "বৌ" বেগে মরে, কোনো কিছু থাক্লে ঘ বেচে থেতেম্বাদা দিতেম,

শোগ বেতো শেব থেটে পুটে। যাদেব ঘবে বন্ধী আছে, বেভিয়ে একেমু তাদের কাছে,

নানা মত গোড়ে তাবা,

থাকে সবাই বে'টে চেটে ঃ মুপের পানে ছিলেম\_চেরে, 'জ্থান্ একথান্যাওনা €থবে,'

একটিবাহো এমন কথা, বোলোনা কেউ মুখটি ফুটে।

বোলেনা কেও বুৰত পুতে : হোলে পরে মৃতি হাড়ি, গিষে বত ৱাবুৰ বাড়ী,

शास नारत कृष्ण शाक, नगरम या कानूम पाक। मानूद्र ऋनूद कृद्द्व माकि,

মেৰে দিতেম পাংড়া চেটে। বামুন্ৰাডী গেলে পবে, ডেকে না বিজ্ঞাসাকৰে,

সহর শুদ্ধ থবে ঘরে,

বেজিরে এবেন বুটে বেটে : পাতের এটো বাহা ছিলো, একটি বামুন দিরে ছিলো,

পাতের অ'টো বাহা ছিলো, একটি বামুল দিরে ছিচ ঘঁটো ঘোঁটী, কাঁটা চাটা, ধেরে গেল বমি উঠেঃ

তেকে নিয়ে সমাদরে, প্রহা কোবে দিলে পরে, এটে উটি ধেব্ডে বোসে,

পেটে পুরি সেঁটে হুঁটে।

যদি আনি মেগে পেতে, পেট ভোৱে পাবোনা থেতে,

মিছে কেবল গন্ধ কবা.

मूर्थ मिरव এक है कि हो।

(मथरक (शर्म (b) की नाटन, श्वादत्र मिरन कारांशारन, रेनल हुटक श्टानव घरत,

আতে বেতেম বুটে পুটে।

শালী খান্ধা রাজাব বাড়ী, গেলে পরে মারে বাড়ি,

ধারা থেয়ে অকা পেয়ে.

যেতে হবে কলেব ঘাটে।

এ পাভাব্ঐ কর্তাবুডো, নিভি মারেন্পাটাব মুডো, পড়ো আমার ভাইপো বোলে.

একটি দিন না দিলেন বেঁটে।

দ্যাৰ বাব কোপায় আছে, পূৰ্বে আৰা গেলে বাছে,

দ্যাল নমু স্ব ক্বাল বাব,

शास्त्र होत्का, मूर्थ मिछि ह গোৰাটাদেৰ মেলাৰ বাৰো, মেলাৰ গেলেই ছেলাৰ পাৰো.

ष्ठःश्री (मध्य नगः कार्यः

অমি দোব চিটি তেটে।

পূজা কবে ভক্তি ভবে, পূজা করার ঘবে ঘরে,

জ্পো, পাঁৰো, সাংশো হাজাব, कंक भिरत तिर्देश फिराडे ॥

এমন দাতা আছে কেবা, সুথে করাব উদর সেবা,

পিটে পুলির ছিটে গুলি,
মার্কে কোনে আমার পেটে।
তাল ববে কম লোহে, এবেকাবে গেলাম-বহে,
হিন মজুরি থেটে থেতেম্,
হোলে পরে নপা মুটে।
হনে চেইচটেকানি শহু কাণে, তবু,কতক বাঁচি এই

ভনে ছেঁকছেঁকানি শস্ব কাপে, তবু,কতক বাঁচি প্রাণে কেবল ভেক্ভেকানি সাব হলেছে, কার কাছে তা বোলবো দুটে ?

নিমন্ত্ৰণে বাজে বাবা, আমার হোরে থাবে তাবা, মনকে আমি প্রবোধ দেবো, হাত বুলারে তাদেব পেটে।

# বর্ষবিদ¦য়

ওরে ও চৌষট্টি সাল্। (১) সাল নোস্টুট সাল্।
তোবে কেটা বলে কাল্? কাল নোস্টুট কাল।
বেশ্পেশ্ এই বর্ষে। কি হমেছে এই বর্ষে।
তালা প্রলা তোব পর্মে। কেছ আব নাচি হর্ষে।
সম্ম দাশা সবাকাব। বাবে বাবে বাহাকাব।

 <sup>(</sup>২) সন ২২০০ সালে সিপাহী বুজেব সময় যে ছভিজি এবং মহামাবী হব, ভছপলকে বহিত !

হোষে গেল ছাবথার। সবে দেখে জন্ধকার। যকুসৰ ছুবাচার। কবে যত অভ্যাচার। কটি কটি মার মাব। মুখে রব বার ভাব ॥ বলহীন পৰিবাৰ। কারোনাই ঘর ছাব 🔉 বুক্তলা কবি সাব। চক্ষে ফেলে শতধাব। শত শত সধঝাব। শীকাধাভূনাহি আনে। পতিহীন হোয়ে সবে। কালিতেছে হাহাববে। অর নাট, বস্তুনাট। কিনে বাচি ভাবি তাই। বিদ্যাদাগৰ নাহি তথা। কে কৰে বিষেব কথা ? বিষে হোলে বেঁচে বেতো। সাধ পূবে থেতে পেতো। গ্রনা উঠিত গায়। এডাতো ককল দায়। কি কবে কপাল পোডা। বিধাতা নষ্টেব গোডা। ষার দব বমপুরে। সাগর অনেক'দুবে । উলানেতে থাকে তাবা। সে জলেব ভাঁটি ধাবা। সাগবেব লোণাজল। বাণ ডাকে কল কল। ভতদূব নাহি যাব। ক্রিবেণীতে লব পাব। মুক্ত বেণী এ ত্রিধারা। যুক্তবেণী-পাবে তাবা। (>) অবিষয়তে হোতো ভালো। জলিত ভাগোৰ আলো। সদুপাবে হোলে গতি। পুনবাব পেতো পতি।

 <sup>(</sup>১) বুক্তবেশী – প্রয়াগ। দিপাহীয়ুছে পশ্চিমাঞ্লের অনেক হিম্রয়ণ বিধ্বা হয়, এখানে কবি, উহিাদিগকেই লক্য করিকেছেন।

ছাই লোকে কৰে পাপ। শিষ্ট লোকে পায় তাপ। काव चार्ड कांत्र (वांका । विकू नाहि वांत्र (वांका । বিধৰাৰ পতি পায়। আবাৰ কি গুনি ভাব॥ অমুকৃণানন কালী। দে গুছে বা.পডে বাশি। বিলাতেৰ অভিপ্ৰাৰ। আংইন বাউঠে বাৰ ঃ ভরে কাল চবাচাব। ভোব এই অত্যাচার n প্রথমে আইন খুলে। ফেব ডালা দিস ডুলে। সাগব ভাগর হোছে। নাগব নাগরী লোহে। দেখায়ে নৃতন আছিবে। যে কটাদিলেন বিবে 1 দে বিয়ে কি সিছ নয় ? ফিরে বাবে সমূলয় ? শক্র লোক হাসালি। আঁথি হলে ভাসালি। বাগ কোরে বত বাঁতে। শাঁপ দেবে হাডে হাডে। জাননা ফতীর সাঁপে। ভিভূবন ভয়ে কাঁপে। ঁপেষে সাৰিজীৰ সাঁপ । যম বলে বাপ্ৰাপ ॥ স্ব দিকে নই ভুই। যাভ ভেঙ পুঁতে খুই 🕻 তোর দত্তে শনি ওডে। রাত্ আর কেড পোডে। চিরজীবি জীব ধারা। এখনিই মরে তাবা । তোরে দেখে পেয়ে ভয় । যম ছাডে বমালয় ঃ ভাল ভাল ভাল পর। সৃষ্টি আবে নাহি রয়॥ ণক্ষী গিরেছেন উছে। অমহল দেশ জুড়ে॥ আলক্ষীৰ আগমনে। সুৰাই প্ৰমাদ গণে॥ किनियद अधिमत । दाँठि किर्देश इःशी नत ?

কি হইল হাৰ হাৰ। অনালাবে মাবা বাৰ । অকাল হইল দেখে। মহানাবি লেশে বেশে । বিদ্রোহিবা করে পাণ। ভূপতিৰ মনজাপা ॥ যাবে বাবে মন মন। নৰকে গাবেশ কৰ। মন্ত্ৰপাতে ভশ্ব ছাই। তোমাব বিদাৰ গাঁই।

জ্ঞ কোবে পৃথিবীব, বত টেডাচুল।
জ্ঞ কোবে পৃথিবীব, ৰত কেশেলুণ।
ভাহাতে মাৰ্যমো পেল, চাই আৰু কাৰা।
ঠাই ঠাই, ডাই জাঁহ, গোৰবেৰ গালা।
কাভি পোৰে নাপিত, ভিনিবা বাজী বাজী।
কাভিবা পাৰেহ নথ, কৰিয়াছে কাভি হ
পুকুৰেৰ পানা আছে, কুক্বের শোন।
শৃক্ৰেৰ পানা আছে, বুক্বের শোন।
শৃক্ৰেৰ পানা আছে, বুক্বের শোন।
শৃক্ৰেৰ পানা আহি, আনিয়াছে, ভান ই
ভেলে বুজো আদি কঠি, আব সৰে মায়।
লক্ষ্মীভাভা বহবেৰ, হোৱে পেল সায়।
কুলোৰ বাজস্থাকিন, ক্ষম্ এলো গায়।
কুলোৰ বাজস্থাকি, কিন্তু ক্বৰে বিশ্বাঃ

হাবাতে বছৰ 'ওই, বাই বাৰ বার।. আলন্দ্রীপিশাচী তাব, পাছে পাছে বাব । ছুঁওনা, ছুঁওনা ওরে, পালাও পালাও।

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

396

পাকটিব আটি সব, জ্বানাও জ্বানাও ॥
উভাবে ত্বেব ধ্ব, নৃত্য কব ক্ষে।
আনাই, বানাই, দ্ব, মন্ত্ৰ পভ মুখেন
বাপালে তুলাব বিচি, দেও ছভাইলা।
শতন্থী বছে দেও, হাব গড়াইলা।
বাণাকভি বত দেও, মানা নাই তাঘ।
নালীছাভা বছবের, হোলে পেল সাল।
বান বল ভূাতিলাম, বাম, এলো গাব।
কুলোব বাতাস্থিত, করুরে বিবার।

ও পাভাতে গাধা আছে, মবে চেঁচাইবা।
এব পালে দেও তাবে, নজত ধবিছা।
দে গাধাব ভাক্ আবে, তনা নাহি যদেশ
আগাচন সব লোক, গাধাব আগাব।
ক্ষক হডাবে দেও, কিছু নাই গোল।
আনু আনু ছে দিয়ালা, চালু চাল্ হোল।
বিবায়ি গানেতে তাই, হওনা কাছর।
বাজাব নাগায় আছে, গোলাপ আছর ই
বলন বাজাও সবে, বহালাকুছাব।
লক্ষীছাতা বছবের, হৈছাবে পেল নাব।
বান বন, বাচিলায়, যাম এলো গাধা।

বুলোব বাভাস, দিয়ে, করবে বিদাম।

নিশকের দাঁতখনা, জিবখনা জন।
বাংলার বনভারণ, আথারীয় হল'।
বিছুটিব বেং দেও তারে রালিদ ধবিরা।
আনকুনি দেও তারে রালিদ ধবিরা।
কুনের ঝালব দে'বা, মাকত নার জাল ।
কুনের ঝালব দে'বা, মাকত নার জাল ।
কালাকুত বোরে দেও, দেও মনজার।
আঁতাকুত বোরে দেও, দেও মনজার।
কালাক্ত বোরে কেন্দ্রন্তার বান্বন, বালিদান, কুনে বোল নার।
কুনোঃ বাতান্দিরে, করবে বিলার।

## হোঁ চুকাটা

ভফুকুলে ৰক্স গই, জন্ত নই নিজে। বংবের সম সদা, জান কৰি দ্বিজে। ভক্ত কৰ্ম্ম কাৰ্মে কছে, কিছু নাহি দানি নৰ্বাহৰ্ম্ম পুৱা পাপ, কিছু নাহি মানি। বেধাবেকে বাম কৰি, নিজ আজ্ঞা গেছে লক্ষ্য তথা লক্ষ্য মান, সেই দেশ হেছে। বিচাৰ না কৰি কছু, মান অপমান।
সমানৰ অনানৰ, সকল সমান ॥
পিপে তছ পাব কোৱে, তাৰে ৰাই রম।
লাঠালাঠি কটিলকাট, কিসে আমি কম্॥
বাবা কিনে আমি কম্ধ্
বাজে কম কম কম্বাজে বামু বাম্থা
এই দেখ বাজে বাবা, বমু বমুমা মান্য

পণনাত্র বিবাদ কলত, নাহি ছাতি।
বিবাহি কাবাগার, শগুরেব বাতী।
ইবাবের ভাবে বাদি, তুট রহে দেল্।
তুলারূপে জ্ঞান করি, স্বর্গ আর জেল্।
ভূলারূপ জ্ঞান করি, স্বর্গ আর কেল্।
ভিছ্নতাল শাঁচাভাবে, বাঁচার বহিলা।
আবির কবিব তুণ, বাহিব হইলা।
আনার প্রতাপে ধরা, হইবে অভির।
বেধা বাবে বীর হয়, কত বড় বীর।
প্রকাশিব নিজ বিদাা, মেরে এক দম্।
লাঠালাঠি কাটাবাটি, কিনে আমি কম্?
বাবা কিনে আমি কম্?

বাবে কিলে আৰু কৰ্ত বাজে অনু আমু আজে আমু আমু আই এই দেখ বাজে বাবা, অমু আমু আমু ॥ ষরস বাড়িছে যত, পাকিতেছে কেশ ।
তত্ই ধারণ কবি, নাইবর বেশ ।
গোতিষ ভাকেনি ববে, উঠে নাই গোঁপ।
ভথন করেছি আমি, পিতৃ-পিও পোপ।
পানগান কেনে দিরা, বেশা আনি যরে।
ভাগো ভারে বে,ধে দিবা, পদলেবা করে।
চক্ষে দেখে চুপামেরে, কাঠ হন বাবা।
গোটুহেল, ওল্ড কন্ধ, ভাান্ভান্হাবা।
আমার বৃদ্ধির কেউ, নাহি পার কন্।
গাঠালাঠি কটাবাটি, কিনে আনি কন্।

বাবা কিলে আনি কম্প বাজে অম্ অম্ অম্, বাজে অম্ অম্ অম্ এই বেৰ বাজে বাবা, বন্ধু বন্ধু ব এককতো মোহনম্তি, মূবে নিট মনু । দম্ দিয়া বার্কাই, বক্তুলবমু ছ দেশে দেশে মারিরাছি, বাহাছরি চাক্। পরবাজা ভল করি, কেটে নিজ নাক্ ৪ তট্ডু সকল গোল, বেজে-নম ক্রিয়া। ঝামের ভিতরে চলি, মখাভাগ বিয়া। লালে লালে লাগে কেঃ, লাগে লাগে লাগে। কত মিত্র ধরে মিত্র, স্ব হবে গম। লাঠালাঠি কটোকাট, কিসে আমি কম ? বাব' কিসে আমি কম ?

वास्त्र वंग वंग वंग वास्त्र वंग वंग। धारे (नथं वास्त्र वार्ग वंग वंग वंग वंग ॥

# কাণকাটা i

বীবভাবে বিশ্বনিক নৃত্যু কৰে বীব।
প্রেম্মভবে বুগুল নৰনে নাবে নীব।
বীরাগনে কৰে বীব, মহিনা প্রকাশ।
টল টল চল চল, ধল বল হাল।
হেবিরা ভক্তের ভলি ভবে জাঁপে বম।
নাঠালাটি কটাভাটি, বিনে ভূমি কম?
কাঠালাটিন দুটাভাটি, বিন্দু ভূমি কম?
কাঠালাটিন ভাটাভাটি, বিন্দু ভূমি কম?
কাঠালাটিন ভাটাভাটি, বিন্দু ভূমি কম?
কাঠালাটিন ভাটাভাটি, বিন্দু ভূমি কম?

ফাইট লডেগা ফের, কম কম কম। বাবা কম কম কম ব

ভাবি কোবে দিলে তুরি, বত পবিচয়।
সে দলাতে কোন অ'শে, আমি কম নব ।
কড শত হাতি বোডা, গেশ বসাতল।
ন্যান্ধ নেতে বলে ভ্যাড়া, দেখ মোব বন 
আমাব নিকটে তই, নাহি পাস কম।

নাঠানাঠি কাটাকাটি কিসে ভূমি কম <sup>9</sup>
বাবা কিনে ভূমি কম <sup>9</sup>
ফাংট লভেগা ফেব কম কম কম ।
বাবা কম কম কম ।
বাহাছবি শেখালাম এক চালি চেবে

বাছাছৰি নেধানাম এক চালি চেলে।
আদি আহি ঠিক বোনে, এই গেলি ছেলে ই
উপদক্তি প্ৰদান ৮তে, উপদক্তি ধৰি
শক্তৰণে হক্ত থেকে নাল ও ব অবি।
বিপ্ৰেম বহিব জাবি বাতি আবি মন।
নাঠানাটি কাটাকাটি, কিনে এদি কম।
বাবা কিনো ভাদি কম।

ফাইট লডেগা কেব কম কম হম।
বাবা কম কম কম্।
হাসাইলি সব লোক, ভুবাইলি নাম।

জীবন বুখার তার, বামা বাবে বাম। নিকপমা মনোবমা, গুণধামা বামা। হলতে বিবাজ কবে, তুলা কেবা আমা ?

তর শক্ষে বাজে তেবি ভঙ ভম ভম । লাঠালাঠি কাটাকাট, কিলে ভূমি কম্? বাবা কিলে ভূমি কম ।

ফাইট পডেগা কের, কম কম কম । বাবা কম কম কম ।

### মেকি ব্রাহ্মণ পণ্ডিত।

ব্ৰাহ্মণ পণ্ডিত বত, সকলেই অহুণাত অবিবন্ধ উপকাৰ গান। ভোমাদেৰ মত কলে, বিধি আছে আছে বলে

এখনট দিবেন বিধান ঃ
পুথি লবে বাশি রাশি, কাছে আসি হাসি হাসি

কহিবেন হইয়া প্রধান। হিন্দুবালা বিধবাব, বিষে হবে পুন**র্বা**ব

পাস্তে তাব রয়েছে প্রমাণ। শাস্ত্র এই, বিধি এই, অর্ক্সাচীন মৃচ বেই

বলে দেই ইথে নেই বিধি। ব্লিচার কক্ষু এনে, শাস্ত্র তার কত এনে,

দ্বিতার করনু অনে, নাত্র তার কর আনে দেখিব কেমন বিদ্যানিধি ঃ অত্রিশব ছ্রাশব, বাবা হয় তাবা কর

পরিণয় নব নব বলে। কিছু নাই বোধাবোধ, কথার কথার ফোধ

আন্থাবাধ উপরোধ চলে। কেবল মুখেতে জাঁক, - ভিতরে সকলি জাঁক

মিছে হাঁক মিছে ডাক ছাড়ে। ফে'দে টোল মাৰে টোল, মিছামিছি কৰে গোল,

ে ডোল মাবে ডোল, । মছা।মাছ কবে ও গোলে মালে হরিবোল পাড়ে;। সব শাস্ত্র আছে পড়া, শাস্ত্র সব হাতে গড়া, মতামত আমাদেব ঘবে।

আমাদেব পোড়ো বাবা, পণ্ডিত হইরা তাবা, টোল কোরে গোল বোবে মরে। আমাব মুথের গোটে, কার সাধা এটি ওঠে, বেটে কুটে কবি ছারধার।

ভোমাৰ কল্যাণে বাৰু, সকলে কৰিব কাৰু, দেখ কভ জমভা আমার !!

কবিলাম এই পণ, স্মার্ভ আছে যত জন দেখি দেখি কেবা কিবা বলে।

বিচাবে বদ্যপি হাবি, প্রমাণ না দিতে পাবি
পূ'থি সব ফেলে দিব জলে।
কালী মধে ভাকি, যত দিন বেঁচে থাকি,

আশীৰ্স্বাদ কৰিব ডোমায। কোরো এই উপকার, দ্রেন কটা পৰিবাব,

আলে বিনামাবানাই বাব 🛭

### তোষামুদে।

তোষামূদে বারা ভাবা, সবাই অসাব। কেবল বেভার খুঁজে, আপন স্থান**রঃ** তুড়ি মারে টগ্না গাখ, টাকা ভেবে সাব।

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

364

বহে মবে রাশি বাশি, যে আলজ্ঞাব'ভাব ঃ মলেতে নিপাত কবে, পোল পবে চাবা। ব'বুৰূপ বুকেব ৰাজ্বে গাছ ভানা'॥ কিসে ভাক কিসে মন্দ, নাতি জানে বিচ। জেলেব হাঁড়িব মত বেবে পিছু পিছু **য়** বাগানেতে শশা ভোলে, পাড়ে পিচ িচ। কথায় কথায় কহে, জল উ'চু নীচু 🏾 তথন সেরপ কবে, বার অভিপ্রার। বাৰ্জী ৰলেন বাহা, তাহে দেৱ সার # ালাপি বলেন বাবু, "কেমন গোবিন। माञ्च कि ভान नय, वामून नदीन ? " গোবিন বলেন, 'বাবু তাই বটে বটে। ত্বণ জ্ঞান কিছু নাই, সে বেটাব ঘটে । কে'ডোজাবি ববে সেটা, মিছে ঘরে মবে। বাহিবেতে কোঁচালয়া অধীরভালতে । আপনি আসিতে দেন, কে করিবে মানা গ চিবকেলে পালী তারা, সব আছে জানা।' গোবিনেৰ কথা ভনি, তীযুত তখন। ভিজিমাকবিয়া যদি, বলেন এমন। "োৰিন কি শুন নাই, এৰপ প্ৰস্তার।

নবীন বনেদী লোক, বিদ্যা আছে তার 🛭 কহিতে বলিতে ভাল, অতি স্থভাকন ৷

অংগাৰ ব্যাভাব সৰ ভি<sup>\*</sup>ছৰ মতন।" গোবিন কচেন ভানে, 'হাঁচী মহাশ্র ! বাব <sub>া</sub>তাক ছিলেন সুদ্য সমুদ্য ॥ চিবকাল মানা ভাষা, সকলেব কাছে। পাকা ঘৰ পাকা বাড়ী, ধন আনে আনেছ ট মেন কুৰণ নিজে ঋণ সেই মত। পাবসি ইণ্যাজি জানে শাস জানে কস। ণোষ্টিপতি বটে তাশ, গাঁষের প্রধান। অবোঠৰে ক'বে ভারে অল কৰে দান। নবানেৰ ৰাছী আমি যে সমৰে বাই। নন' ক্ষুৰ ছানা কত পেটভোৱে থাই ১" বাব কন 'গোবিন, অনেছে এক খেঁছো। ছই হাত উ"চু তাৰ, সঙ্গে এক ঘোড়া ১ ' গোবিন কছেন 'বটে দেখিবাছি ভাবে। ্স ঘোড়া আকাশে নাকি উড়ে যেতে পাবে ১ পাচে নাহি দ্বাহ্য হতেছে ভাবনা। আমি কি ভাহাতে বাব, চডিতে পাব না ? এইরপ বত আছে. ভোৱামদে দল। বাব কাব্ কবিবারে করে কত ছল i সাক্ষাৰ না বরে কেছ, সতোব সহিত। অধর্মের চর হোযে, কর্যে অহিভ।

## ইংরাজ সম্পাদক।

এদেশেতে আছ বত, সম্পাদক শাদা। সকলেই আমাদেব, বড়ভাই দাণা। তোমরা দকল মতে, দ্বাই প্রধান। বাজজাতি, বাজপ্রিব, বাজবৎ মান। थीय बड़े बीद बड़े, छनिएक है मछ। আমাদেৰ চেবে হও, সর্ববহতে বভ ঃ দেখে ভনে জোন সৰ ভোমাদেব ক্ৰিয়া। भरविक लाधनी स्था, मन्नावकी निया। কিছুভেট তোমাদেব, তুল্য কভু নই। বল. বীষ্য, সাহদ, সহাৰহীন হই ॥ আগেই তোমবা আছ, উপকেতে চোচে। আমবা বরেছি নীচে, একপাথে পোলে। তুলেতে হয়েছি নীচু, থেদ কিছু নাই। ওজনে হইলে উঁচু, হেলে মবি তাই॥ আপনাবা বড়বড়, কি ভার সংখ্য ? বড বোলে প্রকাশিত, বড প্রিচয় ॥ কিন্ত কিসে খেদ যায়, কিসে করি স্থির ? সমান দেখিনে কেন, ভিডর বাহির ? বাহিরেতে ধোপদান্ত, ধপ ধপ্ শাদা। ভিতরেতে दिन् दिन्, পাঁকভবা কালা !

দীবারের ইচ্ছা বাহা, নহে অনামত । ছদিক সমান হোবে, স্থুধ হোতো কভ #° যাহোক ভাহোক ফলে, বুখায় বচন। গোটাত্ই কথা বলি, কথাৰ মতন ( ম্থন বদেছ ভাই, সম্পাদৰী পদে। মত্ত যেন হওনাকো, অভিযান মদে 🛭 বাগ, হেব, অভিমান, আৰু অহস্কার। পাপকৰ পক্ষপাত, কৰ পরিহার 🛭 নিৰত বিবাজ কবি, তোমাদের কবে। পক্ষের ক্রেএনী কেন. পক্ষপাত করে ? এডিটরি *বর্শে* শুধু, ধর্ম্মের সঞ্চার। ভাগতে না হয় বেন, কলম্ব প্রচাব ৷ ধন্মেৰ আসনে বোসে, সেই ধর্ম ধৰ। নুপতিবে ন্যায়মত, উপদেশ কর। এদেশেৰ বৰ্ত্তমান, যত যত ভূপ। ছিটিদের আত্থতা, কবিছে কিবণ ? দবৰ্শন কবিতেছ, যে সৰ ব্যাপার। (म मत चर्न जोड़े, कर এकतात s ভোমাদের কেন্ছর, এমন ব্যাপাব গ হিতে ভেবে বিপরীত একে ভাবো আর । क्रकस्त केर्यकरण, कविवास्त (शांत । এ বোকে কি জাতি মাজে, বিলি হল বোল !

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

শবীবের একভাগে, লোর বলি হব।

320

এ বোলে কি সৰ দেহ, কাটা বিধি হয়? এক দক্তভ খকব হোলে পবে সবে নোডা নিৰে সৰ নীভ, কে ভেঙোছ কৰে? ন নাপাপে পাপী নান।, দণ্ড ভাব লবে । এ বোলে কি ভিন্দ মাত্রে দোষী হোয়ে ববে বিশেষ বাঙালী ভেকো আমবা স্বাই। কোনবালে কোনোৰপ দোৰমাত্ৰ ন'ই r বালভক্ত অন্তবক্ত, সমান স্বলে। চবিভার্হট সদা রাজার মঞ্লে এ গ্ৰণৰে কভিজেভ কেমন কবিবা। নাজন ভিতর শিবে, আঁতা দচাইযা? হায় হায় কার বাছে, কবিব হৌদন ! ভোমাদেৰ এ কথা কি. কথার মতন ? বল আছে, বোলে লও ইচ্ছা যে প্রকাব। সে বলে না ছেন কথা, ধদাবল নাব ঃ भौता क्रम श्रुविकारी, धर्म्म नवाहत । ভাঁল কি অন্যায় কথা করেন প্রবণ ? ভব হোক ব্রিটদের ব্রিটদের ভর। বাজ অভুগত যাবা তাদের কি ভয় ?

### বাঞ্জী (১)

ভাবতের অধিশ্বরী, মাতা মহাবালী। আহলার প্রবাশ হেডু, আতোষের বালী। ৰ্যাপিল পুনিবীময়, গুভ সমাচাৰ। বোরত্ব ধুনবাম, ধুমেব ব্যাপাব। বান্ধী দেখে স্থবী হব, ভাবিষা অস্তবে। ছলে খলে কত লোক, আইল নগবে। ছোট, বড, ৰভ লোক মাঠের ছোধাবি। কিলিবিলি কবে খেন, পিঁপীডাৰ সারি ॥ যাত তলে চাড় দিবে, নাহি বাব নোয়া। त्व निर्कटक मृष्टि करव, त्म निर्धिष्ट् "रव"।श" । দঙী আব দবমার, প্রাণ হোঁলো হত। ঝাড়ে বংশে পুডিয়াছে, ৰংশ শতশত । ছাঁছনি হইল ভাল, বেহন ফাছনি। তোপেৰ নিদান মাত্ৰ, কোপেৰ গাছনি 🏾 ্ভ, আৰু, পিয়ারসন, বাজীৰ অধ্যক্ষ। লাবাদ সাবাদ তুমি, কাজে পুৰ দক। এ যে বাজী, টাকাঝজী, বাজী বন্ধ জোব।

বা জী, কি, বাজী হ্বা, বাজী হ্বা ভোব ।

(১) ,দ্বা গুটান্দে নিপাহীব্যেছ পদ্ম জান্তবেশ্বার বার নার্যনাদনক্ষ কিবাভার দুর্গপ্রান্তবেশ বাড়িকীতা হয় তদুগদক্ষে রচিত।

দেবিহা অবাক হোতে, সকলেই আছে।
কোবার বিনীর লাজু এ বাজীর কাছে?
বে পেরেছ তাব তার, দেবই আনে, আনি ।
আমরা তো বাই নাই, তথাচ পজানি ।
বালপবে অভিবিক্ত, বিদাতের নব।
আারেট, কামিজপবা, বেতবলৈবর ।
বা কব, তা শোভা পার, নাহেব বলিরা।
"বেলাক নেটিব" বড, মরিছে অলিবা ।
বে বাজী কবছে তার, উপমা তো নাই।
মানিলান পরিহাব, বলিহাবি বাই ।
বেগিতার বেমন মঞ্জা, ইইলে বাঙালী।
ব্রিভার্ব ভৌৱা ভৈছে কলিবালি।

### ডুয়েল যুদ্ধ।

বিলাকী সভ্যতা তোরে, বলিহারি যাই। এমন অপূর্ব্ধ রীতি, আর কোণা নাই ৪ হালি বুলি, রল রন, আনেধ প্রভার। কপণতে নেই ভার, নাহি বাঁকে আর । নিম্ন ক্ষণ লোহে সনা, বিদেষ বড়াই। কথার কথার হন, ভূবেদ গভাই। 

## **হিম্কুকালেজ**।

নগৰে আমেৰ কেবে, হিন্দুৰ কালেছ।
পোল তাব 'ছিলু' নাম যুটিলাছে তেছ।
মদবের ম বৰ্গ নাই, পতিবাছে মেছ।
আহি বিবা একেবাবে, হোবে পোল ছেল।
এব পাৰে মিবেনাই, বেতে আ্ছোল সেতৃ।
স্থানিকেন 'পিতেটাকোঁ, বাইবেলেব পোল।
কালোকো নাম হোলো, হিয়বি কালেজ।
কালোকোৰ নাম হোলো, হিয়বি কালেজ।

#### ব্যোম্যান।

উডিবাছে আকাশেতে, ছচাক কানস।
তাচাতে মাহুৰ বংগ, প্ৰত্নমানস।
সাবাস সাহস তাং, বিছু নাই তব।
বচ উঠে তচ মনে, গুৰেব উহৰ।
নগাবেব লোক বচ, ববে হই ইট।
দেখি বচ আমি তচ, কচ স্থা ইই।
নয়ন নিম্মিটীন, এক দৃত্তে হই।
টেউ হযে নাহি দেখি, সণ্ডান হই।
বেছৰ বাল দেখিতেছি, ওই, ওই।
বেছৰ বাল দেখিতেছি, ওই, ওই, ওই।
বিছৰ বাল প্ৰবিচেছি, ওই, ওই, ওই।

<sup>(</sup>১) ছিন্দুকলেডে ঐটান ছাত্র এহণ করার ইহা রচিত হর !

কেহ ৰূপে, দেশা য়াবে, এইখানে বই। কেছ বলে, এড কৰে হোলো টাদসই & হেশে ছলে, নেচে নেচে, চলে থবে থবে । মহাবেগে চডিয়াছে, মেনেব উপবে ! নিব থি নীবদ তাবে, হোরে ছাইমন। পুন পুন প্রেম্ছবে, দেব আলিছন ৷ ভূলোক পুৰুষপূর্ণ, আলোক ঈক্ষণে। জিলোক করিছে জয়, গোলক গমনে 🛊 ভাবকেবা ভাবে ভাবে, এই অভিপ্রার ! চলিয়াছে দেববাল, ইঞ্জেব সভাব। পাপুন্ধ নবলে'কে, নাহি অভিলাব ! প্ৰথেতে কবিবে গিবে, স্থগধানে বাদ ! কেছ বশে, ধবাতলে, নিদাবেব ভয়ে। বিহাব কবিবে গিয়া, নীহাবনিলয়ে। মানৰ আসিছে উদ্দে, শ্নোব উপৰ। পতক পতক সন, আক খব খব। হিলবাজ পায় লাভ. দিলৈ মধুচাকা। দ্বিস্বাল ভয় পেয়ে, গুডাইল পাৰা : কে**ঃ বলে দে**ৰিছে, আকাশ ঘূরে ঘূবে। এ ভববুক্ষের মৃশ, আছে কত দূরে 🛭 অনুমান কবি পুন, যুক্তি সহকাবে। केंद्रियाटक कें।व लाहित, ठीव विविद्यार ।

### কবিতাসংএহ।

224

क्रक्तारत क्रिका कर्मा । পেটভোবে খাবে গিলা, স্থবিমল স্থবা : চ<del>ক্রা</del>লাকে মুগ্যা, করিয়া এইবাব। পোষা মুগ কেন্ডে লকে, কোল পেকে জাব ঃ অকলত হবে শুলী, হাবাইয়া শুলু। ভাল রে গগনগামী ভাল ভো**র** নৰ ঃ আবে বাব ভাবি হন, অংক'শের জ'ব। তাব নয়, তাবা হয়, তাবানাল ল'বা। বিনোদ বিশ'নে বসি, বিশেষ বিবসন। সেই তাবা হার কবি. গবিদেছে শলে # নবান ন'ৰক পেষে, গুলী সৰ ভোগ পুৰাৰ নাগ্ৰটালে, নাভি চাৰ ভাৱা । ভাষাধাৰ ভাষাপতি পেয়ে অভি দঃও। লাজে ভাই গগনেতে, লুকাখেছে ৮খ ৰ লোকে কয় কছনিশি, মাথিবাছে ম'স। তাহানর, থেদে অদ্য, অসুদিত শ্শী ঃ यक्ति वल आधीतार, इंडेटन घरेन । পুনরাব ইবে কেন, ভুগলে পতন ১ ভন সারুকলি শাব, বিবরণ মুণ⊹ চাদের অনুত থায়, চকোরের রুল 🛊 বেব্রিরাছে আশ পাশ, স্থিরপক্ষ ধোবে : हाथित्राष्ट्र स्थाकत, अकटाटि रक'रर ।

ভাশ দেখে কি প্ৰমাৰ, আমবাই পাখী। "ठॅ'लिव हरवाव,, नाम, हक्करवाल शकि # ব। ত্রি দিন সমভাবে বোল্লেভি <sup>8</sup>'টাইট,, । এ আবাব কোথা ছোতে, আইল ''কাইট,, ? বিনা সুত্রে উদ্ভিষ'ছে, কেমন "কাইট, পাথা নাই শুন্যে এসে, কেমন "ৰাইট,, ঃ লাভি বলে, বলে চলে, কলেব "কাইট্,,। মৰ্ভ লোকে শব্দ কবে, ''কাইট, কাইট্., ৷(১) रशंत्र कृत्क अरम छत्क, यूट्कव <sup>त</sup>माहें है ,, । হবিধা লইবে শশী, করিয়া ''ফাইট্,, ঃ মনে এই ভাবিবাছে, হইলে "নাইট,,। বেডে লবে আমাদেব, চাঁদের "রাহট.. ম (हालाइ मुडम कन, (खालाइ "बाइहे.,। এখনি নাশিব তাবে, কবিয়া ''ৰাইট.. ॥ চঞ্চল চকে।বচর, চঞ্চর আঘাতে। "কাইট, ৰাইট,, করি, দিলে অধঃপাতে। খোঁচা খেষে ধুম শেল, ধুম কিসে আর। भूनर्स्वाव करन वरत धवाव विद्यात ॥ (केश वरत चारक धरे, भारत्रत्र वहन। অতি উল্লেড উঠিলেই, পশ্চাতে পতন।

 কাইট নামক একলন ইংরাল, কলিকাতার প্রথম ব্যোম্বানে ইটেন তত্বপলকে বৃচিত।

#### ঝড়।

## (২রাজৈয়ের, ১২৫৯ দাল।)

লণতেৰ আবু ভূমি, বাধ নাম ধৰ। ৰাষু ৰোধ কৰি শেষ, আয়ু বাযুহৰ। ভূতের প্রধান ভূমি, ভূতবাজ নাম। জন খন অনল, আকাশ তব ধান ৪ জলেব জীবন নাম, নাম মাত সাব। ভূমি কর জীবনেব, জীবন সঞ্চাব ॥ আগুণে কি গুণ আছে, দীপ্তি কোণা তাৰ <sup>2</sup> ভূমি তার সধা বোলে, করে অভয়াব। প্রতিভা প্রকাশ তাব, ভোমায পার্চা। অৰল সলিল হোতো, তমি না ণাকিলে ৷ ক্ষিতিব যে খ্যাতি কিছু, স্থৰ্য সৌব**ত**। সে কেবল আপনাব, গুণেব গৌরব k ধবাধবে জনধেতে বস্তুষত যত। তোমার কঞ্পা বিনা, সব হয় হত। चावर कक्रम, खीव, खढ नमस्य তোমার চালন বিনা, পালন কি হয় ? এবৰার ধর যদি, বিপবীত রীতি।, ৰোধা থাকে ক্ষিতি ভার, কোথা থাকে ছিতি <sup>7</sup>

আকাশেব শোভা গুধু, তোমাব কাবণ। বভনে ভোমাৰে তাই, বোবেছে গাবল। ছলে অলে ঘটে ঘটে, থাকিবা আকাৰ। তোমাবে হৃদবে ধবি, বাডার উল্লাস ঃ দুত্তিকাৰ গন্ধ গুণ, তোমাৰ কুপাষ। ভাল মন্দ গদ্ধ সব, নাসাপণে গায় ঃ পनार्थित (मार्वे 89, घार्यट कानिया। উত্তম গ্রহণ কবি, অধম ছাডিবা। আপন স্থাপ ভূমি, আপন স্থাপ । বায়ৰ বিচিত্ৰ গভি, অতি অপৰূপ ॥ নিবাকাবে চলিত্রেছ, ভবস্কব চেলে। না জানি কি চোতো আরু, হস্ত পদ পেলে # এই চলি, এই বলি, চলাবলা যত। কল বল সকল, তোমাব হস্তগত। ভঞ্জি না চলালে নাই, চলিবাৰ কল। ভূমি না বলালে নাই, বলিবাৰ বৰ্ণ # কলেবে বিকল কবি, দেহ কর মাটি। সকল কলেব কল, ভূমি ''কলকাটী''। এ কণে এ কণকাটী, বে জন চালায। সাধু সাধু সাধুবে, প্রণাম জীব পাষ। অণিপ্লাত তোমারে হে, প্রতাপী পরন। জন মাঝে তব সম, আছে কৌন জন ?

কথন কি ভাবে থাক' বুরে উঠ। ভাব। জিভুবন জয় কবৈ, বিক্রম শোমাব 🏾 বানবেব পিতে ভূমি, অনলেদ মিকে। কণ্ট হে পাব স্ব বহাতলে দিতে। উগ্ৰন্থ de क्षाय. इट्टेंटन डेन्य। স্বৰ্গ মৰ্ত্য পাতালেতে, তেৰাঠেকি হয় 🛚 बि ज़रम (दर्श (म s, अक व्याहे कारत । বৰি শশীপজে ধনি, ভারাবায় বোবে। আকাশেব চাব ভেঙ্কে, পাভাবেতে চার্গে। পাতালেব জল ভূলে, আকাৰেতে ঢালো। हैक्कवाम डेथूडिया, स्मात्ना नाश्रभूद । লাগপুর ইন্দ্রধানে, দূল্যে উঠে যুবে 🖁 নীচ গিৰে উচ উঠে, উচ পতে লীচে। মাঝে থেকে মাজধান, মবে আগে পীছে। তিব মূর্তি ধবি ভূদি, থাক নে সুময়। সে সময়ে হিবভাবে, থাকে সমুদ্ধ 🛭 চৰাচৰে স্বভাব, স্বভাব ভাল ধৰে। পেষে निव वठ कीव, श्वनग्राम करत् । মনে কব 🌬 কোবেছ, গত গুক্তবারে। হাস্ব বাধাবেছ, অধিন সংসাবে। थरक नरव वायू वरल, कावारवरक निरमना ভাহে বায়ু, বাযুগ্ৰন্ত, হক্ষা আৰু কিনে ?

কাণ পেতে সমীবণ ভন ভন সব। চাৰিদিকে হইতেছে, কন্ত কলবৰ ল বাগ্যনেতে দেখিয়াছি, গাছে নিছু নিছু। এখন সে নিছ মাঠ নাছি আব কিছ। পুলু ভব লঙ্কাপুৰে, বিস্মাবিয়া প্ৰাস। বাবণের মধুবনু কোরেছিল নাশ । ভূমি দার ৰাপ বটে ধৰ বহ বল। কটাক্ষে কবিলে শেব সৰু মৰ্কল ঃ ভেশ্মাৰে সাৰাসি আছে ওপে নাই ঘাট। এও থেয়ে পল দেশে বাধে মাই আঁটি। থেলে খেলে আনাৰ খেলে আছুবাছিল যেন। ভোট বভ গাচ সব, পেটে দিলে কেন ১ বংশ সহ বংশ নাশ, কবিষাছ ভাষি। ৰাজীঘৰ ভাঙ্গিয়া, কোৰেছ সমভূমি ৰ উদরে প্রেড ক০ সাই সাই হাঁকে কাকের কোবেছ শেষ বাঁকি আৰু কাকে মেষ খেলে, অভা খেলে, মজা দেখি এছো কেমনে থাইলে কাক সে য়ে বভ ভেতো ' পেটেৰ আলাৰ খেলে, হাতি বোডা স প । হ বাবেছ হি গুয়ানী চলে হৰ পাপ ঃ বর বাও, দাব থাও বাও তবি তক। প্ৰন 'বৰ হোলে ধাইমাছ গঠাঃ

### ২০২ কবিভাসং এই।

এণাণে তোমার কি হে, জাতি আই আছে ? গলনা থাইতে হবে, অঞ্চনাৰ কাছে ৷ বধন হেদোর জলে, কবিয়াছ স্থান। কুইন্দ কালেন্দে গিয়া, পাইছাছ স্থান ঃ ইস্লের ঘরে চুকে, কোরেছ ভ্রমণ। ছু বৈছিলে পূগেলবিব, থানার বাসন। ভথনি কেনেছি মনে, ঘটিবাছে দার। বাভাগ লেগেছে তার, বাহাসের গায় ৮ সে বাভাসে বাভাসেব, ধর্ম ছোলো নাপ এটান হইলা বায়, থাইল গোমাস ঃ এই ভর বানবী সে, নেবে কিনা গরে। ফলে ভমি তেলিয়ান, দোষ কেবা ধরে? क्रगट्ड व्यान (हार्य, व्यात्वर राजाम । লগতের করিয়াছ, কত সর্বানাশ। সমভূমি করিবাছ, গোশগঞ্ঞাম। এয়াম নাই ধাম নাই, আছে যাত নাম ঃ ছাক্রাকার পড়িবাছে, প্রতির ঘবে ঘবে। ৰাস্থ গেল, বৃক্ষ-গেল, কোথা বাদ করে? खनाहार पूर्वाकरत, প্রাণে মানা राष्ट्र। দেশে আর তরু নাই, কোগায় দাঁডায় ? গৃহ সার বুস্থাবাতে, মোলো কত লোঁক পরিবার কাঁদে পেরে, ঘোবতব শোক।

কাবো দ'বাঁ, কাবো পুজ্ৰ, কাবো বন্ধু ভাই। কারো কাবো সংগাবেতে, কেহ আব নাই । পতি শেকে সতীকাঁদে সতী শোকে পতি। মুভ শেকে প্রস্থার দারণ কৃণতি। সমীরণ এসকল, তব অভ চোব। হাচাবৰে ভবিষাছে, অখিল সংসাব 🛭 ষা থ বার ধাইবাছ, দোহাই দোহাই। আৰ ভূমি খেবোনাকো, ধেবোনাকো ভাই। সাবিবাভ, মাবিবাভ <টে সমুদ্রি। ৩মিওতো মোৰে ছিলে, পেটেব জালায। হোবেছিল যে প্রকাব, ওলাউঠা জোব। টেনেছিল ব্যব্যক্ষ মব্বের ভোব। ভাগো কাছে অহিফেণ, মদ্য ছিল থাই। लाएक्सम (शाहे किर्य, वाहियांच ठाडे ! আনক দেখিতে পাই, আবোগা লক্ষণ। ঘমাত, ঘমাত, তুমি, ঘুমাও এখন। वारहेडिन कि श्रमान, एषे पार्च दरवा। কুপথ্য কোবোনা অ ব, থাকো চোক বুলে।

### इहि ।

শুনিবা ছুটিব কথা, কুটিবাল বত। গালে হাত চিৎপাত প্রাণ ভটাগভ ॥ বিশেষতঃ দূববাসী, পাডাগেঁছে যারা। দম্বেটে সাবাহয়, মারা যায় তারা ধবিবাছে ছটকট, যায মাজ কৃটি। বাব মাস কইভূগে, অষ্ট দিন ছুটি ঃ বাটা আনা আনা মনে, কত দিন ভাগে। পুরাবে মনেব সাধ, কত অনুরাগে। কে কবে হাজাহ হাট, মুখে নাই বব। আট দিন ছুটি ভনে, বাঠ হোলো সব ঃ প্ৰিল মাধাৰ বাভি, ৰাভীৰ ব্যাপাৱে : व्याव कारवा बाफि माहे, कमी व्याकदारत । চোকে দেখে অন্ধ্ৰাৰ, হাৰাইল দিলে। বেতে বেতে আশা ধাব, আসা ধার কিনে : वार्रक बरहे ब्रद्धानारका, श्रृतिरदना आना। ত্রীপদে প্রণামি দিবা, ওধুমুখে খাসা। কাবো কাবো ভাগ্যে হবে, মিছে ছুটাছটি। যেতে যেতে পথে পথে, ছুটে যাবে ছুটি। नाहि वटव खबारम, निवारम नरह रवांत्र । ছবিশুক্ত বাজাব, বেমন **স্বর্গভোগ**।

(नवर) ब्राह्मण (महन, इव न्हें।न्हें। বুটি গিলাছঃখে কবে, মাতাকটাকটি। এক দত্তে আছে কেহ, নয়ন মেলিয়া। থেকে থেকে হাঁপ ছাডে, নিশ্বাস ফেলিয়া। বেহ বলে বাপ কত, কবিষাটি পাপ। য**র্বা**নাশ হোক, বোলে, কেছ দেয় শ<sup>\*</sup>াপ 🛚 কলমেব সহ নাতি, বোগ কবে কালী। ভেঁবে ভেবে কালী হয়, বলে কোলা কালী s হায় হাৰ এই ভাগো, ছিল কি আমার। ওমা তর্গে, যোর ভর্গে, ফেলিলে এবার । তোমার পূজাব কালে, ঘটল প্রমান। বিফল হইল সব বছবেব সাদ 🛭 তবে বল দ্যামলী, বেঁচে কিবা সুখ ? নেখিতে পাবনা আব, স্ত্ৰী পুদ্ৰেব মুখ। ব'ঝতে না পারি কিছ, বিশেষ কাবণ। ক্রিন করিলে কেন, কোম্পানির মন ? বিলাভী ৰণিক বত, এতে নয় মেল। মেল মেল বোলে সবে, কোবেছে বেমেল & সে মেলে, সে মেলে কিনা, আদে যে ফি মেল। মেল হোষে এবাব কি, পাবোনা বিষেশ ? ফিমেল বাজোব কর্ত্রী, এই *দেশ* ভারে। অতএব মেলের কি, ধারি বল ধার ?

কেই বলে মেলেব কি, দোষ আছে ভাতে। পোকেছে বাজ্বোৰ ভাব, পিদীয়াৰ হাতে 1 সাহস ভবসানাই দুশাবটে নব। কোনদিকে ছোট নন , ছোট গ্ৰান্ব । ছোট বভ ছই তুলা কেহন্ম লঘু। একজন বৰ বিবী আহাব জন ঘুঘু। কেহ কম ভন ভাই, অংমাব বঁচন। বড বড খেতকান্তি, আছে যত জন। তাদেব নিকটে গিষা, কৰি নিৰেদন । তবেই হইবে গ্রাহ্য, এই আবেদন । চেষ্টার বেণিতে হব, বেমন বিভিত। दिन किन दिन दिन दिन दिन कि । আৰ জন বলে ভাই, এমপে কি পাৰিব ? যেওনাবে বাপ বাপ, সেধানেতে চার্কি। আপনি মবিবি প্রাণে, আমাদের মার্কি। চাকবির দফাটি কি. একেবারে সাঞ্জি ? কাচ। থেকো বে চা দেটা, কাছে খেতে নান্ধি। হার বিবে, হাববিবে, হাববিবে হাব বি। ক্লেছ কছে ছাব্বি কি. ছাব্বি ধরিনে। 'দবিনে' ভরিনে আমি ভরিনে' ভবিনে # ভালভোদী ভাবে বলে ভালে ভৌদ কব। বতদিবে বত আছে, দালপালা তাব।

এডাল ওডাল বেখ, বহু ডাল আছে।
বলহে কদম মাত্ৰ, মূল বাহে গগছে।
অনুল বৰিবা বদি, মূল বাহে ধব।
বৰা বাং, বালীবাং, ধবা আছে ধব।
বেধাপক্ষৰ কহু, এবণ পকাব।
কেনকালে পাইল সাত্ৰিক সনাতাৰ।
উপ্ৰোগাগত পক্ষ হোবে পক্ষ বন্ধ বাং
এক পক্ষ চুটি পোনে, মূলে বেল মানো।
তক্ষ পক্ষে কুটি পোনে, মূলে বেল মানো।
তক্ষ পক্ষে কুটি পোনে, মূলে বেল মানো।
তক্ষ পক্ষে কুটা পোন, মূলৰ বান মানা।
আপাৰি অতীত লাহি, এবন কি হয়।
তম্ব নাই, হটবে না হইবাৰ নয়।
আপাৰীবাং বোৰে সাবে সুকুল্যৰ কয়।

() মৃত বাবু রামগোপাল ঘোষ।

জয় জয় জয় বামগোপালেব (১) জয় ॥

# তৃতীয় খণ্ড।

### যুক্ত।

### সিপাহী যুদ্ধে শান্তি প্রার্থন।

ਵਰ ਵਰ ਵਰ ਜਾਂ ਉਸਦਾ ਬਤੀ। হৰ হৰ হৰ ন ২ বিপক্ষেৰ জন व्याव तान नाहिशांत्र, (कानक्रश नात । শহাপ্রছারখী হোক শোমার রুগায় পোকাশ কবহ প্রভাস্থিমল মেহ। নেন আবে বাধায়ার নাজি করে কেন। অভাচাৰ কৰিবতদে, মত ছবাশ্য। তাদের পাপো - বি. কত আবে স্থ / ধন, প্রাণ মান আদি, সব স্য লোগ ভাবভেব প্রতি নাথ, এত কেন বেশে <sup>9</sup> যদাপি হোবেল্ছ কোপ, কর পবিলাব দৰে জানি কুপামা করণা ে গমাব। ভটলে মহমাচাৰে কলছ প্ৰচাব। দয়ামৰ নাম তবে কে লইবে আ'ব গ লৰ দিকে বুজাকৰ, এই ভিকাচাইৎ क्लाकाडे क्लांकाडे साथ. क्लांकाडे क्लांकाडे **श** 

করণাকর ছে, করণা কর। হব ∉জ'সভল, বিপদ হব ॥ প্রশক্তি কবি ছে. চবণে ভব। প্ৰণত পতিতে, প্ৰদন্ন ভৰ। সকলি দেখিছ, হৃদযে বৌদ্ধে। বিভিত্ত কবহ, সদম হোয়ে। তোমাৰি চবণ, শ্বৰণ কৰি। তোমাবি ভাবনা ধ্যানেতে ধবি ॥ কাত্তরে তোমাবে, অস্তবে ডাকি। মনেব বিষয়, মনেতে বাখি ৷ ধব তে আপন, প্রভাব ধব। কৰ ছে বিহিত বিচাৰ কৰ। পালন শাসন, ভূমি এ ভবে। নামেব মহিমা, রাখিতে হবে। পমেব পাত্ৰী, পাষ্ট মত। পাপেব ঘটনা, কবিছে বত। অদোৰে হইরা, কুপথে বস্ত। বমণী, বালক, কবিছে হত চ ক্ষমিয়া ৰধিব, হতেছি কাণে। সংহলা সংহলা, সংহলা প্রাণে # এ সব দেখিবা, ছোষে পাবাণ। কেমনে দেহেতে, ধরিব প্র'ণ ?

দেখিতৈ বিছুতো, নাহিক ব'।বি ।
তপন শশাহ, চে'মাব অ'।বি ।
আীবেৰ অন্তবে, দে বিছু আছে।
সে সৰ বি দত, ভোমাৰ কাছে।
অন্তব বাচিত্ৰ, অধীপ হোবে।
কিবপে এখনো, ববেছ সোবে দ

### বিলাপিনী ছক।

দ্বাবান, ভববান, দ্বা দান, বন ।

দিয়ে মন্ত্র সমুদ্রে, শক্ষেন্ত্র, বং ৪

স্বাকার, কৃমি সারর, মুশাবার, হবি ।
কোথা নার, ভ্রমারার, বরি ।
প্রতিক্রণ, আন্যাতন ছবে মন, নতে ।
বার বার, অনাচার, বক্ত আরু, নাতে দি
তোমা বই, কাবে বই, হোরে বই, বুর, ।
অনিবার, আন্যান, শাক্ত শাল, মন্ত্র ।
বরি বিলে, লাখা গরে, চল্লী পাল ধবি ।
কাতীকার, বর ভার, ভবিচার, কবি )
ক্রেবর, মন্ত্র আরু, অতি ৭র তালে।
ববারর, বর বর্ব, বোবতর লাপে ।
বর্বারর, বন্ধ বর্ব, বাবিদ্যুল, দাপ ।
চল্লল্য, উলম্বন্ধ্য ধ্রহিল, কাপে ।

প্র মান, অন্তর্ক, বাস্কুল, বা হা সমুক্তর শাক্ষর, তাবে হব, শাবে ।
আনি ক্ষীব্য, জ্ঞানহীন চিবাল ন, বা বা ।
নেবে নাগা, কোবে পাগা, দেব চাগা পা আছে চাবী, বজাবাবী, অসুবাবী, বল ।
আবেবাবে, এএবাবে, বাল চাবে, বল চাবে, বল চাবে, বল কাবে, বল কাবে, বল বাবে লি কাবান, সেনাগাল, বামাবাবান, নাশা ।
জ্ঞাবৰে, ক্রোবানে, প্রভ্রুবি, শাবে ।
বে বি হত্ত, কং কিছে সমুক্তি, বল বা বে হত, কং কিছ সমুক্তি, বল বা বি বি বল কংকি কাবিবালে, প্রভ্রুবি, শাবে ।
বে বি হত, কংকি হত সমুক্তি, বল ।
নিভবনে, ভ্রুবিবে, বসাতবো, বেহ ৪

#### নানা দাহেব।

নানাব, বি, নানাবেলে আছো আছে বন ? নানাব, বি, নানাবেলে, আছো আছে চন ? নানাব, বি, নানাবেলে, আছো আছে মন ? নানাব, বি, নানাবেলে, আছো আছে পা নানাব, বি, নানাবৈলে, আছো আছে তাব ? নানাব, বি, নানাবৈলে, আছো আছে তাব ? প্রকাশিছে পাগপছা, চোবে পরী ' চুচু, ।
চু মাবিতে জানে গুরু, বটে তাব ' চুচু, ॥
নানা পাগে পটু নানা, নাহি গুনে না না।
অববেৰ জন্ধবাবে, হুটবাহে কাণা এ
চান বোৰে তাল ভূমি, খটালে প্রমাণ।
লাগেতে দেবেছ গুৰু, বেধে বেধা গা।

# কাণপুরের যুদ্ধে জয়।

রেক্তাচ্ছন্দ। (১)

বাজী বাও পাসা বিনি বাজী বাও পাসা বিনি, সাধু তিনি, মানা নানা মতে। মহাবাই, মহা বাই, পূজা এ জগতে। তেতে সে নিজ দেশ, কেতে সে নিজ দেশ, বাজবেশ, বাচিবার জবে।

( ) এই চনটা অক্ষণত নহে মাত্রাগত। ছুই দত বংগৰ পূৰ্ব্ধ ংই স্পষ্ট তয়। পৰ্যতন লোকেয়া ট্রকেনায় ও কাভায় বান্যতালে এই ছন্দ পাঠ কবিতেন। আবাসমপ্ণ বাং বিটী সংকাশে॥
,হাংশ সে গুণ্ইত,
হোনে সে প্ৰতঃ, কুম শত কাংকিক সাম ।

ক্ৰেৰণা।

ম টকুডোৰপণা , চাং নাসভান।

কোণাবাসম বা
বোধাবাসম বি বা সাপ,
পুৰু শোষ বি বা বা

ক'কেব বাসায় নথা, কেবিশ্বৰ চালা সেটা লেগপুষা এলে দেটা ভোপুয়া এলে দ্বিয়া ভিছে, দুসা বং আলে।

টিঠে শানে পত্তি খেন, না কবিতে পাবে 』 নানা, কি নানাকেলে, নানা কি নানাকেলে সভা পেলে, চাটতে এক কবি ?

যাচা স্থেক্তা ভাচা কৰে চোৰে স্থেক্তাচা<sup>ন</sup>। তেলে সে পানাৰ ভেলে ভোলে সে পানাৰ ভেলে, চানাৰ চেলে কেন ভবে চলে ?

হোবে কাল বামা, বাল নাশে নানা ছলে। বেংলো সে হোলোট হিন্দু,

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

238

হোলো সে হোলোই হিন্দু, লোহৰৰ সিদ্ধ, দুৰ্বানলে গহে। -গলে দোলে গাগেও হ'ল, বাংগৰ পুত্ৰ নহে। সেটাতো একা নহ, সেটা তো একা নহ, ভাই ভাব ভোগান।

পথে পণে মেণে থাবে, হাতে কোবে থোলা ১ ৰড সে পূৰ্ত হীদা, ৰড সে ধূৰ্ত হীদা, দেবে গাধা,

বছ সাদাৰ ভিতে।

"একা বামে ৰক্ষা নাই, কুঞীৰ ভাব মিতে"

ভূটেছে সমান ছটো,

ভূটেছে সমান ছটো,

কোৰ্দ্তে চবে শেষে।
গলে দড়ী, থেষে চভি, ফিৰ্ফে দেশে দেশে ১
কোণাকাৰ হৰিব বুডো,
কোথাকার চৰিব বুডো, মেবে হড়ো,

প্ট'ডো কোরে দেহ। বংশে বেন বাতী দিতে, নাহি থাকে কেহ॥

ভারা, বে পছী চুচু, ভারা, বে পছী চুচু, ঘবে চুচু,

চারা, যে পছা চুচু, মবে চুচু: গেশ ছাবে ঝারে। হাতে মাটি, বাঁড়ে দুৰ্ব্ব, হোলো একেবাৰে । বিশ্বরে আব কি আছে : বিশ্বর আব কি আছে, নানাব কাছে, নাইক কাণাকতি।

আতঃপৰে অন্নভাৰে, বাবে গভাগভি। ছিল বাব বস্তু বত,

ছিল বাব বস্তু বঙ, ক্রমাগম, গোবা নিলে লুটে।

কোৎকা থেবে, হৌৎকা এঁড়ে হান্মা বোলে ছুটে। হোডৈছে হতভোৱা

েলবেছে হতভোমা, অষ্টবস্তা,

নাহি মাজ চাকি। সবে কনিব সন্ধা এই, কত আছে বাকি॥

কোবেছে বেমন মতি,

কোরেছে ধেমন মডি, তেমনি গতি, শাস্তি,আতে জাঁতে।

অবর্দ্ধ বৃদ্ধের কল, বলে হাতে হাতে 1 ছেডে দেও বামুন বোলে,

ছেডে দেও বামুন বোবে, টোলে টোলে ধবি পদতলে !

থাৰ্ভা মেৰে, হাৰ্ভা পথে, চালান দেহ জলে। যদি ভাই আমবা ছাডি,

### কবিতা**সংগ্ৰহ**।

2.55

যৰি ভাই আমৰা ছাডি, মাডামাডি, কোৰ্ম্বে গোৱা সৰে। বাংঘৱে গোছতা ভদ্ধ, কে তানছে কবে গ নানা, না, গাগী নানা,

নানা, না, পাণী নানা, বথা নানা, নানা, না, পাণী নানা, বথা নানা, বথা তথা নানা-তথা, হেডে সবে বেহ । বেখনী থাকো থেমে, লেখনী থাকো থেমে,

মন্ত হোতে হবে।
কুমার সিংহেব কথা, লিথি কিছু তবে ।
সেটাতো কতক ভাল,
দেটা তো কতক ভালো, ধর্ম-আলো,

কিছু আছে বটে।
নাবীহত্যা শিশুহত্যা, কবেনিকো বটে।
তবুতো অত্যাচাৰী,
তবুতো অত্যাচাৰী,

বোল্ডে তারে হবে।
রাজ্যন্ত্রী মহাপালী, কবেই ববে সবে।
হোমে সে রাজ্যন্তান,
হোমে সে রাজ্যন্তান, সন্ধীনাভা,
ক্রমা ভিলে পাবে?

বর্ম্ম লোষে, ধর্ম্ম দোষে, অধঃপাতে বাবে। ছোট ভাব সিংহ অমব, ছোট ভাব সিংহ অমব, সে কি অমব ? গোমৰ কৰে কিলে ' চামর হোবে, কোমব বেঁধে, সমব কবে কীসে! হবে তার মথেব মত. হবে ভাব মধেব মত, গোরা যত, শান্তি দেঁৰে কোমে। এক চাপতে অস্ত বাবে, দক্ত বাবে খোলে। মৈতেছে মান সিং মেতেছে মান সিং, নেডে সিং. কিং হবে বোলে। কুর্ত হোমে ধুর্ত যান, অভিযানে গোলে। হবে শেষ মানসিংহ, হবে শেষ মানসিংহ, প্রাম-সিংহ. ৰনে বনে থেকে। হন্যা হোষে মোৰে যাবে, খেউ খেউ ডেকে.৷ থেকে, সে অনুগত, থেকে, সে অহুগত, পাপে বত, वृद्धि (शास मद्र ।

থানা কৈটে লোণা জন, চুকাইল ঘৰে । এত ভাই বহু মন্ধা, কবিতাসং**গ্ৰহ**।

222

এক কাই বন্ধ মন্ধা, হোবে অজা, বাহেব মুধ্যে চবে।

পি নীডা ধৰেছে ভানা, মবিৰাৰ তবে । হাাৰে কি তুনি বাণী /

হ্যাদে কি শুনি বাণী, ঝাসিব বাণী, ঠোটকাটা কাকী।

ঠোটকাটা বাকী। দেশে চেশনে, দেনা নিৰে, স'জিবাছে ন'বি নানা ভাব খবেৰ চেকি

নানা তাৰ দ'ব টেকি, মাণী থেঁৰী, গোৰণলেৰ দলে।

এত দিনে, ধনে জনে, যাবে বসাতলে॥ গোষে শেষ নানাব নানী,

ছোবে শেষ নানাৰ নানী মধে বাণা, দেখে বুক স্বাটে।

কোম্পানিৰ মূলুকে কি, ৰগিণিবি থাতে ' বভ সৰ ধেজে ধেজে, বজ সৰ ধেজে ধেজে ভাণলদেজে.

বত সব ধেডে ধেডে ছাণলদেডে, নেডে পানে ক্লকে।

চোডে ঘাতে কোনে দেও, হাতে হাতে ঠুকে।
পশ্চিমে মিষা মোলা,
পশ্চিমে মিষা মোলা, কাচাথোলা,

শ্চমে নিয়া মোলা, কাচাথো ভোবাতালা বেংলে। কোপে পোতে, তোগে উতে, বাবে সব জোগে ॥
কেবলি শব্দি তেতা,
কেবলি বহি তেতা, বাহে তেতা,
নেতা মাধা গত।
নবাধম মীত নাই, নেতেধেৰ মত ॥
শেষ মীত নাই, নেতেধেৰ মত ॥
শেষ মীত নাই, নেতেধেৰ মত ॥

বেন ঝ ল লাং পেন্দা আগো গোচা,
নটা মঠে কগা।
চেনি পোৰে চচে বোদে, ধৰা দেখে সৰা।

তাব। তো কেনে চে বান্ধ্য নেবে প্রা তাব। তো কেনে চে তা নেন বোডা, লিকে এনো চক।

একরন্তি বিক নাহকে। কুলোপান) 52**ক ॥** স্ব'ছতে মত পোবা,

সাজবে বত গোধা, মেৰে হোপা, তেন্ডে ধৰো নেছে।

তক্ত নৃটে, শব্দু হোবে, বব্ধু খণ্ডি । যতপাও, খেবে সেবি,

যত পাও, খেষে সেণি, কোষে মেৰি, গাত্ত হণতে বোৰে।

নাচ নেচে মধে বা 'হিপ হিপ্ছোবে'। এ শীলে বভ সাথি এ শীতে বত ঠাতি, বন বাতি,
বিছু বিছু বেবে ।
মনেব জানজে হেও ইত-গুণ গেগে ।
পূচিল শক্ত-তৰ, বৃহদ্ধ জব,
জব সেনাপতি ।
বিবিদ্যান বাহুবলে, অগতিংগতি ।
বাণিশেন বাহুবলে, আগত মার্চ

বাধিনেন ব্যাহ্ণ গড় ।
বাধিনেন ব্যাহ্ণ গড়, থাহে মর্ড
কনিন কাবেশ।
সাধু, সাধু, সাধু তুনি, বিপাবেল ধেন ॥
কোণা মা ভগবতী,
কোণা মা ভগবতী, কনি নতি,
আধানী বা দিয়া দ্যা।

अरकदारद **अक्रकूर**ल, रकारव मां ९ गया श

## **मिल्ली**त युक्त।

ভাবতের প্রিয়পুত্র, হিন্দু সমূদর। মুক্তমুখে বল সবে, ব্রিটিসের জয়। জয় জয় লগদীশ, করুণানিধান। কুপাময় কেহ ন্য, ভোমার স্মান। কুঞ্চনেৰ কছাদেশে, কুবুদ্ধি লইয়া। সেনা যাকা কেপেছিল, বিপক্ষ হইবাঃ ধবেছিল রণবেশ, হোবে বলবান। হোবেছিল প্রজাদেব, ধন আর প্রাণ । বেবেছিল চারিদিক, দিলীব ভিতব্। মেবেছিল সেনাপতি, বিস্তাবিয়া কব। বিশাল বিজ্ঞাহ দেখে, কবি হার হাব। কাতৰ হইবা কত, ডেকেছি ভোমাৰ # অপার কুপার নিধি, তুমি কুপামব। व्यामारमय कृश्य स्मेर्ट्स, इट्टेंस्न मनव ॥ তোমার কুপাব হোলো, শক্ত পরাজয়। কিছুনাই কয় আর, কিছু নাই ভয়। পুডুক বিপক্ষদন, মনেব অননে। উড्के द्विष्टिन श्रद्भा, मश्रम्य करन । ঝুড় ক ভুটের মাথা, বাবে বথা পাবে। কৃত ক্ কুড ক্ করি, গুডুক্কে থাবে ?

ধুড়ুক ধুকুক্কোদে, তোপ্দিলে দেগে। ভুড়ুক্ভুড়ক্সৰ, ভয়ে গেল ভেগে 🏻 সিংহনাদ ভবে গেল, একে একে সোঁবে। ষেষ্ট ষেউ, ফেউ ষেউ, কেউ কেঁউ ববে 🏻 শরদের মেধ সম, ডাক্ডোক্সার। প্রভাকর প্রভাবেতে, কিছু নাই স্থাব। ইংরাজেব পরাক্রম, রবির প্রকাশ : অজাচার-অক্কার, চটল বিনাশ ঃ নিজ নিজ কার্য্য তর, কবিয়া ঘর্ষণ। দাবানলে দগ্ধ ছোল, বিপক্ষের বন 🛚 "ছোবা" মেরে গোরাগণ, ছটিল যথন। সামাল সামাল রব, উঠিল তথন চ পলাতে নাপথ পায়, নাহি সহ বাজি। উঠে ছুটে পলাইব, মুখে কোরে ল্যাল দ মেও মেও ডাক ডেকে, বিল্লীর সমান। দিলীৰ প্ৰদেশ ছেডে, করিল প্রস্থান ॥ পূর্ববং পুনর্বার, নাহি আর দায়। প্রণাম তোমায প্রত, প্রণাম তোমার॥

প্রতি কল পেলে ভাল, হাতে হাতে ।
ঠেকাঠেকি ছোলে পেল, পাতে পাতে ছা
উছে পেল কত লেনা, পোলাঘাতে ।
বনে বনে মিবিতেছে, পোলা হাতা ।
ধরে ধবে তম পেলে, মরে আলে ।
সাগা কিবা লোকালতে, সুন আলে 
কবিরাছে মছলক, ছুর্জাঘালে ।
পশুসহ পত হোলো, বনবালে ।
ধরে তোবা নবামন, বত চুই ।
কাব বলে হোছেছিলি, এত পুই ?
যত মুচ নিজ পলে, নহে ছুই ।
চিরবাল ভালে, বন, দহে ছুই ।

#### আলাহাবাদের যুদ্ধ।

বাংগাতে চিল বহু, বিজাবের নল। বাংলাতে চিল বহু, বিজাবের নল। বাংলাহতবল । অধিকার কোবেছিল, তরবির সেতু। হবেছে তালের তাল, মরণের হেতু। অ্বনিধাটে বুলি থেকে, মাহা বাধ প্রাণে। ছাবধার হইবাছে, অনলের বাণে। অধন পোরার মুখে, এই মাত্র কথা।

প্রাণে মুড়াহে মাধা, বাংলাহাবাং। ।

#### আগরার যুদ্ধ।

আগরার নাগবাব, মাবিয়াছে কাটি। बीवनात्य नायिवाद्य, कायिवाद्य मार्डि । চক্রবোগে বভবর, কবিরাছে যারা। ভব পেয়ে কোনখানে, ভাগিয়াছে তাবা। হেলা কোৰে, কেলা লুঠে. দিলিব ভিতৰে। জেলা মেরে বেডাইড, অহস্কার ভবে। এখন সে কেলা কোখা, ছেলা কোখা আব ? জেলা মেৰে কেবা দেব, দাভিব বাহাব ? ছেডে পালা, বলে আলা, পডেছি বিপাকে। কাছাবোরা যত মোরা, তোৰাভারা ভাকে ৷ সবাব প্রধান হোমে, যে তুলেছে খডি । দিলীর হুর্গেতে চুকে, গুণিয়াছে কড়ি k হইয়া হজুৰ আলি, হাতে নিয়ে ছডি। কুবেছে হুকুম জারি, তাজি ঘোড়া চঙি। নিদয় স্বভাব ধবি, ধনাগারে পড়ি। লুঠিয়া করেছে ভঙ, যত ধন কভি। মনে মনে লঙা ভাগ, আঁক দিয়া পড়ি। তাকাবেছে চারিদিক, পাকায়েছে एভি ।

মনোবাজ্য কৰি আগে, বে ৰাজালে দামা। রণঃক্ষ দেখাইল, ছুভে চিল, ঝামা । ধরিষাছে বাজবেশ, পোবে টুপি, জামা। কোণা সেই কালনিদে, বাবণেৰ মামা ?

# যুদ্ধ শান্তি

ভয় নাই আবে কিছু, ভয় নাই আব। ভুত সমাচাৰ বছ, ভুত সমাচাৰ 🖠 পনৰ্ব্বাৰ হট্যাছে, দিনী অধিকাৰ। "বাদশা, বেণম" দোঁছে, ভোগে কাবাগাব 1 অকাবণে ক্রিয়া বোবে, কোবে অভাচাব। মবিল ভূদন তাঁব, প্রাণেব কুমাব। ছেলে মেয়ে আদি কবি, বত পরিবাব। দিব।নিশি কবিতেছে, শুধু হাহাকাব ॥ কোথা সেই আন্ধালন, কোথা দরবাব ? হাডে মাটী, বাডে ছকা, হোবে গেল সাব ৷ একেবারে ঝাড়ে বংশে, কোলো ছাবথাব। শিশু সুৰ মাৰা যাবে, বিহনে আহাৰ ॥ एटव थाँक সমুদয়, সম্পদ সঞ্চাব। পড়িবা ব্রিটিন কোপে, প্রাণে বাঁচ, ভাব 8

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

226

লোবেছিল যে প্রকাব, বিষর বাণাব !
হাতে হাতে প্রতিকল, দোলে গেল ভাব ॥
অদ্যাণিও ববি, শানী, হতেছে প্রচাব ।
অদ্যাণিও বব এক, কবেন বিহাব ।
তিনি কি কথনো সন্দ, এত পুণ ভাব ?
কোণা বীনদক্ষাম্ব, সর্ক্ষ্যাবাব ।
আহা আলা, মবি কিবা, ককণা তোমাব ॥
অন্তবীমে থেকে সব, কবিছ বিচাব ।
তোমা বিনে কব দানে, দাধ্য আছে বাব ?
স্মৃতিত শান্তি পেলে, যত ভবাচাব ।
অতব তব পদে, ববি নমন্তার ॥

বনুনাৰ জল মাৰ, পূৰ্ধবিং নাই বে।
হবেছে মদিবে ভবা, বেখনেতে নাই বে ?
হুকাম দো জল মাৰ, কেমনেতে ৰাই বে ?
ভাসিছে ভাগতে সব, সব ঠাই ঠাই বে ॥
ঝাণা দিবে মনিতেছে, সবল সিপাই বে।
ঝকল ওকুলে ভাব, ভম্ম মাৰ ছাই বে ॥
কুকুব সুগাল হেবি যে, দিবেতে চাই বে।
কুকুব সুগাল হেবি যে, দিবেতে চাই বে।
কুকুব সুগাল হেবি যে, দিবেতে চাই বে।
কুকুব, গুধিনী উভে, শক্ষু গাই গাই বে।

সাঝাদার শোণিডেতে, মিটে গেল খাঁট রে। থেযে সব পৰাভব, মেনেছে সৰাই বে। ম্বলে খলে মৃতদেহ, পর্কতেব চাঁই বে। প্রাগন্ধে নাক জ্বলে, কোথায় দাভাই বে গ মলহীন একটুকু, স্থান নাহি পাই রে। কোলা থেমে, কোলা ভবে, স্থাধ নিক্লা বাই বে ? স্থানিকে সম্দ্রণা, কোন্দিকে চাই বে? এদেশেতে নাহি দেখি, হিংদাহীন ঠাই রে। যদনাব ভটে এদে, যদনাব ভাই রে।(১) বিকট বদনে এক, বিজ্ঞাবিল হাই বে ৷ शाथ शाथ धर्मावास, विन्हावि यहि (व । বুচাইল বঁট বিছু, আপদ বালাই রে। ব্ৰিটিদেৰ জন্ম জন্ম বল সৰে ভাই বে। এসো সবে নেচে কুঁদে, বিভুগুণ গাই বে ।

### চ্তুৰ্থ খণ্ড।

রাজনৈতিক।

# ব্রিটিস-শাসন।

অসুগত বাজা যত, অধীনেতে রয়। ভাদের বিষয়ে বেন, লোভ নাহি হয়। করণা-ভরুব তলে, বাস কবে যাবা। নিতা**স্ত আ**ত্ৰিত অতি, নিৰুপাৰ তাবা ॥ ঈঙ্গিত কবিলে বাবা, উঠে আর বদে। নত হোষে সন্ধি করি, সদা আছে বঁশে ॥ তাদের নিগ্রহ কবা, উচিত কি হয় ? বাজধর্ম নয়, সেতো, রাজধর্ম নয়। রাজা হোরে এরপ, অন্যায় যেই কবে ৷ ভবেৰ ভাণ্ডার তার, অপ্যশে ভবে ৷ রাজ-বল, বড় বল, তুল্য যাব নাই। শাস্ত্রবল, শস্ত্রবল, ছুই বল চাই ঃ ক্ষিভিপতি হইবেন, পণ্ডিত-মৃত্তিত। করিবেন স্থমন্ত্রণা, মন্ত্রিব সহিত 🛭 মন্ত্রী হবে ধর্মাণীল, সাধু স্থভাজন। মস্ত্রণা করিবে দান, ধর্মে বেখে মন ॥

সভাসদ কুলীন, পণ্ডিতগণ যত। সেই মতে সকলে, দিবেন অভিনত। জবে কবিবেন বাস্থা, সে মুক্ত চলিক। বাজা প্ৰজা উভয়ের, হবে তার হিত। অভিবৃ**ষ্টি, অনাবৃষ্টি, শুকো আ**ৰ হাজা i এ সকল বিবেচনা, কবিবেন রাজা। যেবাব বেমন হবে, শস্যেব সঞ্চার। সেবার লবেন কর, সেত্রপ প্রকার 🏾 চাসার আশার ধন, না ফলিলে ক্ষেতে। কেমনে রাজস্ব দিবে, নাহি পার থেতে? কর নেয়া বিধি হয়, একপ বিধানে। চাসা আৰু ভূমিস্বামী, বাহে বাঁচে প্ৰাণে ! কর পেতে, কর পেতে, থাকুন ভূপাল। (म क्व नां इव खन, विषय विशाल । পাইতে বিলম্ব হোলে, করম্বপ নিধি। প্রচার না হব বেন, ববি অন্ত (১) বিধি ঃ কৃষিৰ কুশল বাহে; নিরন্তৰ হয়। সেইদিকে নুপতির, নেজ্র যেন বয় 🛭 ভূমিতে হইলে শস্য, গাছে হোলে ফল। নানারপে হয় তাব, দেশের মঞ্জ ।

<sup>(&</sup>gt;) त्रवि वल-सभीतात्री नीनारमद्र व्यारेन।

সকলি সুলভ হয়, কৃত ভায় সুথ 🛭 বাজাব বাজস্ম লাভে, ব্যাঘাত না হয়। প্রজা আর কুষকেরা, স্থিব ছোরে রর। ্ ৰণিক বাণিজ্যে করে, বিশেষ ব্যাপার। শ্রমজীবি জনেদের, আনন্দ অপার। পরস্পর বিনিমধে, বেডে যায় ধন। সে ধনেতে হয় কত, কল্যাণ সাধন ৷ কতলন পেরে ধন, ধনী হোতে চার। ধনেভেই ধন বাডে, ক্ষির ক্লপাষ ১ সে কসনে কুশরের, দীমা নাই আর। খুলে যার অনেকের, ভাগ্যের ভাগ্যার। স্থাদেশের লোক সব, বাহু তুলে নাচে। বিনিময়ে পরস্পর, কত দেখ বাঁচে ॥ বাণিজ্য ব্যাপার তার, বেডে যায় কত। অমুবাগে সৰে হব, পরিশ্রমে রভ 🛭 'রাজা হোলে ধনশানী, অপার কুশল। প্রভার মঙ্গলে হয়, রাজার মঙ্কল। ক্ববিকার্ব্য করি ধার্ব্য, প্রথমে ভূপতি। পরে করিবেন দৃষ্টি, বাণিজ্যের প্রতি। বাণিজ্যবিহীন রাজ্য, শোভা নাহি পায়।

বৃদ্ধি হোলে ৰাণিজ্যের, কত হুথ ভায়।

(व मिट वार्गका नांहे. तम मिन कि मिन ? দেশে নাহর কভু, লক্ষীর প্রবেশ। যে দেখেতে বণিকেব, বাবদা না চলে। লক্ষীছাডা দেশ তারে, সকলেই বলে॥ কতরূপে উপকাব, একরূপে নম্ব। "বাণিজ্যে বস্তে লক্ষী" শাল্পে এই কয় 🛚 বিদেশে বিনোদ বস্তু, বিবাজিত হত। দেশে বোদে দে সকল, হয় হস্তগত ॥ পরস্পর দ্রব্য যত, করি বিনিন্ন। কোনজপ জিনিসেব, অভাব নাব্য ৷ কোন্দেশ কত দূর, কিরূপ প্রকার। কিরপেতে প্রজাগণ, চালায় সংসাব 🛭 রীতি নীতি, ধর্ম কর্মা, আচার বিচার। কিন্নপ স্বভাব ভাব, কিন্নপ ব্যাভার 🛭 কিসেতে নির্ভন্ন করি, কাল করে গত। আমাদের সহ তার, ভেদাভেদ কত ৷ এইরূপে সমুদ্ব, হোয়ে অৰগত। বল, বন্ধি, সাহস, সভাতা, বাডে কত # কতরূপ দেশভাষা, করিব। প্রচার। বিধিমতে বছবিধ, বিদ্যার বিস্তার ॥ বিদেশের সবিশেষ, জেনে ইতিহাস। স্থদেশে কবিবে স্থাৰ, পুস্তক প্ৰকাশ।

বে বেশেব ভাল বাহা, করিয়া সংগ্রহ।
ব্যবহারে দূর হবে, দেশের নিগ্রহ।
এ দেশের বে সকল, উত্তম হইবে।
উপবেশে বে বেশেতে, প্রচার কবিবে।
এইবাপে কুইলেব, না রহিবে সীমা।
দিন দিন বৃদ্ধি হবে, রাজাব মহিমা।

ব্ৰহ্বলৈ কুশনেব, না বাহবে সান।

নিন দিন বুছি হবে, রাজাব মহিনা ব্র
কবিবন বণিকেরে, বিশেব সাহার্য।

রাজা বেন আগনি না, কবেন বাণিজ্য হ
বাণিজ্য কবিবে নারু, (২) সর্ক্ষণাক্তে কন।

রাজার বাণিজ্য বিবি. কখনই নয়

সাধুব সপ্তান সবে, রাজার আদেশে।

ব্যবসার বত হবে, প্রবেশ বিদেশে ।

বুপতি সবেন দান (২) বিধান প্রসাধে।

রাজার বাণিজ্য ভাই, নিবনে নিবের ৪

পুবিবীর চাবিদ্বি, চেরে বেপি ভাই।

সাম্বাম লাগবেদ্, তেবে বোৰ ভাই ।
ভূপানের সদাগরি, কোন দেশে নাই ।
বে দেশের রাজা করে, বাণিজ্য ব্যাপার ।
সে দেশের প্রজাপণ, করে হাহাকাব ॥

<sup>(</sup>১) সাধু—সদাগর, বণিক।

<sup>(</sup>২) দান-ভক, মাঙল, হাট বাজারের তোলা বা কব

প্রমাণ প্রত্যক্ষ ভার, এদেশে এগন। তোষ্পানিব "একচেটে" আফিন লবণ ॥ বাজাব অনাধি বোলে, গুজা ধাব মাবা। নীবৰ নয়নে ক্যালে, দর দব ধাবা । "মলঙ্গীরা" বেখানেতে, কবিতেছে লগ। সেই থানে গিয়া দেখ, নুপত্তিব গুণ। পাটনা প্রদেশে গেলে. দেহ হবে হিম। কেমন করিবা রাজা, নিতেছ আফিম ঃ এই মত ভয়ত্ব, বাজ-অভ্যাচারে। ছঃখী প্ৰাণী প্ৰস্থা আৰু, বাঁচিকে নাপাৰে। আহাৰ, ঔষধ, বাহা, স্বভাবে সম্ভব। ভাই হোগো নুপভিয়, নিজেব বিভব 🏾 একবার প্রজাব, নিকটে পেতে কর। রীতিমত লয়েছেন, যে ভূমির কর 🛚 সে ভূমিব জাত বস্তু, লোৱে পুনর্জাব। কবিলেন কররপে, ভাগ্তাবে সঞ্চার। যাহাৰ আহার বিনা, প্রজা বার মোরে। বাৰিলেন সেই স্তব্য, "মনাপুলি" (১) কোরে 🛭 ভূতে ভূতে যোগ ছোৱে, জন্ম হব বাব। ভাহাবে বলিতে হবে, ভৌতিক ব্যাপাব।

<sup>(</sup>১) মনাপুনি ইংবাজী শব্দ একচেটিয়া বাণিজ্য।

স্বভাবে উদ্ধৰ যাহা ভৌতিক ব্যাপার। সকল প্রাপির ভার, সম অধিকাব ৷ চমৎকাৰ স্থাবিচাৰ, রাজাৰ আমাৰ। কবেন "রাজস্ম ' বোলে, নিজে অধিকাব ঃ আমার বাডীতে মাট, বাডীতেই জল। আকাশের রবিকব, বাডীর অনল # প্রস্পর বোপাযোগে, ষ্দ্রি করি লুগ। হাতে দড়ি দিয়ে রাজা, মেরে করে থন a র্লি, কাঁথা লুটে লয়, যেখানে যা থাকে। পাটুনি আটুনি কোবে, কারাগারে বাথে । তথনিই পাজে টান, জমীদার গোবে। জমীদাবী বেচে লয়, জবিমানা কোবে ৷ লোভের কধীন হোষে, অন্যায় আচাব। এই কি উচিত হয়, ধার্মিক রাজাব? কিছুই উপাধ নাই, শাসনেব জোব। আপনি আপন ধনে, সাধু হয় চোব॥ অনুগত আশ্রিত যে, সৰ লোক থাকে। চাঁদের আশ্রয় দিয়া, অধীনেতে বাথে । এইব্রুপে উচ্চপদে, কর্তাপক্ষগণে। কর্ম দিয়া পাশিতেছে, শত শত জনে । রাজাব নিক্টে বেই, পবিচিত নব। ক্ষমতার নাহি পাব, রাজার আশ্রয় 🛭

ভাব আৰু নাহি হব, সম্পদেৰ স্কৰ। আপনাব কর্মফলে, ভোগ কবে চুঃথ 🛭 भागत है भाग हर भागत है य**न**। পদে নাথাকিলে তাব, কেবাহ্য বশ ? ক্ষমতায় বাজপদ, পাবাৰ কাবণ। প্রশার কবে ভাই, সমান গতন। কবিবেন দেখে বাজা, হৃবীতি ভাপন। সকলৈর হবে তাব, স্কভাব শোধন। কবিবেন স্বিশেষ, বিদ্যার বিধান। বিদ্যাবান হবে সব, প্রভাব সন্তান ৪ প্ৰস্লায় শিখিলে বিলা, ভাৰনাকি আবে। প্রস্পর করে সবে, প্রিষ বাবহার। বিদাং আনৰ নীতি গুণে, সাধুভাৰ ধৰে। কাবো প্ৰক্ৰিকেছ নাছি, অভয়ানাৰ কৰে ॥ রাজ্যের মঞ্চল তাব, অংশের প্রকার। কোনমতে নাহি হয়, শাস্তিব সংহাব ॥ শাস্তি হোলে সঞ্চারিত, নাবহে জ্ঞাল। প্রণয় প্রভাবে সবে, স্থাধ কাটে কাল ৷ স্থবীতির সমাগমে, স্থপ কর কত। কুবীতি, কুনীতি হয়, একেবারে হত 🛭 যে বাজাব প্রজাগণ, নীতিতে নিপুণ।

শিল্প আদি আৰু আর, ধরে বছ গুণ 🛭

## ক্**বিভাসংগ্রহ।** বিবিধ ব্যাপাৰে কবে, বিভিত্ত বিশেষ।

200

অর্পের সমান হয়, সে বাজার দেশ। নীতি আঁদি বিদাদান, কবিষা এথমে। विकारनव डेलानन, क्राप्त वशा क्राप्त । . ভূগোল, থগো**ল আ**ৰ, পদাৰ্থ নিৰ্ণয । জ্যোতিৰ প্ৰভৃতি আরো, শাস্ত সমূদৰ ৷ বিশেষত বৈদ্যশাস্ত্র, সকণেব লাব। ষাব চেবে শুভকৰ কিছু নাছি আবি ॥ অভুবত হোয়ে রাজা, পুশিষা ভাণাব। ক্ৰিবেন এ স্কল, শাস্ত্ৰেব প্ৰচাৰ। প্রজাদের জাতি, ধর্ম, আর কুলাচার। চিবদিন চলিতেছে, যেমন যাহাব । স্বিভাবে শা**নি**বোগে, সেইরপ বয়। তাহে বেন কোনরপ, বাাঘাত না হয় ৷ মার যাকা ধর্ম হয়, ভাল তাব তাই। প্ৰধৰ্মে পীড়া দেয়া, প্ৰয়োজন নাই ৷ আপনি পালন হাজা,ধর্ম আপনার। নিছ নিছ ধর্ম প্রভা, ককক প্রচাব ঃ প্রিক্রাণ ভাষ ভাব, যে ধর্মে যে থাকে.। সকলেই একভাবে, এক ব্ৰহ্মে ডাকে। ধিক ধিক অধীনতা, ধিক তোবে ধিক্। ফুকুবে কাঁদিতে হয়, লিথিকে অধিক 🏽

বোধ আর কোনুরূপে, প্রবোধ না ধরে। क्रमय विनीर्थ इस, मर्त्य शास्त्र शास्त्र ॥ •মনের যাতনা আব, ফুটে বলি কারে ? এরপ নাহয় যেন, কোন অধিকারে। কোথায় করুণ প্রভু, করুণানিধান। কক্ন রাজার মনে, বরণা প্রদান ॥ ঈদিতে আদেশ কর, বাজমন্ত্রিগণে। याजना ना त्मन त्यन, व्यवीतनत मतन । করুন করুণ হোষে, প্রভাব কুশল। হক্ৰ বাণিকা আদি, কুরীতি স্কল। ধকুন ভুকুণ ভাব, নাাবে হোষে বভ । কক্স উচিত দ্বা. অকণের মত ॥ তকন কল্প হোতে, কবি স্থবিচার। যথা বীতি কর লোহে, ভরুনু ভাগুাব । সমুদয় **বিৰয়েতে, আছি** পৰিতোৰে। কেৰল কাঁদিতে হয়, গোটাকত দোষে ঃ সেই গুলি হৈগলে পরে, বাম বাজা হয়। মুক্তমুখে সবে কবে, ইংবাজের জয়॥ প্রজাদের ব্যবহারে, করিয়া ব্যাঘাত। জাতি স্নার ধর্মনাশে, কেন দেন হাত <sup>9</sup> বথা ধর্ম সকলেই, করিবে আচার । সে বিষয়ে কেন হয়, আইন প্রচার ?

২৩৮

পূর্ব্বকার অঙ্গীকার, কুরিয়া বিনীশ। যম সম "লেক্সলোসি" (১) নিরম প্রকাশ। যদাপি করেন রাজা, অন্যায় জাচার। কিরপে প্রজার ভবে, রক্ষা থাকে আর? মনেরে বুঝাব আর, কাহারে বলিয়া ? রক্ষক ভক্ষক হোলো, "ভক্ষক" হইয়া 🛭 রাভাষ বিরভ হোলে, প্রতিজ্ঞা পালনে। তাহার উপায় আর, হইবে কেমনে ? কে আৰ শুনিবে দৰ, মনের বচন ? কাব কাছে ডাক ছেড়ে, কবিব রোদন ? ধর্ম ধন মহাধন, সকলের সাব। যার চেরে মহামূল্য, বস্তু নাই আব । ষার বাহা ধর্ম তাব, তাহাই প্রধান। ধন প্রাণ বড নহে, ধর্ম্বের সমান 🏾 কোট কোট প্ৰজাগণ, কেহ নহে সুখী। मत्राम প्रम वाथा, विविधित वृश्वी ।

 <sup>(</sup>১) 'লেক্ন্লোনি" স্বৰ্শ্বভাগিদেৰ গৈতৃক বিষয়ে অধিকায়ী হওন বিষয়ক আইন। মৃত মেং বেখুন সাহেব এই আইনের স্টুকর্জা।

#### পঞ্চম খণ্ড।

বিবিধ।

#### প্রভাত।

প্রতিদিন প্রাতে উঠি, বিভু নাম স্বরি। তরুণ অরুণ আভা, বিলোকন করি। স্থভাবের শোভা কত, প্রকাশিব কিবা ? নিল্লা ত্যাৰি উঠে যেন, কলবধু দিবা। স্থানি অনুরাগে জাগে, ভাঙ্গে ঘুম ঘোর। জাগাইছে অববিদে, প্রেমাননে ভোর B हामाम्थी कमनिनी, खामछा थुनिया। নাচিতেছে মৃত্ মৃত, ছলিয়া ছলিয়া। ছুটিয়াছৈ গন্ধ তার, ফুটিয়াছে কলি। মধুলোভে গুণ গুণ, গুণ গায় অলি 🌡 দ্বিলরাক আঁত দেখি, দ্বিক্রুল যত। নানা স্থারে রাগভরে, গান করে কন্ত ॥ ধরাতল স্থশীতল, স্থবিমল হয়। প্রস্কভাগে পূর্ববাগে, অপূর্ব্ব উদয়। অপুর্ব্ধ নহেক সেটা, অপূর্ব্ব প্রভাষ। নৰ পরিছেদ বেন, ধরেছে আকাশ ।

ছটাৰ্ডুক্ত থ্ৰংগিত, হুন্দৰ অন্থনী।
অন্ধ্ৰিত ধৰে বেন, প্ৰকৃতি হুন্দনী।
ছেনিছা-প্ৰভাত প্ৰভা, পূৰ্বানন্দন।
প্ৰভান নৱ বেন, প্ৰাভন নৱ এ
ব্ৰেছে নৃতন স্তী, এই চৃষ্টি ছব।
বেন প্ৰাভন নব ৪

## মধ্যাক

আর এক নব ভাব, মধ্যাক্ত সমস ।

দিবার ঘৌৰন বাছে, প্রকটিত হয় ৪

প্নোর সর্কাকে বেন, চ্ভাগন ভরা ।
তপনের তপ্ত তত্ত্ব, বীপ্ত করে ধরা ।
সনীরণ সথা আলে, আলিকন বিরা ।
জানাব পূর্বিধীমর, প্রকৃতির ক্রিয়া ।
নবভাবে নভো পূর্বভাব পরিহরি ।
পূর্বপ্রির তম্ভ হয়, যৌত বল্প পরি ৪
পত পকী চোরে খার, ভাগ লাগে দিবে ।
থেকে থেকে কারা রাখে, ছারার কূটিরে ।
কুগা তৃক্যা উভরেব, একঅ মিলন ।
জান্যা আলিয় লয়, বেদ্ধ নিকেতন 

য়াল্যা আলিয় লয়, বেদ্ধ নিকেতন 

য়ালয় আলার আলিয় বাদ্ধ নিকেতন 

য়

285

প্রমেব হুইন অ্ম, গতি খীরে বীরে।
বিরতি বগতি করে, মনের মৃক্ষিরে,
অকলাং এই ভার, মনের ক্রিবের,
নর্ম নজ্জিত অভি, দেখিত ভগন ।
বেরিরা ভবের ভার, হব নিজপণ।
খতাব উঠিল জ্বেগে, দেখিরা অগন ।
মরাকাল হবরে মন, ভারে মুউ বর।
প্রাত্ম নর বেন, পুরাত্ম নব ।
বেন পুরাত্ম নব ।

## সক্ষ্য।

সন্ধান সন্ধির বোগে, স্থা হন বৃদ্ধা।
পশ্চিমে ধরেন গিয়া, অন্তাচন চূড়া ।
দ্বীপং আরক্ত ছবি, প্রভাহীন কর।
অবোভাগে নান নেন, জনেন ভিত্র।
কোধা বা প্রথম কে, কোধা বা কিরন।
মানমুখে মনোহাংধ, মুখিত নরন।
আহ সহ এক ভাব, নাহি আর ক্রম।
জ্যোভির মুকুট উন্নি, কেড়ে লয় তম।

रिननारथ होन दाथि, दिन **अ**डि गौरक । লুকার আপন অঙ্গ, অন্তকার মাথে । তিমিবেক শ্ঝায়, শোভিত হয় নভ। •নবভাবে ধেন তাম, নিদ্রা বার ভব॥ ভাবি ভাবে মগ্ধ হয়, ভাবকের মন। द्बर्द ভবের ভাব, ভাবুক ধে জন। দ্বিজবাজ আসিতেছে, সঞ্লেলয়ে বছ । ভি≛গণ বাসালয়, নিজগণ সহ ॥ তরু শাথা ক্লিঞ্ছরে, এই সন্ধাকালে। ভঙ্গি ববি গীত গায়, প্রনের তালে। মানস মোহিত হয়, সাযাজ সময়। পুৰাতন নয় যেন, পুৰাতন নয়। হবেছে নৃতন সৃষ্টি, এই দৃষ্টি হয়। বেন পুৰাতন নগ

# রঞ্জনী

রজনী স্থনী সহ, প্রকৃত্তির মনে। হাসি হাসি বদে, আসি, আফাশ আসনে। কণনাতে দেখা যায়, অপক্রপ ভাষ। স্থভার ধরেছে যেন, নৃতন স্বভাব।

### কবিতাসংগ্রহ।

ভারা যাবা, ভাবা, ভাবাপতি ঘেবে জ্বলে মুকুতানভিত হেৰ, রজত অচুলে। বাযুব বিচিত্র গতি, নানা ভাবে বছে। প্রকৃতি বিকৃতি হেতু, এক<sup>®</sup>ভাব নহে। কখনো নির্মাল কবে, গগন মণ্ডল। কভুকরে ছিল্ল ভিন্ন, মেব চল চল। নদ নদী কত দেখি, গগন উপব। ললি'ত লহবী যেন, চলে থব থব 🏻 প্রহব হইলে গত, নিদ্রাগত সব। ক্রমে সুব স্তর্হয়, নাহি শব্দ বব॥ ভূমিতৰ স্থশীতৰ, ভাগ নাই আব। তৃণ পত্রে শোভা করে, নীহাবেব হাব। বহুরপী বিভাবরী, বহুরপ ধরে। শোক চিস্তা তাপ আদি, সমুদর হরে 🛊 কথনো বা অন্ধকাব, কভু গুভ্ৰময়। পুৰাতন নয় যেন, পুৰাতন নয়। हरपहि नुजन शृष्टि, वहे मृष्टि हर। যেন পুৰাতন নয়।

## ৠতু।

#### -0-

दमक निर्माय वर्षा, भवद नीहांव। কাল আলমে জ্ঞানে সব, কবে অধিকাৰ ৷ ছয কালে ছয় ঋতু, ছয় রূপ ভাব। হয় কালে ছব ভাবৈ, শোভিত স্বভাব ঃ • থাকে না অনোব ৰোধ, একেব সময়। •এইরপে কত কাল, গত কবি ছয়। এই শীত কণ পরে, গ্রীক্স যদি হয়। শীতের স্থভাব তার, অহতত নয়। ছয় ঋতু অধিকারে, ছয়রূপ যোগ। নৰ নৰ প্রাক্রহম, নৰ নৰ ভোগ । কথনো কম্পিত কায়, শীত সমীবণে। লালসা অধিক হয়, রবিব কিরণে 🛭 কথনো তপন-তাপ, সহ্য নাহি হয়। সুদীতল স্থিয় বসে, ইচ্ছা অভিশয় । कथरना वा कारम रुष्टि, वृद्धित शाताय । মেখনাদ অন্ধকার, দৃষ্টিহীন তার <sub>।।</sub> ভীবের ভোগের হেডু, ঋডুর স্থল । পুথকে পৃথক জাঁর, প্রভা প্রকটন 🛚

প্রতিকণ পার মন, নব পবিচর। পুরাতন নয খেন, পুরাতন নয ॥ হয়েছে নূতন সৃষ্ঠি, এই দৃষ্ঠি হয। দেন পুরাতন নয ॥

## সৃষ্টি ৷

এট ধবা, এট বছি, এই বাযুজল ৷ এই তকু, এই পত্ৰ, এই পুষ্প যল। এই ছাণ, এই দক্তি, এই স্পৰ্শ বব। थडे थड़े, थड़े थड़े, थड़े थड़े, प्रवा এই ভব পঞ্চীকৃত, পঞ্চাডান্য। এই পাত, ভেদখণে, কত পাত হয়। এই কুনা, এই ভৃষ্ণা, এই শোক, বোগ ' এই সুখ, এই হুখ, এই ভৃপ্তি, ভোগ : এই ভাব, এই বোধ, এই চিন্তা, মন এই খাদা, এই মুখ, এই আস্থাৰন। এই নদী, এই ক্ষেত্র, এই উপবন। এই চল্ল, এই সূর্যা, এই ভারাগণ ঃ এই বাজি, এই দিন, এই তিথি, বাব। এই দৃশ্য, এই আলো, এই অভকাব ঃ

এই প্ৰাত, এই সন্ধা, এই মধ্যকাল । এই পল, এই দত্ত, এই থক্ত কাল'। কি আন্তৰ্বা, তৰকাৰ্বা, সৰ প্ৰাতন । অথচ নম্বলে নিতা, নিৰম্বি নৃতন ! বিচিত্ৰ তোমাৰ ক্ষ্তি, ওছে বিশ্বন । প্ৰাতন নৰ বেন, প্ৰাতন নৰ। ব্ৰেহে নৃতন ক্ষ্তি, এই চৃষ্টি হয়। ধেন প্ৰাতন নহ।

#### দয়।

স্থানীত ল স্থানি ক্ষর শতদলে ।
স্থা সম স্থান্ধ, দ্বা-বস টলে ॥
দীন দীন অন-মন-চকোবেব ক্রা।
কণমাত্র নিবাৰণ, ববে সেই স্থা।
কোনেতে মনে হয়, দ্বা আবির্তার।
তাবিকে তাবুক কনে, নাহি পাব তাব।
আমি বলি কাব নাই, সমা কোন ভাবে।
ক্যাবিক দ্বান্ধ, বিদ্যু ক্রাত্র প্র
গ্যাবা সমান বাব, নিদ্যু ক্রাত্র উদ্য ।
কেমনে হইবে তাহে, দ্বার উদ্য ?

উপায়বিহীন জন-মানস নলিন। নিবদণ নিকটেতে, নিয়ত ছলিন ঃ ক্রেণ:বিচীন সেই, নিদাকণ জন। প্র কাজবেলে নাছি, গলে তার মন। নিবৰ্ধি নীৰধৰ, ববিষে শিখৰে। গিৰিবৰ কলেৰৱ, ভাছে সিক্ত কৰে 1 কথন কি হয়, জ্বব, ভগৰ-শ্ৰীব ? অভিমানে নিম্নামী, হয় সেই নীব। মান্থবেব প্রতি বার, প্রীতি নাই মনে। মানুষ বলিয়া ভাবে, গণিব কেমনে ? আয়ড়ঃশ্ব ছংখী বেই, সুখী আয়স্থবে :

কাত্র কি হয় সেই, অপবের ভঃখে ১ আয়ুমুখ অভিলামী, বটে সেই জন। কিন্ত নান নাছি পায়, তথ এক কৰ। নিবশ্ব অসতে করন। কবে কড। কিছই স্কল নতে, আশা মাত্র ১ত । কোণায় স্থাধেব সূত্র, খ জিবা না পাব বামনা কণ্টক বনে, ভ্রমিষা বেডায় ॥ জীবের হয়েছে মাজ, জীব পবিবাব ! প্রিয় পবিজন প্রতি, ক্ষেহ নাহি বাব ।

কেমনে জগতে সেই, পাবে স্থলেশ। উচিৎ তাহার মাত্র, সমুদ্র প্রবেশ 1

দ্ৰল স্থভাব যাব, স্থলি স্কৰণ। নবনেব শোভাবেন, ভকণ অকণ গ প্রেমভাবে সৃষ্টি প্রতি, সদা দৃষ্টি কবে। অনায়াদে মানদেব, অন্ধৰাৰ হবে ৷ চাক শত ধারা বছে, দেখি পব ক্লেশ। মীলাবেব লাবে যেন, শোভিত দিনেশ। কাজর অভার ভাষে বিকশিত করে। প্রকৃল্ল কমল তৃত্যু, অতি শোভা ববে ১ ছঃখের দারুণ দশা, দ্যা দানে দলে। ছল ছাভে **খল ভাব, সাধুসক** ফলে। গ্যার বিচিত্র মায়া, যেন বট কুক্-ছাথা, সদাকাল শ্রাস্তি কবে দুব। নীহাবে সম্ভাপপ্রদা, নিদাবে শীতৰ সদা, প্রমোদিত,পর্ব প্রচুব। ছত্রপ পত্র স্বাবা, নিবারি লাবণবালা, শাস্ত করে পর্থপ্রতি মন। পক্ষীদলে প্রতি দলে, অবিকলে স্থবিবলে, কলে করে উদর ভোষণ । দ্যাতক এপ্রকাব, বিবাজিত হয় বাব, ছবিমল মানদেব ক্ষেতে। উপকার ছায়া ভাব, নানা কল মিট ভাব, পরিপক্ত প্রেণর বদেতে ।

## মৃত্যু।

স্থচারু সকল ভঙ্গি, স্থাদনময়। সহাস্য অধর বিম, সদানিবাময় 🏾 প্রতি ভার প্রকাশিত, নহন পলকে। প্রদানতা পরিদীপ্ত, ললার্ট ফলকে ॥ একপ্ল মাধুর্য্য রাশি, কোণার বিলয়। কিছুই নাদৃশ্য হব, মরণ সময় 🏾 এই যে মাধিক বিশ্ব দুশ্য স্থ্ৰময়। ভূত পঞ্চময় তঞ্চ, প্ৰপঞ্চ নিশ্চৰ I অনাদি অনম্ভ ভাবে, ভাবে শূন্যবাদী। অনাদি অনক ভাবে, হয় সেই বাদী। ৰুণা শ্নাবাদী সেই, শ্না বাদী নয়। পরতমশে চিস্তাকরে, মুবণ সময় 🛭 চিরদিন নাজিক স্থরণ ব্যবহার। खम छत्र विकृ नाम, मूर्व्य नाहि वाव ! কুপ্রবৃত্তি মনোবৃত্তি, নিবৃত্তি না হয়। মানদেব আভরণ, ছুট রিপু ছয় 🏻 क्याविध हिन-(यरे, निर्फत्रकृत्य। সে বলে "ক্লাহিমে প্রভো" মরণ সময়॥ অতিশর অনিবার্য্য, জগদিক জাল। তাহাতে আবদ্ধ জীব, জন্ম মৃত্যু কাল ।

মাধ রূপ হুথ শ্যা. তাহাতে শ্যন। नानम् नहेवा (कार्य, पूर्य चरहत्व । কত মত স্বপ্ন দেখে, চেডনানা হয়। কোথা সেই সুখ স্থপ, মৰণ সময় প একে চিরুবৈবি ভাব, নিশাচৰ নবে। তাহে দশানন শ্ৰীনামেব পদ্মী হুৰে। অতিশ্ব শাত্ৰতা, সহিত সংগ্ৰাম। প্ৰাভূত হত বক্ষ, ক্ষী হন বাম। বিপু স্থানে উপদেশ, আনন স্লাশ্য। বিগত সে বৈবি ভাব, মবণ সময় ৷ স্বয়ং ঈশ্বে অংশ, ঈশ্বর তন্য। অবতীৰ মৰনীতে, গৃষ্ট মহাশং। নিকিকোৰ হযে তিনি, আসর সময়। উচৈচ-কুৰে ডাকিলেন ''কোথা দ্বাময়'' আপেনি ঈশ্ব হবে, পাইলেন ভয়। বিপ্ৰীত হেবি স্ব, মবণ সময় ॥

# সরস্বতী-চরণে।

হাদয়ৰ মলে আসি, বিনাশিবা ত্যবাশি, প্রকা**শিতা** হও বিধাবিনী। कविका-कमन-मधु, मिहिटम माध्यवधु, বীণপেথি বাকাপ্রদাযিনী। তব অমুকম্পাধীন, ভারতেব শুভ দিন, কোথা গেল বুশ্চিক্বাছিনী। ববিতাব ছিম বেশ, ছেরিলা উপজে ক্লেশ, বিখেৰ কি কৰ সে কাহিনী ? নহি মাত্র অলম্ভাব, হয়েছেন শীর্ণাকাব, বসহীনা বিবদে প্ৰিভা। উল্লীকবিতা সতী, শীমঙ্গেব নাছি জ্যোতি, বুট অৰ্থ মাদকে ঘণিতা॥ हाव ভाৰ नाहि जात, हरप्रह दोहन गांव, স্থদাহিত্যসন্তান বিয়োগে। কেবল পদ্যেব মুখ, হেরিবা নিরাবে ছঃখ, শাস ভাব সাভনা প্রধােগে। বোগা কবি কালিদাস, বালীকি ও বেছবাাস, \* কবিতাৰ দশাদেখ আবি। " बुद्धारीरा शांव होते, मूर्वमुवा हत कवि,

জোনাকী রবিছ অভিলাষী !

তাই বলি ওগো বাৰী, শীতল করছ প্রাণী,
বসনায় কবিরা আসন।
প্রাণ বাসনা মন, নিবার জততা তম,
স্মোভরাশি করি বিনাশন।
বিতার করণা-দেশ, কহি সব স্বিশেব,
অবিক আখাস নাহি করি।
ধ্যমন বাসনা নাই, সমারত হতে চাই,
কবিতাশেবং-চ্ডোগবি।
মনোভাব বাক হব, লোকেতে কবিতা কর,
আনক্ বিতার জবগণে।
যতনে বাতনা তক্ত, পাহে মাতা হও ক্লক,

কবিতা।

भ्य निर्देशन कीहरण ।

রসমন্ত্রাকরে। ত্রবিতা কমলা।
প্রজ্ঞালিত প্রতাপুন্ন, যিনি বোলকলা।
হমিক্রে বিরস তাব, হন জবতীর্গা।
করির কর্মল ক্রনে, সতত বিভীর্গা।
মানবিক মার্মসিক, হুখংরাশি হবে।
মোহন মধুবভাবে, স্মৃতাবে বিহুরে।

ছকিশ বাগিণী সঙ্গে সহচবীসম। ছৰ বাগ ছৰ রস, সেবক উপম। বসস্তাদি ছব ঋতু, সেনাপতি হন। প্রকৃতিব পুত্রগণ, সেনা অগণন 🛭 ছয় বিপু অঞ্জ মনেক মহাবীব। দৌত্যকাৰ্ম্য নিষোজিত, মহাবি মহীব ॥ মধুদপহাবীবধ, কমলা তন্ত্ৰ। কবিতাকমলাপদে দাসভ কব্যঃ বভাকর কন্যামকে, বভাবলী প্র'া। কবিভা কমল দেহে, অলস্বার শোভা গ কাপক কাপ<sup>†</sup>র মল, চবণ কমলে। অতুক্তি মুকুতাহার, স্থােভিদ গলে। চপলা চপলা গ্রাম, বটে সে চঞ্চলা। কবিতাক মলাহন, ছিলাচ আচৰা ষ্ঠীবদ তত্ত্বভাতমু, লাবণেঃ পুৰিত। ছন্দকণ লাবণে। কবিতা বিভবিত। স্থললিত ললিত, কববী বিশলিত। ভোটক অপাঙ্গে আখি, সদা প্রমোদিত ভ্ৰক্পথাত ভূজ, ভূজক লাবণ্য। সাবিত্রী অধব ভাবে, এ ধবিত্রী ধনা । ব মলীব প্রিয়পাখী, পেচক কঠোব। ♦বিতাব প্রিয়পক্ষী, পিরু মনোচোর ₽

নীগাৰৰে আছেদিতা, মাধৰ-বনিতা।
ভাৰৰপ বসনেতে, আবৃতা কবিতা।
অতথ্যৰ কবিতা গেঁচ তোমার দোহাই।
ধনবাৰী গশ্বী হক্তে, কিছু নাহি চাই।
কেবল কবেক নৃত্যা, কব খোঁ ক্ৰৱে।
সক্ষয়ণ পাইছেরি, তোমার উচুবে ।

## কুরীতি সংস্কার।

ভারতভূমির মাঝে, হিছু আছু বত।
অবলা অবল হৈছে, হুবে আব জুত দু
এথনো তাঙ্গেনি যুদ, কবিছ শবন '
এথনো বংছে সবে, মুদিবা নয়ন '
ভবের কি ভাব ভাষা, কর অফুতব।
এববার চোব নেনে, চেরে দেব সব।
হি কইবে মিছা আব, নিপ্রায় বহিলে দু
এথনি রতন পাবে, বতন কবিলে।
কি কৃত্বিলে ভাল হব, কর বিবেচনা।
আবেনের হিচাহিত, কর আলোচনা হ
নলে বনে দ্বির ভাবে, কর প্রবিধান।
নাহাতে বেলের হক, ইন্স প্রবিধান।

কুৰীতি কণ্টক বন, করিয়া ছেদন। ' স্থবীতিব স্থাতক, কবছ রোপন। অমুবত হোয়ে দেও, অমুবাগ ছল। শাখিব শাখার হবে, স্থানভিত দল । আহলাদের ফুল তাব, সস্তোধের ফল। त्म यन यनिया यतन, यनात स्वकृत s প্রস্পাবে এক হোয়ে, এক কণা বল। একমতে এক ববে, এক পথে চল । সক্ষেই একভাবে, এক হই বদি। এখনি অধায়ে দিব, ভ্রমন্বী নদী। আব না চালাতে হবে, অধ্বর্গুর পোড়। একেবাবে হবে রোধ, অঞ্চানেব স্রোভ। ভ্রান্তি নদী ভ্রথাইলে, রবেনা উরেগ। युक्ति नहीं प्रधाहेत्व, जाननाव त्वन ॥ স্ত্রদার স্থাব শ্রোত, থেলিবে অনিলে। ভাঙ্গিবে ধর্মের থেয়া, জ্ঞানের সলিলে ঃ

### ভ্ৰমণ। (১)

ভ্ৰমণে সুধ কক, বিগতে বিধাদ বস,
অধিবত হগে বত মন।
ক্ষিত্ৰ কাৰ নব, কত কব, হত বব,
গঙাতৰ মূখৰ বচন ।
ক্ৰেডাৰ অধ্যত, বেখা হছ বাব সদ,
সংহাৰৰ সন নেই জন।
ক্ষিত্ৰ সন নেই জন।
ক্ষিত্ৰ সন নেই জন।
ক্ষিত্ৰ সন নেই জন।
ক্ষান্ত নাই কেই কিইবাৰ
কাৰ্যিক কৰি গান, উল্বেখ্যে প্ৰিণাক,
ক্ষান্ত নিৰ্মিধ্যা।
ভাগ মুল হেন নাই, বাহা গাই তাহা বাই,
লাগে ছাই জন্ত সনাত।
বাগীৰ বোগাংক ভাগ বিভাগ ভোগ,
বাগীৰ বোগাংক ভাগ কিইবাৰ।

বিধাতার চাক সৃষ্টি, চাবিধিকে কবি দৃষ্টি, স্থপরূপ বাবি ষৃষ্টি হয় ॥ একেতো গঙ্গাব পোতা, অভিশন মনোগোতা, বিভাগনে সন্মা তাব নাই।

<sup>(</sup>১) কৰি, শীতকালে নৌকাংগাগে পশ্চিনাকলে ভ্ৰমণে বহিৰ্গত হইং, ইঙ' বচনা ক্রেৰ।

ভাহে অতি প্রেষত্ব, নহন সন্তোবকীর, মনোহৰ চর ঠাই ঠাই । স্থানে স্থানে কড ব'ড, নদ নদী পত পত, প্রিপ্ত গঙ্গার চবণে।

বোধ হয় ভারা সব, কল কল করি রব, পুলকিভ প্রেম আলাপনে ! নদী নচে যোগ যথা, অপরূপ ভাব তথা,

নদী নলে যোগ বধা, অপরূপ ভাব তথা সে কথা কহিব কারে আবে? বে জন ভাবুক চয়, সেই ভাব ভাব লয়,

দেখে দেই চকু আছে যাব। স্থভাবেৰ ভাল ধাবা, এক ঠাই ছুই ধাবা, প্ৰচেচ্চ প্ৰেছেদ তার তার।

একদিকে ক্ষাবেশা, স্থিবৰূপে বাব দেখা, খেতবেশা অন্যদিকে তাব ॥

হয়েছে একন্ত হোগ, ফলত বিভিন্ন ভোগ, ভিন্ন গুণ ধয়ে ছই ক্লন।

এক জল বেন সুধা, পান মাতে বাডে স্কুধা, স্থভাবত অতি নিরমণ !

নানা জাতি নানা জন, বিশেষত মহাজন, তবিবোগে নানা পথে বাব।

ভাটি বার দলে দলে, কেহবা উদ্ধান চলে, বেধানে বাহাব মন চার ঃ

#### কবিতাসংগ্ৰহ।

গোনাগন্ধ হাটে হাটে, বাটে বাটে মাঠে,

>42

নানা ছাতি স্তব্য সমুদর। নাহি অন্য আলাপন, নিরুপণ কবি পণ,

দিয়া ধন কেনা বেচা হয়। সংখাধন অবধান প্রশাব সাবধান.

সংখাধন অবধান পরম্পব সাবধান, বাবধান হাটের ভিতৰ।

বাববান হাডের তেওব । বুঝে সব নিজ মূল, মূলেতে লাভের ভুশ, ভুল নাই স্থানের উপব ঃ

কেহ বার কাষ্যস্থনে, কেহ বা ভ্রমণ ছলে, কেহ করে তার্থ প্রচেন :

গতি বটে স্বাকাৰ, সেইৰূপ সূৰ ভাব, বাহাব বেমন আখাদন ঃ

বাহাব বেশন আবাদন । সম্ভ দিবস ভরি, সাহসে চালাই তবি, স্থিতি করি সক্ষ্মী সময়।

স্থিতি করি স্ক্রী সময়। কোথা গ্রাম কোথা হাট, কোথা বন কোথা মাঠ. কিছমাত্র নিক্সিত নয়॥

দৃশ্থানা এক ঠাই, তাহে কিছু ভব নাই, নিজা বাই অভয় অকর।

হতকণ জাগরণ, হাসি গুসি ততকণ, পুৰে মন থাকে নিবস্তুব দ

স্থান মথা ভাল মর, তণা হব মনে ভর, দহাচর পাছে লয় ধন। নিস্তাংযাগ পৰিছবি জপ কৰি হবি ছবি. বিভাৰবী কৰি ভাগৰণ। স্থিব কৰি চুট সাবা, দৃষ্টি কৰি স্থকতাস কাবে' মুখে ভবা ভাবাবব। নিশি যাবে কভক্ৰণ নিবীকণ প্ৰতিকণ, প্রীকণ কবে দাই সব ৷ ব্ৰুক্তে বিচঙ্গচয়, দেব দিবা পৰিচৰ, ললিভ ভৈৰবে ধৰি ভান। नेयर रिक्टिय दिशा, श्रुक्तीनिक यात्र हिंदी, পুলকে পৃথিত হয় প্রাণ গ শেবে প্রভাদের মুখ বিগত বিপুল ছঃধ, नव ऋथ क्षत्र हिन्द्र। নৌক'বাদী যত নবে বিশ্বকৰ বিশ্বেশ্বৰে ভক্তিভবে ক্ষবে সমূদৰ। शरवर बाङ्गाल कीव 'देवत्रवी, बबानी हिन, অবিবোল অবিবোল অবে'। বত সৰ দেডে চাচা, দাভি ধৰে গলে কাচা, আলা' বোলে ভাকে উচ্চস্থবে 🏾 শুনিষা সে সব ধ্বনি, অন্তরে আহলাদ গণি हित्रमान कवि स्वभन। অপরূপ আভা তাব, তরণ কির্ণহাব,

কলে জলে লৈছিত বৰণ ।

# কবিতাসংগ্ৰছ। হবি এই অপরপ্ত মনে ভাবি এইরপ্ত

260

কৰিবা ভাছৰী জল পান।
প্ৰিচ্প্ত প্ৰচাৰত, বিশ্বাৰ কৰিবা বব
পূন্য হতে মূৰ্প কৰে দান ই
ক্ষাপা বদাপি হব, তানামহ সমূদ্ৰ,
দুই নাহি হব জনসন।
বে দিকে জিবাৰ চাই, বিছু না দেখিতে পাই,
জ্বহুগাবে আহ্ৰত সভা।

আসিয়াছে দিনমান কেবা কৰে অহমান, দ্রিমমাণ নিজে দিনকৰ। জলস্থল এবাকার, তেল বোধ নাহি আব, ধ্যাকার তিমিব নিকব।

ধ্যাবার তোমবানকর।
বিনিরের ঘোর ধ্ম, জল হতে উঠে ধ্ম,
উর্জভাগে উঠিতে না পাব।
বন মন ধ্যে ধতে, গঙ্গার গর্ভের পতে,

বায়ভরে ধেলিয়া বেডায় । বেচর না চবে চবে, আঁবি মুদে রক্ষোপবে, মাঝে মাঝে করে নিজ স্থার।

ভাছে পাই উপদেশ, বজনী হইল শেব, প্রাচীতে উদদ প্রভাবত। একেবারে গতি রোধ, দূবে গেল দৃহ বোধ, মধ্য ক্রম মন্ত্রীচিক। প্রায়। উষার তৃষাৰ বৃষ্টি, দূবে গেল দূব দৃষ্টি, আপনাবে দেখিতে না পাষ। তবদেব অঙ্গ পরে, নীলাব বিলাব কৰে,

স্রোতবেগে সিদ্ধূপণে ধাব। ম'হি তাৰ অম্বুৰণ, মৃহধ্বনি টুপ্ টুপ্ত অপত্রপ ৰূপ কয় তায়।

অপরপ ৰূপ হয় তার।

ময়নের প্রিতৃপ্তি ববিব কিকিং দীধি,
জলে বদি জলে সেই কালে।

ভাষে বোধ হয় (হন, চঞ্চলা চপলা যেন,

বিভূখিত বজতের জালে। ভূতের সমূত গেলা, ক্রেমে যত হব বেলা,

ত্তে সমূত দেলা, একংশ গত হব বেলা ভালোভ)লা ঐশিক বাংপাব। কোনে জুবুধার ক্রম, ভ্রমকেব বায় ২ম,

জানে তব যাব জান, জাসকেব যায় এন জানপথে যুক্ত পুনাসাব ৷

অকণ উদৰ কাৰে, ছু'ট বাৰ পালে পাকে দিভি মাকি মাব আব বত।

াত নাত সাব সাব হয়। প্রভাতের কম্ম সাবি, উঠে সব সাবি সাবি, নিজ নিজ বিজ্ঞানত হয় বহুঃ

হীকুডাক্ ভোক্ জাব্, ক'ব কত শোক্ শাব্, লেগ যাব মহাস গংগোল।

ধ্বন্ধি তুলে বুলে ভবি, ''বদৰ বদৰ হবি'' "গস্থাৰ পীৰিতে হরিবোল"

#### 3/85 কবিতাসংগ্ৰহ।

ভাটিপথে যায় যত, ভালের উল্লাস কত, কণি হেঁকে পালি আকর্ষণ। কপি মূৰ্ত্তি নির্থিয়া, পিড় ক্ষেহ প্রকাশিষা, অফুকুল আপনি প্রন 🛭 দ্যাবে গাঁড বুঝে বাঁক, খোৰ হাক ছোব ডাক গোঁপে পাক সম্বোধ হৃত্য। একে পালি, ত'হে ভাঁটি, ছইদিকে পবিপাটী শীতকাশ তালের সলয় ৷ গোভেনে গোভেনে উঠে, নীব কেটে ভীব ছুটে, নিমিবেতে চক্ষুছাভা ব্য।

কলের জাহাজ সব, মিছামিছি কবে বকু তাৰ কাছে কোণা পক্ষে বয়ঃ াৰ উভানেৰ যান সাধ উপাণীৰ জান. পতিকল জঞ্নাব পতি।

নি 😘 ণ সহজে গুণ, তার পেটে যত গুণ. সেই অংশ অভি মুদুগতি। চলে তবি অল নীংব, ধীবে ধীবে তীবে তীবে, বাভিবাছে বিষম বিপদ।

কি বব ভাহাব গ ড, নেন সভী গৰ্ভবড়ী. চোলে যতে টোলে পড়ে পদ। ভানে ভানে পাব ভল ছাতে ডাক কল কল.

বল ববি বেগে দেয় মোডা।

উक्षानीया महिशासन, नाहि व्याप दीहा खाल, োনের উপরে বিষ্ফোডা !

লহবী আসিছে আতে, গুণ বায় উচ্চপাডে, ঘ'তে বল কবি দেয় ট'ন।

অতি ভোর একটানা, কি কবিবে গুণটানা টানাট নি কোবে হার প্রাণ ।

কাউকে জালত টান স্টানে মাবিছে টান

তব নাতি আধে হাত নডে। ৰণমাত্রে হয় পুন, তথাচ না ছাড়ে ওণ,

ছ াটিতে কোঁছোট থেৰে পড়ে।

পাছাত মাবিছে ধেবে, কাছাত আছাত থেবে, -বসহ পডে এসে জলে।

খফ হয় বিপর্যায় পেষে ভয় মনে লয়,

সমদৰ বাব বসাতলে। সেই থালে যত নায়, ঠেক'ঠেকি হোয়ে যায

গুণ নিষে হডারডি লাগে। পাশাপাশি চালাচালি, স্বালাপ শালাশালি, গালাগালি পাতে সব বাগে #

প্রস্পার সালে রাগে, বাছিব হইবে আর্ডে, চঠ ৰ প ভেকে মাম কত।

**এচনেতে যাতামাতি কিন্তু নাট হাতাহাতি**,

বট কর মূথে আসে বত।

েড্যামেড্যাবাদি আগণ ভাগে হয় ব'লী, তেবি মেবি হিন্দি নয় পুৱা। 'আবি % ণ ভারি দেও পিছে লাও ছট লেণ. a a বায়ালী **ম**ক্বা' i বালাল কচিছে "মাথ সেছাই কেছাই যাম ?" মাজি বলে 'গুণ ছাডে,দিয় ? প্তিব পোলানি হালা ছি বলে পেলের ছালা দাঙি টাকা দাম লোবে নিমু।' দিশি দাঙি মাজি যাবা, দিশি গাণ দেয তাবা, সে কথা ভানার আব কাবে ? কাটিবা জোতের আদি কোলে পরে ছাডাছাতি, ম ভাষাভি আৰু নাচি থাকে। काशाय माठाव मिश्रा, क्षाल बाब कोका निया, দক ভেঙ্গে উঠে গিবা চৰে। প্ৰ যদি পাব সোভা, বড নব ভাব বোজা. वृ (र कृ (क श्रेष प्रमुख्य । (১) हात्न कदि अर्थ कत्त्र, र्वत्क बाव कुरवा हत्त्र,

ক্ৰি মেৰে বাব মাজামাজি।
ঠেলে বায় বাহৰলে, গভিলে অধিক কলে,
সাবাস সাবাস বলে মাজি।

সাবাস সাবাস বলে বাজে।

রস চব । শতিমাজিদিশের ব্যবহারিক ভাষা। হ্যার অর্থ এণীবদ্ধ রূপে নৌকা চালনা। কচ বঠে সেই স্থান, প্রাপ্ত হোরে পবিআণ, ধবে গীন গুণে যেতে বেতে।

এত বে কবিল কেশ, নাতি বোধ ছংখ লেশ, মন্দেশ আনদেশ বাধ মেতে ৷ ভালেৰ ললাট পটে, এক দিন বদি ঘটে,

অমুকুল° প্রনের হোগ।

কি কৰ স্থাৰত ভাৰ, অপুক্ৰের পুক্ত লাভ,
দৰিক্ৰেৰ বেন ৰাজভোগ ৷

'बमत बमत बानी, ठावेटश्रॅटर स्थरतानी,'

এই বোলে পা ল দের তুলে। গুডুকে মাবিরা টান, কাছি ধেশরে ছাডে গান,

বাঁধা বাডা সব বায় ভূলে **ঃ** 

এ ঘটনা অসময়, এক দিন বড় হয়, ৰাভাসেই ৰাভিকেব ধেলা।

কিঞ্চিৎ কৰিবা হিত একেবাৰে বিপন্নীত, অবশেষ পশ্চিমেৰ ঠেশা ॥

অবশেব সাক্ষমের ঠেশা ॥ বংজাৰ বন্ধব নাই, তিম দিন এক ঠুঁই, বনে মাঠে ক্ষয়ি অধিবাস।

আহাবের বোগ্য নব, উপস্থিত বাহা হয়, পেটপুরে থাই প্রাস গ্রাস ।

কিছুতেই নাহি ছঃখ, বিবদ না হৰ মুখ, মহা সূখ চাবিদিকে চেবে।

#### ২৬৬ কবিভাসংগ্ৰহ।

ৰাত্ৰী বৰ বাঁধে চতে, বাকাদেতে থাৰে মৰে, বাবো আনা বালি কেলে শেষ । সমীবণ পদ পদ, বহু করে কন কন কোনমতে নাহি হাঁই আহি । বাবণ হজার জাভ, নাহি বাবে কিছু সাভ হ ভ ভেতে জালায় পদীব দ আগেছ উঠেকে বাঁলায় কুলে দেৱ বেটে হাত, ধেনে হয় আনাহ এবণ।

অভি পাপ দাঁতকাটা জল ।
হোক জন বড় হিন্দু, হোক শীত বড় ভীম
তাতে বড় কমেনালো দোব।
সবীত হিবস বার, বড় থেয় হবি ভাগ,
বড় জোব বার হুই জোল ।
উধু বাহুবের নতু, অনেহত সক্ষ হর,

এই শীত ছষ্ট ছবাচাৰ।

निनात्रात त्याद यह भीत माहि वन थारे,

শক্র হোরে আহ্বীব ওকারে সকল নীর, অভিচর্ম করিরাছে সার । স্বব্নী আধ্যমতা, -বুড়েতে পডেছে চডা, বাকেব হয়েছে ক্ষেব তাই।

কত শ্রমে নিয়ে তবি, বিশ কোশ খুবে মরি, অক কোশ তবুনাহি যাই। গমনে বিষয় হত, মনের অনুধ কত,

হই বালে কৃতি দিন এবে।
মনে ভাবি বৃহ ছাই, ফিবে আব কাজ নাই,
ভাবিটান্ত দিয়ে বাই দেশে।
তাবিটান্ত দিয়ে বাই দেশে।
কৃতিন লে বাই কাছি অভিপ্রায়,
নৃতন পে বিতে চাল মন
বাকি বাই তাগি কবা, জঞ্জান তিনিব হবা,
হুবাহলা প্রথম এবন।
বাহি হিও আছে চাংধ, ভাবি,ভাবি বাই অনি,
প্রায়তির প্রকৃতি এবল।

প্রকৃতির কার্যা নাহা বিকৃতি কি হব তাহা >
অপস্তপ অতি অপস্তপ ।
আমারের অতিয়ার, দৃষ্টপথে দদা ধাব,
দাবা তাহা বছর বিচাব।
নাহা নাহ পি ব বন্ধ, নাবাজপ ববদন,

নিরপণ বিধের ব্যাপার ॥ ঐশিক সকল কার্য্য, হর বটে অনিবার্য্য, কবে বার্য্য সাথ্য কার হয় ?

ভগাচ অবোধ মন, কবে ছেত্ অবেবণ, একাবণ বিশ্ব পবিচয়। মায়ুব্বিব কীর্ত্তি বত, কত ভাবে চেরি হস্ত,

ম'ফুবৈৰ কীৰ্ত্তি যত, কত স্থানে চেন্নি কক্ত, অবিয়ত মনেৰ উনাস।

আত আসা আশা দিছি, ক্রমে হর বোধ বৃদ্ধি, জাত যত হর ইতিহাস ৷ কোণাৰ দেখিতে পাই সামুখেৰ বাস নাই, সম্চয় চৰ আগার কন ৷ মবভুম হয় খণ খালা নাহি পাৰ তথা, প্ৰপ্ৰীনাকৰে ভ্ৰমণ ৷ ভূনি শেষ লোকে বলে ছিল আগে এই কলে, অতি মনোচর গাম ধাম। গলা বাক্ষনীর গভে বিনাশ পেয়েছে সর্বের, ক্রমে লোগ হটভেছে নাম। তথাকাৰ নানা প্ৰাণী, সংয় সৰ নানাম্বানী, নানা ভানে ভাইন আগার। এক ঘবে ছই ভাই, তাবা গেল ছই ঠাই, ক্তথ নাই কারো মনে আব। খানে ভাবে নৰ প্ৰাম বাস্তুত ভাব নাই নাম, বসিয়াছে ছই চারি ঘর। কেছ চাৰ কৰে যাঠে, কেছ বা দোকানি ঠাঠে পরিবার গ'লে প্রস্পর ৪ **এই স্ব বিলোক্নে, বিপুল বিলাপ ম'ন.** জাবনার পথে ভাব ধায়। ঈশ্বীয় কাণ্ড কল, ,বাণা জল, কোণা স্থল, বল বৃদ্ধি নাহি থাটে তায়।

ভবঙ্কৰ স্লোহস্থতী, হোৱে অভি বেগৰতী, যে লিকেকে অক্ৰেন প্ৰয়ন। বিস্তার বদন ধরি, সেই দিক প্রাস কবি, অনাদিকে করেন ব্যন ৪ এক কুল থান বটে, ছই কুলে দায় ঘটে, কোন দিকে শোভা নাহি বয়। এক কল বাসহত, আৰু কুলে চৰু ৰত, ভীববাসী দুববাসী হয় 🛭 বেতে বেতে কিছু দূব, অচিরাৎ ছঃখ দূব, স্থৰ্মপুর ভুক্ত বোধ হয়। **এই বে অখিল शृष्टि,** वाद्याटिई कवि मृष्टि, তালতেই ব্লানক্ষয় ৷ দূৰ হোতে ধ্বাধ্ব, ঠিক বেন ধাবাধ্ব. মনোচৰ কলেবৰ ভাব ৷ ভাতে বোধ কত রূপ, হব তাব কত রূপ, অপকাপ দুখ্য চমৎকার ॥ পর্ব্বতে প্রকাও তক্ত, দেখা যাব কুছ সব, বাতাদেতে নডে ভার শাখা। ভাছে হয এই ভ্ৰম, যেন কৃষ্ণ বিহঙ্গম, উডিতেছে বিস্তাবিয়া পাথা। উদয় উদযাচলে, ভাসু চলে অস্তাচলে, ছই কাল অতি মনোলোভা।

বসনা সবস বদে, বাকা নাই তাব বদে, প্ৰকাশিতে শিখনেই শোভা। বিশেষ মধ্যাহ পালে গুলন অবদভাবে, মধিসাং হয় আফাচিত। বিনম্ভ ক্ষিপ্ৰদু, মাঝে নাকে বাবে কং, স্থানে চপশা চমবিত।

ন্বন পেছেছে বেট, সে সম্ব যদি সেই, চেবে দেখে পর্কাতের পানে। স্বভাবের ঘোর ঘটা, বিনোদ বিচিত্র ছটা, সেই জন একমান কানে॥

নেও জন অবনাৰ ভালে । বৈষ্টন কৰিবা স্মিতি, বক্ষভাবে করে স্থিতি, উচ্চ চূডা দূৰে দেব, যাব ! বেল কাব কুলদাবা, ২৭পানে মাতোযাবা,

বেন ব'ৰ মুখ্যাব্য সমূলি বাংলাগোল বেণীপ্ৰেণী এলাইবা ধার । নিব'বে নিংকত নীব, আবাধনে যেন দ্বীন, ভীববোগ শচে ভূমিতল। আচে নাহি বিভ মন, পৰম প্ৰিত্ত হ্বন,

স্থাৰত স্থাতি স্থাতিল ! নিকট চটলে পৰ, তত নৰ মনোহৰ,

হলত সুক্ষৰ শোতা বটে। অতি রীম ছলকায়, শ্রেণী গাঁথা দেখা বার, বিবালিত তবলিণী তটে। ত অংশা উদ্ধে বৃক্ষ বহু, নানা স্বাচি শত শত,
কত তাব ংগীত গতাব।
বেবে তার রস্কন, নানা লাতি বিশ্ববন,
নিল্ল খহে বিভূতিণ গাহ ঃ
স্থাী তার বামান, করে বানা চাহ বান,
বিভ্তরপে হোবে বিবিধানী।
মন্দরের অভি তাতে, কন্দরে বৃদ্ধ আছি,
বিকিনিন করে তবা মানি এ
নাই ংনান অবাসুন, বাহ বত জনমূল,
ব্যবার বারি ববে পান।
প্রিপ্রেম পান ভয়, স্ক হুই আহিস্ব,
স্বাব্র অভি ববনান।
আন্তাব্য আভি ববনান।
আন্তাব্য আভি ববনান।

সাধা নাই বাযু কৰে গতি।
কিল্লে জীব বছতত, বিশাল বিপিনবৰ,
বোৱতৰ ভয়ত্ব আতি।
কিন্তু অতি বমনীয়, মৃত্তি তাৰ কয়নীৰ,
হুবে এই গমনীয় নয়।
সন বলে বাই উট্ডে, অমিব পৰ্যতি কুল্ডে,

মন বলে বাট উড়ে, আমৰ পকাত জুপ্ড, প্ৰাণ বলে আমি কবি ভষ । শিখনে নিকৰ ককে, মনে প্ৰাণে ঘোৰ ভ্ৰু ভাল মৃক্ষ বিবেচনা কৃত।

দেবিৰ প্ৰাণেৰ ভৱ, মন শেষ ভীত হা, সেইমতে দের অভিনতঃ छ बाह ना पंच लांक, मत्तर ना (मटहे क्ल छ. কত মঠ কবে আন্দোলন। বচ দ্ব দৃষ্টি বার, অভুমান কবি তাহ, দৃৰে হোতে বৰ আস্থাদন। কোনোধানে জলজ্বত, (১) প্ৰতেউচেচ্ছত ড পক্ষী গিৰে উত্তে ৰসে তথা দলে দলে কৰে ভীড, উচ্চ ভাবে ব'ধে নীড, কে'নোরপ শহা নাই যথা ৪ চাবিদিকে জলমৰ, মধ্যভাগে গিৰি বৰ, অভিশব ভয়ানক ঋণ। ভাটি পথে শ্ৰোত ধাৰ, বেগে লাগে তাব গায়, বৰ্ণতেলী শব্দ কল কণ I উল্লেড ভাব চডা জাগে, গণ্ডবৎ মধালাণে, পবিপূর্ণ কালো কালো গণছে। দুৰে অনুমান কবি, জল পান কবি ববী, উদ্ধদিকে গুণ্ড তলিয়াছে।

এই ভাব একবাৰ, প্ৰক্ষণে ভাবি আনাৰ,

এপ্রকাব শেশতা নাচি পাহ।

(১ কাগন গাঁএব ভারিরা, এই ছুই হুপে পরার ২ংগের তথব এক্সেড

ममानिव ममा (मवि. अवकविनी सिवी. নিবক্সৰ ধৰেন মাথায় য हरदद क्रिजीय कार्याः भाषान-निमनी माद्राः শিব উঠাবে নাহন সদয়। সপত্নীর দেখে হুখ, দেবীব দারুণ ছঃখ, ফাটে বক তাপিত হাদর 🛭 হিমাণৰ মহাশ্ৰ, ছুলিভাৰ ছুগঃচ্য, হুনে মনে চটলেন থাপা। দুভেবে বলেন ৰাণী, সে দৃত পৰ্কতি আনি, দিয়েছে গঙ্গাব বৃকে চাপা । পুন অভুষান কবি, তুবধনী নিশাচরী, গিরি ধবি কোবেছে আহাব।. পাতৰ কঠিন কাব, উদৰে কি পাক পাব, পেট কেঁপে কবিছে উল্পাব I স্থানে স্থানে অতি বমা, স্বাকাৰ হব গ্ৰা হৰ্দ্ম তায় অতি উক্তঙ্ক। অন্ত্ৰিব উপৰে আডি, ভালতে বিচিত্ৰ বাডী, জল হতে দেখি মনোচৰ ।

ধন লোচে সলা কৰে ৰাস। সিবিৰনে উপবন, জাব কোলে চলে বন, বনে বন দেখিতে উল্লাস।

সবল ধ্বলকাষ, নীলকৰ আসি ভায়,

বাস করি এক বনে, বেতে চাই আব বনে,
বনে বনে বনেৰ মনতা।
বনবানী বতে হই, কিন্তু বনবাসী নই
বাব বন বাবনাকো তথা ॥
বে বিবস নিশাখানে পর্বাতের অধঃস্থানে,
থাবা ব ম লইবা তবী।
কেছ আব ভিব নব, মনে তব বত চর
ভেগে রহ সকল বক্তনী।

কিন্তু বেহু ধাৰ জন, কোৰে অতি ভিরুমন, নগ দেশ করে নিরীজন। বার ভারে বত চ.ব., পারে জ্বভাবের জুধ সকল চাংবি জালবণ ৪

আছে বটে উক্ত ভব, বলে চাচা গুরু নথ,
গলু বর সময়ে জাবার :
ভূবরের ানবেতন, তাহাতে বিপুল বন,
বিলোধন নিনোন ব্যাপার ঃ
পলে বলে বালি চনে, বক বক আমি আনে
আনোমৰ হব সিরিবেদ।
কত কণ কা শোর, শক তাব করি জোর,

কৰে আদি শ্ৰবণে প্ৰবেশ ।
নাবুৰি ভাষাৰ কৰে, বেন কোন ধনী পুত্ৰ,
পতিপাটী পৰিক্ৰদ ধৰি।

মণিমুক্তা দিবা পাব, বিবাজ কবিতে বাহু, আনো জেনে সমারোহ করি।

আনো বেনে স্থারোধ কার। ধন্য বিভূ বিখমৰ, তব কপ দশ্য হৰ, উদ্দেশে অসংখ্য নমস্থাৰ।

তোমাব ও ভৰবজো, কত ত'র চার কার্যা কবে খাবাুশক্তি আছে কাব ?

ছোট ছোট নগ মাঝে শি-বৰ সহন সাজে, মাঝে মাঝে পীবের আলয়। (১)

ৰার কাণী বুন্ধাবন, বাজিগণ ভব্তিমন, দ্বপন কবে সমুদ্ধ ঃ শিপৰু সমাজে গভ, (২) এখন ররেছে ধড়,

য় ও দেহ প্রাণ নাই তাব। সে হর্মেব হুগ হোর ভাব্যেব রছনী ভোব। ∢বিহাছে সকল সংহার ঃ

থাক্ত্ৰের হরে শেব, পরাধীন বাজ্য দেশ, সম্পদের শেশমাত্র মাই।

বহাৰৰ হলো চৰ, গোম্পাদ প্ৰথমতৰ, প্ৰোভৰৰ কালে দেখি ভাই । প্ৰাতন কীৰ্ত্তি নাশ ভাৱে কলে সৰ্জনাশ,

প্ৰতিন কীটি নাশ ভাবে কশে বৰ্জন'শ, সংস্মতে ছঃখের ব্যাপাব।

 <sup>(</sup>২) জাঙ্গিরার পর্কান্ত শিবান্য এব প্রীরের আন্তান। আছে।
 (২) তেনিয়া গড়।

293

কি কৰি উপায়হত, মনের স্**স্থা**প যত মিছে কেন প্রকাশিব স্থাব ?

ামছে কেন আকাশিব আবে '
ভাগ্যের ঘটনা বালা, কাল ক্রমে ঘটে ভারা,
থণ্ডন না হয় কভ তার।

থণ্ডন নাহয় কভুতার। কালেতে পর্কাত যুক্ত কালেতে,

বেণু ববে পৰ্কত আকাৰ a ধেফু বংস বাশি বাশি, ভাগীবণী তটে আসি,

উচ্চ চৰে কবিষা ভ্ৰমণ। ভণ পত্ৰ যভ পাষ্টিনাৰে সোৰে চোৱে খায়,

রাধান করিছে গোচাবণ ॥ নানা বর্ণ ধেন্দু সৰু কবিতেছে হান্দাবৰ, ১

শানা বশ বেশ্ব সৰ কাবতেছে হামাবৰ, • পাৰ্য লয়ে হৰ বা 'বাগি। থাকে সৰ এক ঠাই, আব কোন চিন্ধা নাই

থাকে সৰ এক ঠাই, আব কোন চিন্তা নাই বেবল আহাৰে অহবাগী। হেলে ছলে গতি কৰে, কেহ আসে নিয় চৰে,

কেহ কৰে ভূদৰে শরন। ৰখা ইচ্ছা তথা মাৰ, ৰাছুৰ পশ্চাতে ধাৰ, বেশ্ক বেঁকে নাচাৰ চৰণ।

মাৰে মাৰে কেহ'কেহ, আংকাশিব। মাভূলেহ, ভাগন বংসেৰ দেহ চাটে।

ৰ'ছুব পুনক ভবে, থেকে থেকে মৃচস্ববে, ইট হোবে মূধ দেব বাঁটে। ভূতণো ফলিচে ক্ষীর, ভূষাভূষা পৃথিবীর, ভূষা ক্ষশা কদিবাৰ এবে। যিনি ৪ন সক্ষাধাৰ, কবি ক্টাৰ উপকাৰ, ম ফুব্দৰ উপচেশ কৰে।

বলে, "ধৰে নৰ ৰক্ষ, হৰে তোৰা স্বৰণত, বেমনে স্থানিতে হৰ দান।"

নুখেব আধাৰ দিলা, দেখ ব দাতবা ক্রিণা, বাছুব প্রচুব ক্লপাবান ॥ পালেতে পালেব কাঁচ নেতে বাভ বুকে চাচ,

শৃক্ত সাভ বি^ট শৈজন। হুট বাঁডে দেখাদোৰ, শিঙে শিংখ ঠেঁকাঠেকি, কৰে বণ পাড়ীৰ ক'ংগঃ

∢নাৰে কৃহকী ভৰ, ধন্য তৰ মনেভিৰ, তোমাতেই স্বল সম্ভৰ †

যিনি এই ভবধৰ, সেই ভৰ প্ৰাভৰ অসম্প্ৰ শক্তি বটে কৰে।

পিপাস। অধিক হাবে, আন স্বাপ্রাব কোবে, বতপাৰে কাব জনপান।

পুলবটা থাতী তার, বিনা মৃদল নাহি পার, বাট থোতে ছগ্ধ কবে দান। একেত ধ্বল নীব, ভাষে প্রবভীব ফীব,

কেত ধৰণ নীৰ, তাহে স্থৰতীৰ ক্ষীৰ, পড়ে ধেন স্থমেৰৰ ধাৰা।

# কবিতাসংগ্ৰহ।

2 9b

ছগ্ধ খান ভাগীবণী, জল ধান ভগাবতী,
স্থী ভাবা দেখে তাই যাবা ॥
আাব এক সে সমৰ, স্থাবনত শোভা হয়,
দেখে ধীব চলু কবি দ্বিব।
বাছুৰ গলাব ফুকে, পেছু চুকে কাকে কাকে,
কচিনুধে কেতে বাছু জীব।

নিবৰি একপ ভঙ্গি, মন হয় নব্বজী,
অন্থাগ সঞ্চী তাব কাছে।
অভিথাৰ অন্থাগে, মানস-মন্দিৰে ছাগে,

স্থাবন করিত তাই আছে।
স্থাবন করি, করেতে লেখনী ধরি,
লিখি তাই বাহা মনে লয়।

দোৰ তাৰ বাবে বিদ্যালয় ।
দোৰ যত ৰচনাৰ, কবিৰেন পৰিহার,
ত্তৰপ্ৰাহী শুলী সমূদৰ ।

ভ্ৰমণীয় ভাব বাহা, অমি কি বৃঝিব তাঁহা, প্ৰকাশিতে কবিয়াছি মতি। ফুললোভী কুক্ত প্ৰাদ, মন মম উৰ্দ্ধে ধাৰ,

কিন্তু কালী কি কবেন গতি। খো জ্ঞান ৰখা যুক্তি, সেইক্লপ হয় উক্তি, ভাৰবদ অহুগামী তাব।

১৯ পারে কবিতে ক্রম, মুনীনাঞ্চ মতিল্রম, দীপেব পশ্চাতে অন্ধুকার। পাচনী কবিষা কৰে, হাবে বেবে বৰ কৰে, গোপাল গোপাল পালে মাটে। শিক্ষালে প্রপালে, সম্ভেতে স্কল চালে, भारत भारत दिवार चारते चारते 🖡 প্ৰস্পৰ কৰে পেলা, বেছ কাবে মাৰে চেলা, তাব। যেন সাজিখাছে নাটে। যাৰ বাৰ পাছে চাৰ, আংগুপানে ছটে ধাৰ. নাচে হাদে বাধালিয়া ঠাটে। পাৰ্শেতে পাচনী থ্যে, ভূমিৰ আসনে ভ্ৰে, গীত গাণ মেহানীৰ স্থাবে। বাগ স্থৰ ৰোধ নাই, তথাচ গুনিয়া তাই, অমনি মান্স মন্তক্ৰে। হেৰি বাথালিবা ভাব, কত ভাৰ অবিভাৰ, ভাব ভবা ভবেব ভবনে। ধনা বাসি মহাশ্য, তথনি উদাস হব, ব্ৰহ্নীলা পড়ে ব্যব সংল। যে লীলায় নিজে হবি, বাখালের কপ ধরি, ब्बेरल समान्य समास

ননী চুবি বাবে ঘাবে, বাশোরা ধবিবা কাবে, উলবংলে কবিল বজন ॥ উলায উপান কবি, মনোহিব মৃত্তি ধবি, ধ্তা চুতা কবি পবিধান।

# ২৮০ কবিতাসংগ্রহ।

क्षमनीय कांट्रक (यटक, बाँका क्राय स्मारक स्मारक, কীৰ সৰ নৱনীত ধান ঃ বাণাভোগ সমাধিষা, জীলালাদি সঙ্গে নিয়া, গোকশেব গছনে গ্রন ৷ जार्था जार्था मिटेश्टर, छानिएक राथान महत्त् বেছু ভাশ ধাৰ (বহুগণ) তপন তনহাতীৰে, গাড অতি ধীৰে ধীৰে, রপ হেরি শক্তাপায় শশী। বাধালেৰে সাজাইগা, বেং বাদ্য ৰাজাইয়া, বিহাব বিবল বনে বসি। বনের ক্লল পাড়ি, করে সর কাডাকাতি, औरहें। (दारम चना कि क नाड़ें। থেতে থেতে বনে স্থেব, মথে বৰ হাবে বেবে, केटिव ६८व (१८२ । मारिव छ। है। সুধামাখা বাধা নাম, বাঁশী লয় অবিশ্রাম, ৰত লীণা স্বধ বৃদ্ধাবনে। ভারতে ভাবতী সাব, আমি কি লিঙিব আব, প্ৰেপাত বলক্ষর চরবে ॥ প্রভাতের একরপ, পবে তেরি অনারপ, সভাবিলে *পা*নের আবার।

এই সৰ স্থির কাশ, সমভাৰ চিবকাশ, প্রতিকাল ভঙ্গন প্রকাব এ অভগত নিশাকৰ, প্ৰবাটিত প্ৰভাবৰ, ভাতে হয় প্ৰবাশিত দিন। পাতিল ভগতভাল, তিন কালে তিন কাল, ণ র পাব আংযকপ নীন ।

জ্ঞাবে জদাৰ বাস, নতন দেখিতে আৰু, চাই তাই নতন দিবস।

কিন্তুতাৰ ৰোধহত, দিন মত হম গত শনচেয় আনুষ্য কলস। ভবেৰ বাংগাৰ যত, সমূদৰ এই মত,

মোহবংস মথ ক্রীব সবে । মহাবর মহাধন, নাছি ভাব অহেষণ. বিমোটিত বিজল বিভবে ঃ

আমিও সেকপ ছই. যত লিখি নত বট, ছাডানই ভ্ৰম অৱধান।

এসেছি ভ্ৰমণ ছলে, ভ্ৰমি বটে স্থলে হংল, ত্র সদাবিষয় বিকার ১ কথনো কথনো ভাই, পদর্জে চোলে শই,

মান বিছ চিতানাই জাব। যাই যাই ঠাই ঠাই, আশে পাৰে দিবে চাই, দেশি ত'য় অশেষ প্রকাব গ

কত যাম বত বঙ্গে, দেখা হয় যাব্সজে,

যেন ভাষ কতকেলে প্রেম ১

## কবিতাসং গ্রহ।

うかつ

বিছু নাতি দেখি চোৰ, কত জুখ তাবে পোৰা,
দৰিত্ৰ বেদন পাথ চেৰ ।
বিবা আতি বোগাঁ বান, বেশা জানে বাৰ নাদ.
বেখা কাব পৰিচল লগ।
সকবোৰ মন পালা, পৰস্পাৰ ভাই লাগা,
ভাতুভাবে সাম্বোদন কয়
এইজল দিবাভাগে, নৱ নৰ নৰ বাগে,
অন্তবাগে কবি স্বাধান ।
বজনীৰ আগ্ৰানে, তংগীৰ নিকেতনে,
হণা ক্ৰমে হল অবছান ।
উভালিৰ সৰ্ব্বাহন প্ৰান্তি পূৰ্ণমন,
স্বাহ্নত আছি ভব্ৰিত।

স্কানতে আছি হববিত।
বর্তনানে সন্থান, মিঞ্জ হল শান্ত নান,
বেবন বিপক্ষ বাটো শীত।
চঙিবা নানস বংগ, এই শীতে স্বলপ্থে,
কল পথে চলে বেই ক্ষন।
বেনন বজ্জাত গ্রাটা, তাব কাছে ক্ষম্ব বাটো,
প্লাঘাত ববে প্রতিক্ষপ।

ভাঙো ভাঙো বুন খোব, চেতনাব নাহি গোব, নখন সুদিত নিজ ভানে।

ন্ধন পূৰ্ব বিষয় বাবে।
নিশি শেষে দাভ বেষে, জেলে ক্ষয় গীত গেখে,
তাৰ স্থ্য স্থা লাগে কাণে ম

অমনি চেতনা চব, মন আব ছিব নব,
ক্রনিচে বাবলা পুনবাব।
আব কি তেমন চবে, তুমন দলিত ববে,
পুবাকিত কবিব সামাণ।
তবন ছিলাম বাচা, পুন আব নাই ডাচা,
আমি তো সে মামি আব নই।
এখন দে ভাব বই, এখন বে চই চই,
দেই ভাবে কবি কই হই।
বিখিকে লিখিতে মন, থোলে গেল ইডাইন,
মহম্ম বহিল ডাই পেব।
কাছ কোমে বেংগ প্রতি, আলা এই হলো ইতি,
প্রতাবে বেংগ প্রতি, আলা এই হলো ইতি,
প্রতাবে বেংগ প্রতি, আলা এই হলো ইতি,

# বিজ্ঞান-কৌশল

বিচিত্ৰ বিজ্ঞান বিদ্যা, অতি ওচকৰী : গাব বংল জলে বংল, কলে চলে তবি ॥ না নানে উন্ধান ভ'াট, নালি কোন বাব। বায়ুবং গতি কবি, অতি বেগে বাব ধেল' তাল মানবেক, কত উপকাব। কতমতে হইতেহে, আশাব স্থসাব। অন্থোদে অপাব, মাগ্র ছোবে পাব। বাাণংবী বাণিজে, ৰ'ভ, কবিছে বাাপাব ৷ পাইতেছি কভ দ্ৰা, প্ৰযোজন মত। বত বত দেশে যায়, লোক শত শত গ ন্তন নৃতন দেখে, কুখণ অশেব। স্বলেশ বিদেশ আবে, নাহ্য বিশেষ 🛭 ভাগজে কেবল নহ, কত দেখ আব। বসু, অসু, ন্রু আদি, আশের প্রকার। সব দিকে বল তাব, কল বাব চলে। জ্ঞান-গভঁ প্ৰভ যত, ছাপাহয় কলে॥ এট কলে কোন বিছু, থাকেনা অভাবে। কলেব সৃষ্টি ভগ্ন, জ্ঞানেব প্রভাবে॥ বিদ্যাবলে বৃদ্ধিবলে, যাহা করে কাব । গুণমৰ স্মুদ্ৰ, অতিশ্ব চাক। দেশনা বিলাজে গিয়া, জলেব ভিতৰ। বিৰূপ বংৰছে এক, সেতুমানাছৰ ৷ উপবে ভাগাজ চলে, নীচে চলে নব। অপ্রূপ আর কিবা, আছে এব প্র<sup>9</sup> বদ্ধিবলে জানকীব, উদ্ধাৰের ছেত। সাগ্রের জলে বাম, বারিলেন সেতু। স্থভাবে সম্ভব সৰ, বিদ্যাৰ কুণাৰ। বিনোদ বিমানে চোডে, শুন্য পথে যায় । দেব বোলে জ্ঞান হব, মাত্রেব কাবে।

ভূচৰে "প্রেছন" দেবে, গালী মনে কাছে।

নানগ নামেতে এক, বিয়ান কবিবা।

কেবিতেছে কত শোহা, আবালে উড়িবা।

ইক্সজিৎ নামে চিন, বাবণ-নন্দন।

ভূবিয়া আকার পতে, যে ববিত বব।

দেব বি ক্সলব বব, খবিব ভিতব।

স্থাবক্তর নামে, চলে নিচেব।

#### তারের খবর।

'উদ্যাৰ টুক টোগ্ৰোহ'' বিজপ প্ৰবাৰ ।
কচিন যাগো উপ, না হৰ প্ৰচাৰ ॥
ভূমিতলে, কলে, ভালে, নুক্ত কাছে ভাব।
কলে চোলে, আলে বাৰ, নত সমাচাৰ ।
কলে কোলে আলে বাৰ, নত সমাচাৰ ।
কলি কৰানে তালা, চতাৰে বটনা।
আৰ্শ্ন কৰানে তালা, চতাৰে বটনা।
লেখে অতি ববল'তে, লাভ পাল বাছ ।
লগনে চপলাৰৰ, চলাৰ বৈ জণা।
সপনান কৰে গতি, হাৰ অকুলপ।

প্রথমেতে এই বিদ্যা, বে ক্বে প্রকাশ। কোথা গেলে দেখা পাব, হব ভাব দান ? কুশলেব এই কাঁরি, কবিলেন বিনি। সামান্য মানব নন, দেখলোক তিনি।

# রেলের গাড়ী।

কি আদ্বর্ধা বেশবোহ, বেশ বেশ সাবে।
ভাবতে ভাবতী ভাব, কে গুনাছ ববে?
এ ব্যাগাধ বে প্রকাশ, বন্ধ কাছে ববে?
ভাবতে কি চিল ইং। ' ভাবতে কি ভাছে '
কলতে চলেছে গাভী, নাম বালপুর।
চল দওে চোলো বাব, ছিনিব পুর্প ।
চমহবার দেখি আধি, মেলিতে মেন্দতে।
বক চুল পতে গিলা, দেখিতে দেখিতে ভা
বিদিন্ন, দাঁভাবে চন্দ্র, পুর্প থাকে পির।
এত ক্রভ চলে ভতু, টলেনা কবি।
এই থালে কবিলভাতা, এই বর্জনান।
এই থানে মানকরে, ছই আহিলান।
নাগিবে প্রযোগ বেলি এবন ভবনি।
বাগিবে প্রযোগ বিলি এবন বর্মনি।

বিছ দিন পৰে পাৰ, আনন্দ অপাৰ। বাসি হোৱে কাশীবাসী, হবনাকো আব । বিবালেতে থাবাণসে, কোবে পুৰ ধুম। বেতে বেতে বাডী এসে, ইংখে দিব ঘুম # দিলী বাব, আগ্রাব্রে, বাব কড়দেশ। লাহোবে শিশ্বের দেশে, কবির প্রবেশ ঃ জনিবে মনের ঘবে, আহলাদেব আলো। একে একে দেখা গাবে, শেখানে যা ভালো। ৰুব নৰ বিলোকনে, ঘূচিৰে ৰিশাপ। সকলের সহ হবে, স্থেব আলাপ 🏾 তে প্রবাদী, তে নিবাদী, ববেনা প্রভেদ। প্ৰস্পৰ স্থালাপনে, দূর হবে থেদ। শাত্রিদের হবে কত, তীর্থ দবশন। আমকেৰ নানা দেশ, হইবে ভ্ৰমণ 🏾 ছাত্রের হইবে নানা, ভাষার চালনা। যেখানে সেখানে হবে, বিদ্যাব সাধনা ! বলিকেব বাগিজ্যের, বিশেষ কুশল। সহজেই হবে সব, মানস সফল 🛭 এ দেশ, ও দেশ হবে, সমুদ্য হাতে। সুণভ হইবে তাহা, প্রযোজন যাতে। কোনৰূপ সাধ আব, ববেনাকো আট কা। বাবেলেৰ মেষা যত, থেতে পাব টাট কা।

#### কবিতাসংগ্ৰহ ৷

২৮৮

হিন্হোষে কাৰী-মৃত্যু ইচ্ছা মাছে বাব। সন্য গিলা কবিবেল, উপায় ভাছার। যা ভাবিৰ তা কবিৰ, হবে যোগাযোগ। স্থপ কুপ ভোগ সুহী, ভূথের সম্ভোগ । এ বিচিত্র বাচ্প-বথে, যে জন চডেছে। স্বিশেষ গুণ তাব, সে জন জেনেছে। পাপিব পাথার ৰল, বত বল আছে ? দেখিবা কলেব গাড়ী, হারি মানিবাছে । বে দেখেছে দেই মবে, ভাবিয়া ভাবিয়া। ক্রেছে এরপ কল, কিন্তুপ কবিবা ? দ্ববাসী আছে সব, অবাক হইযা। যে অনিছে, সে বলিছে, দেবতার জিলা। এমন অপূর্ব কভু, দেখি নাই আগে। মোহিত হবেছে মন, নব অনুবাগে 1 পুৰ্বাণেতে লেখা আছে, নলেব ব্যাপাব। অতি অপরপ গতি, ছিল নাকি জাঁব গ চোপে বিছু দেখি নাই, গুনি শুধ কাৰে। মন্তব ইইটে পাৰে, এমৰ প্ৰয়ালে i নৰ পথ. নৰ বথ, এই কৃষ্টি বার। কুপাববি লোন তিনি, প্রণাম আমাব।

# ঘড়ি

-0-

তিব চোকে বীব মনে, গে দেবিবে ঘটি ।
সে বলিবে অবিকল, ঈশ্বেব ঘটি ।
কে কাশে ঠিক চলে, বিকল না চব ।
কাজিবল কিবেচেচ, কালেব নির্মন্ত ।
কাজেবল কবিতেচচ, কালেব নির্মন্ত ।
কাল পরিচৰ (১) সে বে কাল-পরিচম ।
কাল পরিচম (১) সে বে কাল-পরিচম ।
কাল, চই, চিন কবি, আকে আগে ফিবে ।
কে, চই, চিন কবি, কিবে নাম লিবে ॥
ক্রান্তিক কবি কিবে নাম লিবে ॥
ক্রান্তিক কবি, জুলনা তালাব ।
বিবল চইলে কাটা, চলেনাবের আব ॥
৬৩৭, জ্ঞানে বে ব্যবহেচ, ঘটিকা লাবের ॥

কাথাৰ আছেন তিনি, ভালাক ছাডিয়া।

উদ্দেশে প্রথাম কবি দেব তা বলিখা।

(.) কে পকে কাল পৰিচৰ অধীৎ সমাৰে পৰিচৰ এবা অন, পত্নে বনে
বিচৰ অধীৰ্থ কৰে কৰেই আৰু বাট্ডেছে।

### বন্ধুত্ব।

अभिया हानिया वृद्धि, वन्नस्य विधि। নিব্যাশ অপর্গ, প্রেমর্প নিধি। সেই নিধি-নিল্যে, পেল্যে এক মীন। অপাক ভিক্স ভবে, রুছে বাজি দিন 🛭 বন্ধৰ নামেতে যাহে, কভে কবিগণ। অধণ্ড আনন্দ বাহে, লভে ত্রিভবন। এমন হুখেব বস, আব বুঝি নাই। মধ্য বন্ধতা অংশে, বলিভারি যাই ঃ অসার সংসাবে সাব, বন্ধব প্রবয়। যাহাতে সরল কবে, পাষাণ জন্ম ॥ প্রব চবিত্র কেবে, মিত্রতার বশে। বসভরানানাকার্যা, এই প্রেমবসে ॥ স্কুগ্রীৰে বলিশা মিতা, রাম রলুবৰ। দশগ্ৰীৰে বধিলেন, ধৰি ধৃদ্ধাৰ । হর্ষিত ভানকী, কানকী লভা পাই। মধুব বন্ধুত্ব গুণে, বলিহাবি বাই। ভাৰতে এ বদ কিবা, বচে দ্বৈপাষণ ৷ মধুৰ বন্ধুত গুণে, সিক্ত নাবায়ণ 🛊 পাইলাক কণাৰপ, ক্ষীবদের কীব। श्रेथियोद्ध चव करत, यनक्षत्र बीत ।

コネン

কবিতে বন্ধুব তৃষ্টি, দেই ভগবান। সহোদধা স্মৃত্জাধ, কবিলেন দান 🏾 ভাৰত স্থৰত স্থা, শ্বৰহ সৰাই। মধুব বন্ধ হ গুণে, বলিছাবি বাই। ভাগৰত ভাগে ভাগে, এ বদ বচনা। গোরুলে গোপালরুল, মহিত হচনা ৷ প্রেমানদে চলাচল, বাথাল সাভিয়া। म्बरडी मध्य मह, दीभी तालाहेश 1 विशास बाँ। हाय खुल, धरि । शायकन । বালিনীৰ কালীৰহে, কালীৰ দমন 🛭 কতবাৰ গোপকুশ, বাঁচাম কানাই। মধুব বন্ধৃত শুণে, বলিহাবি বাই॥ এট বদে পরিপুণ, নানা ইতিহাস। পুরাণ পুরণে শাস্তে, সদা ফুপ্রকাশ ট ভত্দিন বৃদ্ধেব, বাজানিকপ্ৰ। যতদিন বন্ধু ভাবে, ছিল বাজগণ ঃ প্রস্প্র ছেষাছেবে, নষ্ট কবে দেশ। জনচন্দ্রে পৃথুরাজে, মজার বিশেষ ॥ ,শাতৰতামুখে দিই, কালীচণ চাই। মধুব বহুত গুণে, বলিহারি যাই ॥ চুল্ভ নাহিক কিছু, ভুবন ভিতৰ। অকি তীন দীন হয়, বাজ্যেব ঈশার।

নবাব নাভীন হয়, বাঁদীৰ নক্ষন ! পাত-পদ্ৰ প্ৰাঞ্চল, বাজ সিংহাসন ! ভাটকভ মহামানা, গতাসুম্পাননে । স্বলি স্থাত হয়, মহুবা সাধ্যে। সৰ নিলে কিন্তুদে, বন্ধুত্ব কোপা পাই গ মৰুব ৰক্ষ প্ৰংশ বলিভাবি বাই ॥ ধনেতে না নিলে বন্ধ, এমন কি আছে ! দশানৰ আনে মতো, পাবিছাত গাছে এ ধনেতে ভাজেব বোজা, হটল ক্লম। ধনে হিন্দু কন্যা প্রাপু, হইল য়খন এ ধন লোডে ধর্মতাক্ত, হিন্দুব সন্থান। ধনে শদু হৰ কলী, পণ্ডিত বিধান 🛭 विश्व थरन बच्च यह, नोहि मिरल छाडे। মধুব বকুছ ৩০ বে বলিহাবি বাই। বাচৰলে পৰাক্ৰাস্ক, হয় বাচ জন। বণজিত বণজয়ী, আচে নিদশন 🛭 চক্ত গুৱাকৌ বিহলো, মগ্ৰ-ঈশ্বৰ। বিক্রমে বিক্রমাদিতা, হলোনববর 🖠 এইরপে বাহবলে, কড শত জন। অনাবাদে লভ্জ কৰে, মানসেব পণ ঃ কিন্দাহি মিশে বন্মনে ভাবি তাই। মধুব বদুৰ শুণে, বলিহারি বাই 🛭

তপ্ৰশে দুখানন, খাসিল ভূবন। তপ্ৰলে বিশ্বামিত, হইল আকাণ চ চবিশ্চকু নামে ছিল, এক নুপৰব। তপ্ৰলে ছইল দে, অজৰ অমৰ ॥ কিন্তু বল ভপৰলে, কোনু মহাশ**ৰ**। পাইলেন প্রিয়তম, বন্ধু সদাশ্য <sup>9</sup> বিনাবনুসৰ পাই, তপস্যাৰ ঠাই। মধুৰ ৰন্ধ অভণে, বলিহাৰি বাই 1 পেয়েছি বান্ধব এক, অমূল্য অতুল্য। ৈৰলোর সুধ পাই, তাৰ আতুকুলা। চমংকাৰ ভাব ভাৱ, কটুভা অভাব। সে জেনেছে ভাব তার, বে ক্ৰেছে ভাব 🛭 স্বল স্থভাবে তাব, হ্রণৰ গঠন। গুডক্ষণে তার সহ, হইল ঘটন। ভাহাবে পাইলে আব, কিছুই না চাই। মধুৰ বন্ধুত্তৰে, ৰলিহাবি বাই। হেবিলে ভাহাব মুধ, ছঃধ পবিহরি। গুনিলে তাহার নাম, আনকে শিহবি। প্রেম-অনুরাগীনাম, বিখ্যাতনগবে। সতত সাঁতাব দেয়, সজ্জন-সাগবে 🛭 ন্ধননীবজে তাব, মাধুর্য্যের বাসা। মানস সে বস পানে, সলা কবে জাশা।

না ভাকে পিপানা তাব, সদা বলে থাই।
মধুব বজু বুধবে, ব.লচ।বি বাই।
বাহাৰ জন্তব পাহা, তিনিয়া জীবন।
সকলে সমান ভাব, সদা ভদ্ধ মন ।
জ্বল্যে শৌহাৰ বাব, দৃহাং হেম-ভাব।
পৰ ভাবে জন্ম নুক্ত, চকে জনিবাৰ ব প্ৰেব স্থাবে বাব, তুনি হৈম মন।
ভাহাৰে নিলাহে এই, বাহৰ বছন।
অন্তব্য বানক বেন, নক্ষৰ বাবাই।
মধুব বছ বুধব, বিলাই বাই।

# ভারতভূমির হুর্দ্দশা।

ভাগতের কশা হেবি, বিধাবে জ্বনর ।
জননী-ভূজাবো বর্ধা, ডাপিত ভুনর ।
জন কলে প্রাচীন স্থাবিক স্তুপর ।
জনস্তর বলি কভু, প্রভাব না হয় ।
বিপুরণে বিশ্বাতীর, বাজা রাচ আসি ।
স্বৰ্জণ শশ্বার, জাভাবিল প্রাসি ॥
বেদরল প্রধাতীয়, নব বালা ক্রমে ।
নামুল্য নাম্কনা, বোল গার ক্রমে ॥

নিটিভ মানতী লতা, ভাবতেৰ ভাষা।
কটুতা কীটেৰ ৰাজে, নিতি মিলে বাসা।
কবিতা কুজুম কলি, নুটেছিল বত।
মাতিতা স্বজ্প মধু, পূৰ্ণ অবিবত।
আনকাৰ প্ৰস্তুত্ব, লাগতো পৰাগ।
বৰ্ণবিশ বৰ তাৰ, স্থাপিটিভ বাগা।
শাস্ত্ৰকাপ ক্ৰাপ্ত, বাংলি তাৰ বাংলি
ভবাগতে চত্ত্ৰিলী, ক্ষাণ্ডিপাৰ।

ভ্ৰমণ তে চহুৰুগা, কাম বাবে পাৰ । বেদ বিধি বসভাব, অপ্তৰণ ভাৰ । কুবা ফুড়া হত ভাৰ, টেই লবে পান ॥ অধিকোত্ৰ আদি কিলা, কৈনিছিক ক্ৰিনা! কোলা কুবা কোলা ফুলা, এ সৰ আহিলা হ ক্ৰিনাৰ বছৰ বীলা, দিল কেই কলে। অসু বা লাইকো বাবে, অনিভা বিবলে॥ এমন অবেৰ লভা, আন্তৰ বিবনে।

এনন স্থাবৰ লগা, আপ্ৰব বিষয়ে।
দিন দিন ব্ৰিথমানা, গুণেৰ বাননে।
ছাৰ হাৰ সভাপ্ৰতী, মহাৰা কোথাৰ দী
অসত ইইল সভাচ, নিগাৰি প্ৰতাৰ।
অবিলায় অবসক, মানবেৰ নন।
অবিৰোধ অবিনাই, আৰবভাৰন ।
অপ্ৰবেধী অবিনাই, আৰবভাৰন ।
অপ্ৰতা প্ৰবাহ প্ৰথম সাৰুজনে।
প্ৰবোধ প্ৰতিৰ কল্প, নাহি হয় মনে।

প্রদীপের দীর্মি রূপ, প্রপঞ্চ আয়োদে। मृश्र मन मधुकद, अमहा-अस्माहत । প্রচায় প্রবল অতি, প্রস্তিক প্রসঙ্গ। প্রের পাইয়া সদা, দথ কবে অজ । বাগে অভুরাগ হত, বোহাল বসনা। ন্ধনে ন্ধন কবে, আঞ্জনের কলা ৷ গবল মিশ্রিক জাতে, মাধ্ব বছন। ক্ষমা শাক্তি আমলি হয়, যাহাতে নিধন । कहें। कर भार कार. मताल खब्दि । Ms (६ मधीरव रहत. भरवावव-जीव । লোলিত হযেছে পুনঃ, লোভরপ ফাস। প্ৰায় মনেব গলে, বাসনা বাতাস। প্রদাবা প্রধন, হরণে ব্যাকুল। বিহবল লালসামদে, সদা স্থলে ভল 🛭 মোহ মেঘ করে আছে, বিবেক আছেয়। চেত্ৰা চ**দ্ৰিমা** বাহে, গুপ্ত প্ৰতিপ্র ॥ দাবাস্থত সহ সমাবেশ সর্কাকণ। চিত্রের কমলে মারা, হর সঞ্চারণ ॥ মদেতে প্রমন্ত মন, বিপদ ঘটাব। প্ৰের সম্পদ্ধে সদা, কাত্র ক্রার। ঈর্বা হিংসা ছেম মদে, পূর্ণ এই দেশ। সকলে সমান নাই, ইতর বিশেষ ৷

গবিমা গবলে গেল. ঋণেব গৌবৰ। আপনি কৈবল্যধান, অপৰ গোঁবৰ ! এইরপ বড়বিপু, নিবাবিত নহে। সোণাৰ ভাৰত জুমি, ভুমা কৰি দহে ॥ যত লোক অল্যে অবশ কলেবৰ ৷ দ্বিদ প্ৰেব ছিল, স্কানে ত্ৰুপ্ৰ ট নাহি মাত্র ঐক্য সংগ্রভাবের সংখার। হীন ধর্ম কর্মাম ম. ৩০%। স্বাহার । কুক**ৰ্দে**তে শুনা হয, বনেৰ ভাণাৰ। স্তৰ্মে মৃদিত হণ্ড, কমল আকাৰ 🖠 কোনমতে বৃদ্ধি বংছে, হন আচীৰ প্ৰৱ। কবেন বিবিধ প্রা. আছে আদি সর্বা। কিৰূপ পাতক বৃদ্ধি, উৎসবেব দিনে। লিখিতে লেখনী যায়, লয়লার আমনীনে । হিন্দুধৰ্মাবহাহেত, যে হণ উদ্যোগ। বালিক সেতৃৰ প্ৰাৰ, দেই কক্ষভোগ ৷ ধশ্বকাহেতুঞাৰ, বিদ্যালয় আছে। ক্স দিল প্ৰেদশ অংশ্বিৰ ১ইবাছে। অবলেশ্য ধনাভাবে, হলো ছাযাবাজি। বিপকে দিতেছে গালি, বলি ছুঁছোপাজি

ধৰ্ম-সভাপতি সৰে, ধ্য-ক্ষিকাৰী। কি কৰ্মা কবিছে বত, উত্তবাধিকারী ॥ পিজা পৌজনিক, পূর একেশ্ববারী।
নাম মাত্র সভাক্রান্ত, সর্ক্মপ্রবারী ।
ভিল্ নাম ই'হাবের, চনেচে কেমন
নামেত বিচক মাত্র, মবাল মেন ।
ই'্রাবা কমেন পুলা, স্থান্তিরানগালে।
কোকিল পোমেন থেন, কার্ত্ব বহলে।
একপাতে পুলাভূমি, চলো চারখাব।
বিত্র ককলা বিনা, বজা নাচি আরে।
ভাবতের দলা হেবি, বিদ্যের স্কার।

# কবিতা ও কবি।

পান কৰি কৰিতাৰ, হুবল নধুৰ।
পোন তাপ ৰত সাহে, সৰ হৰ হুৰ 
কৰিতা অমৃত বংল, বে না নিবল তাৰ।
আৰিক কি কৰ বিক্, বুণা হুল আৰু তাব।
ছও ভূমি হুপডিত, বিলাৰ সাগব।
পানা লিগে বাধ্য কৰি, কও প্ৰিয়বৰ।
কৰিতাৰ প্ৰভিন্ন বাধ্য নাহি ধৰ।
কৰিব কৰিতা অধি, বাধ্যা নাহি কৰ

কি রদ নীবদ জুমি, বিবদ বিকট। কিলে কুমি বশ পাবে, গুণির নিকট ? ক্ৰিতাৰ প্ৰেমে বলি, নাহও প্ৰেমিক। কোথা তৰ বসবোধ, কিসের ব্যিক ? কাকেব ডাকের ন্যার, কর্ম্ম কুডার। তাহে তমি কত ৩৭, করিবে প্রকাশ ? ভাব বস প্রেম আছে, কোথার ভোমার গ কার বলে কর ভমি, পজাক প্রচার ? কবিগণ মহাজন, নাহি বাথে ধাব। বায় কবে পুঁজি পাটা, গুধ আপনাব। তোমার কি আছে পুঁজি ? সকলেরি ধারো 1 ধাৰ কৰা ভাৰ লোৱে, যা কবিতে পারে। । থেরো হোবে হেরো হোলে, মুখে বল জিং। জানিতে না পার কিছ, কাবে বলে হিত । पवि क्रांति नाना क्रथ, निधिद्र निधान । সাগবের লোণা জল, তবে কবি পান। সাগ্ৰ ডাগ্ৰ নাম, বিহীৰ ৱতন। এমন সাগ্ৰে আমি, কবিনে বভন 🛭 'কৰিড।' অমুচসিদ্ধ, ভাৰ বার চেউ ৷ এ সাগবে প্রেম জল, নাহি খার কেউ # মনের এ থেদ কারে, করির প্রকাশ স চার হাব ! এই ডঃখ. কে করিবে নাশ ?

কেহ আব নাহি চায়-মধুৰ স্থেদ। কাটেতে কাম চ মেবে, গান কৰে যশ। নিছাবাক আছম্বর, নাচিজ্ঞান বল। কাৰ বলে বল কৰে, কি আছে সম্বল ? কবিব মনেব মাঝে. অকল ভাঞাব। কিছতেই কোন কালে, ক্ষম নাই ভার॥ সাগবেতে ৰত চেউ, হতেছে উদ্ভৰ। কবিব ভাৰেব কাছে, তাবা প্ৰাভৱ ঃ এক বাৰ আবি হব, ক্রমেট উদয়। नियज तहती त्थात. विश्वास मा हर । সীমার ভিতৰে আছে, সমস্তের নীর। এ সাগবে কত জল, বিভ নাহি ভিব গ দে সাগৰ ভথাইবা, কত দীপ হয়। এ সাগ্র কোন কালে, শুধাবার নর ॥ ষে সংগবে হুব ভাটা, হাস বৃদ্ধি ভাই। ইবে নাই অব ভাটা, সমান সদাই। বুণ নাউ, শীমা নাই, ডুফান লাহ্য। নিবমল নিবাকার, নীবাকার নয় 🕯 দাগৰে ভবিলে পৰে, প্ৰাণে মৰে জীব। এ সাগবে বদি ভোৱে, জীব হয় শিব ঃ দে সাগব ধবিবাছে, নাম বন্ধাকৰ। এ দাগত ভোগ, মোক, ধনের আকর।

ঈশ্ববের এই স্টি, নাম ধাব ভূত। কৰি যাহা সৃষ্টি কৰে, সে ভূত অমুত ॥ জগতের এক ভাব, দেপ চরাচবে। অভাবে স্থভাবে কৰি কতভাৰ শৰে। ভঙ্কেলে এই সৃষ্টি, অভি প্ৰাতন। কাব সব সৃষ্টি কবে, নৃতন নৃতন। সেই সৃষ্টি অনাসৃষ্টি, সৃষ্টিছাডা ভাই। কৰি তাহা সৃষ্টি কৰে, সৃষ্টিতে যা নাই 🏾 ''রপক'' কি অপস্থপ, আভাদে আতানে। জনার প্রকাশে কত, সভাব প্রকাশে। नग, नम, महावद, मांगड, कानन । ৰূপকে কবিছে কৰি, সবাৰ বৰ্ণন। ঈশ্ববের সকল, স্ষ্টিব বিপরীতে। কৰি পাবে কৰিতাৰ, বচনা করিতে ! কে বৃক্তিৰে কবিব, মনেৰ যত আচি ? গাচেবে মাছৰ করে, মাছবেবে গাচ। ক্তর ভাবে ভাব ভার, কতদিকে ছটে। সকলি কৰিভে পারে, মনে বাহা উঠে ॥ "কবিবের প্রজাপতিঃ" শাল্পে এই কর। জননায বৰি. কৰি. সমৰূপ হব I প্রকাশে কবিছে রবি, জগৎ প্রকাশ। বিভাব বিভাগে হয়, তিমিব বিনাশ ট

### কবিতাসংগ্ৰহ।

ઝ૦૧

ভাব, ভাষা, রদ, প্রেম, প্রভাব প্রচুর। মনেব তিমির কবি, কবিতেছে দুব 🛊 বিভ কবিলেন কুটি, ছর ৰূপ বদ। তার মাঝে এক রস, পাইরাছে ধরা। ক্ৰি ক্লুবসুন্ব, নন্দ কিছুন্র। 'নবর্ত্তপ গুণে কবে, প্রমোদিত নব। বচনা কবিৰে কৰি, বখন যে রস। সবাস দেখন হাব. সে বাসর রখা। পীত, পদ আদি কবি, কবিজা যে সৱ। তৰ নাই মল নাই, অতল বিভব ॥ শিব, বিধি, মহু, ব্যাস, গুৰু, প্ৰাশ্ব। বশিষ্ঠ, বাত্মীকি আদি, কত কবিবৰ । প্রণিপাত কবি আমি, জাঁদের চবণে। ভকু বোলে সম্বোধন, প্রতি হৃদে হৃদে। এ সৰ কবিব ৩:৭. কব কর মনে। তাহাদেব ক্লুত শাস্ত্র, আনহ বতনে । ফলেছে কি স্থাফল, কবিরূপ গাছে ! এমন মধুব আব, জগতে কি আছে ? উপদেশ কবিজেছে, সকলের শিব। কে বলে মবেছে তারা ? সবাই সঞ্জীব চ স্কলের কিছ নর, সমান স্থভাব। বাহার বেমন ভাব, তাব তাই লাভ ।

কবিব করুণা রসে, প্রবোধ উদব I হইবাজীবন মুক্ত, জীব শিব হয়। এমন কবিতা প্রেমে, মুঝা বেই নয়। ভ্যানক পশু বোলে, তাবে করি ভয় 🎚 হাব হার বিধাতাব, উম দেখি হেন। ল্যাফ আৰ লোম তাৰ, দেন নাই **কে**ন <sup>9</sup> কবিতা কমল ফুলে, আলি নয় যাবা। জনপদে জনমাঝে, কেন থাকে তাবা ? মাঞুষেৰ খালা যত, তাৰা কেন পাণ<sup>?</sup> বনে গিবা পাতা, ঘাস, বেক নাহি খায় ? বিধি কিছুনা কবিল, গণ্ডদেব ক্ষতি। যত কিছু বাগ ভাঁৰ, মাহুষেব প্ৰতি 🛭 থায় পৰে সমুদ্ধ, নবের মন্তন। প্ৰবৃৎ চলে বলে, কাবে আচরণ 🏾 গীত ভূনে প্রেমাকুল, পভকুল হত নৱপত বাৰা ভাৰা, সেই প্ৰেমহত ৷ কাষে কাষে ভন্ন কবি, পশুদেব সেখে। কাননে গুরুক্ গিয়া, পাতা ঘাস থেযে। মিছে কেন কৰি আৰু, লেখনী ধারণ। ফল নাই দে কথাৰ, কবি আন্দোলন 🏾 সহজে মানব দেহ, সুলভ তোনয়। মান্তেষের দার দেই, পণ্ডিত বে হয় !

পণ্ডিতেব সাব সেই, করি হব বেই। দৈবশক্তি আচে ধরে, মহাকৃষি সেই g ভাব্ক প্রেমিক হও, ব্বক সকলে। মধুকৰ হোবে ৰোদো, কবিতা কমলে চ হথে থাও মধুবর, লও ভাব গুণ। চোৰে প্ৰীক গাঙ্গীত, কবি ঋণ ঋণ। হাদনে উদয় কৰ, অসুবাগ বৰি। ক্ৰিডাৰ ভাৰ লও, নিজে হও ক্ৰি। গদ্য হয়, পদ্য হয়, যাহালয় মনে। প্ৰম প্ৰবন্ধ লেখু, বিশেষ বতনে ৷ আপনি লিখিতে শেখ, পার বে প্রকাবে। লেবাও শেখাও সবে, সাধ্য অভ্যারে। হাতে লেখা, মূধে বলা, ছুট বেন চলে। সমাজে বিখাত হও, বক্তুভার বলে চ চালনাৰ<sup>\*</sup>নাহি বৰে, আব কোন ছঃথ। যত ভূমি **জ্ঞা**ন পাবে, তত হবে স্থুধ 🛭

## গান।

''নবিদ্যা সংগীত প্ৰ'' শাস্ত্ৰে এই কয়। প্রেম্ম্যী বিদ্যা হেন, আব কিছু নয় ৪ কত বাগে কত রাগ, বাগিণী সাহত। ক্ষণমাত্তে কোরে দেব, মানস মোহিত। সমধে যদাপি ভন, স্থলনীত গীত। কদয় কুমুম আমু, তমু পুশক্তি। পাষক বদাপি গাব, মন কবি ছিব। গ্ৰায় গ্ৰাষ্মন, চলাৰ শ্ৰীৰ 🛚 না কৰি ভোজন পান, যায় ভূকা কুধা। প্ৰতি বৰ্ণে বৰ্ণে কৰে, চুকে বাৰ স্থধা ॥ বীণা, বেণু আদি যত, সুমধুব স্বব। স্থবৰে নীবৰে থাকে, কোকিল ভ্ৰমৰ 🛭 সব'গে উঠিল ভান, সুধামৰ ববে। কাননের পঞ্জ, পাখী, প্রেমাকল সবে ৷ বাগের স্থবাগে রাগে, বাচে অভবাগ। বাগ ভনে বাগ ছেডে, সাধু হব নাগ # যদাপি ভনিতে পাব, কুমধুব গান। হুননীৰ মাই ফেলে, শিশু পাতে কাণ । প্রেমে প্রিপুর্ণ হয়, পুণ্ডিত মনে। ফুটতে না পাবে কিছু, মুখের বচনে ।

প্র পারী সাপ আদি পোরী বল্ডব। সকলেবি সমভাবে, সবস আহবে। মানবে বৃথিতে নারে, সে ভাব প্রভাব ৷ নিজ নিজ মনে বাখে নিজ নিজ ভ ব। তি ভাবে ভি ভাবে ভারা কেবলে সে ভাব ? সে ভাব ভাবিলে হয়, স্থভাবে অভাব ৷ পিয়ত্রহাবিদ্যানাট সংগীতের পর। এ বিদাবি সিভ ভোলো কল শত নব। শুন শুন শুন শ্ৰীব, যদি চাও ছিড। প্রীতচিত হোরে গাও, বেন্ধের স গীত ঃ বৰ্দি না গাহিতে পাব, ভন সাধু পদ। প্ৰেম্বস ৰুৱে হও ভাবে গৰ গছ ৷ ইখবের ঋণ গান সেই গ'ন গান। শুনিলে পবিক্র হবে, জড় ইবে কাণ ঃ ভাবেব ভাবক ছোৱে বস কর পান। মক্তিব সোপান এ বে, মক্তির স্থোপান। অৱসিক যে জন সে, কি ব্রিবে সাব? थ (व गान, शान नव, कारनव वाशाव ।

## যৌবন।

সিঞ্চিয়া অমৃত নিত্তি, জীবে দান দিল বিধি, নিৰূপম যৌবন যৌভক। যে বতন স্বাইইল. কোটক'ল না হি মিলে. বালবুট কালেব বৌতৃব। জিনিয়া সুমন্ত মণি, ধৌবন বতন গণি, তৰণী ভূলিভে ডেজ হ'ব। থবত্ব কর ভবে, হাদর বাজীবববে, ফুলকবে হরে অন্ধকাব । আনন কুনাৰ প্ৰত্ন, বদ ভাব মকবন্ধ, ট~ টল বংব নিবস্কৰ । বিবিধ প্রবন্ধে তায়, কেশি করে ফুরকায়, বদ ধাৰ মন মৰুকৰ। নতানবরস বজে, নিভানববাস মজে, নুত্য কৰে পশিষা নীবছে। কড় পৰিহাস লাস্য, হাস্যে বিক্পিত হাস্য, প্ৰতি আলে অ নক উপকে। কথন কৰণা হলে, নহন নীবদ বদে, ভৱিবে বরিষে বাবিধাবা। সেই ধাৰা ভাৱাৰাৰা, শীতল বাছাৰ ধাৰা, ধৰা ভাপহৰা ধেন ধাৰা।

কথন ঘূপার বশে, বিকল বীভংস বঙ্গে, মানদের শশ প্রায় গজি। मार्वानत्त मध वन, कुम्राम् कृद्ध मन, চপল চপলা সম অভি। অপ্র পরম রক, ভাতে হলে আশা ভক. প্রবৃদ্ধি পিপাসা পরিশেষ। **डान दाना ভानदाना, ভाহে लिख ভान दाना,** আনন্দের নাহি থাকে শেষ। হতাৰে হতাৰ বাজে, বিবাপ প্ৰবাপ পাডে, শোচনা প্রেমিক মন ছেবে। শ্ৰান্তি নাহি হব হত, তান্তিভৱে স্থাৰিয়ত, সকল স্থাপন সম চেবে ৷ পরেতে প্রবোধ লবে, প্রণযে বিরালী চযে, অনারপ ভাব পর্থে ধার। व्यवस्त्र इलाइद, निद्रविश निद्युद, क्राम क्राप्त शोवन शनाव। হেবিষা যৌবন অন্ত, মন স্লা ছ:ৰপ্ৰস্ত নিবস্তর আনন্দবিচীন। कुशाय अभवा कहा, भाउमान (भागानाना),

> প্রদোধের প্রসাদে মলিন। ———

# সতীত্ব।

বমণীৰ হতে শোভে মনোহর দীপ শীঙল ভালোক তায়, জিনি দিশা বণ ৷ অবস্থাৰৰ অতি পাতাংশ চয়। প্রথণ তপন মৃত্র, নানে উদয়। সতীত জুলাব নাম, জুখল আহিংগে। স্থলনীত সম্দিত, এ তিন ভবনে । তন ছে চঞ্চনাবালা প্রদীপধারণী। गविशास श्रमन क्यह विस्तानिनी । ক্লবেব হ'রে হ'ছ বাধিল তাহাবে। প্রতিপরে ধৈষা ঘত, চলে দীপাবাবে ৷ লজ্ঞারূপ চাব বঙ্গে, দেহ আবিব**্**। ভবে ভব অমঙ্গল, না হবে কখন ! সঠী ঘুত গম তুগ অতি ভপরণ। অসংখা প্রহ্বীতাহে, শমন স্বর্গা চাবিদিকে প্রাচীব বচিব তাছে শোভ ধৰ্ম, অৰ্থ, খোক কাম নাম মনোলে ভাঃ ভদরবে মনোহব, আছে এক থাত। গভীব শৰীৰ তাৰ স্বভাৰেৰ জ্বাত। লজ্জান মে থাত বাত, এ সংসাবন্ধ। লম্ভাতব**ঞ্**তাকে নিষ্ঠ উপর <u>৪</u>

দৃষ্টিরপ কামানে, বিক্রম অভিশব। হুটজন সভবে, ভটস্থ হোগে বয়। ছাবেতৈ সবল ছাবপাল, কল, ভব। প্রবেশিতে ছর্গ মাঝে, কাবো সাধ্য নব # আমন উত্তম স্থান, অধিকাৰ বাঁব। প্রতিকুল জনে মনে, কি ভয় ভাহাব ? সীমস্তিনী সংবাদ্ধে, সভীত সংবাজ। কতলা অমলা দেই, অমল অস্কোভ 1 পতি প্রতিমতি নধু, সংখাবিত স্লা। ক্ষেত্ৰামে মধুকৰ, গুলবিত তদা 🛊 বশোরণ সৌবভে, পুরিল দিগ দল। লক্ষাৰ লাৰ্ণাবদে, ভাসে ও'মবস ঃ মিশি দিশি করণা, নীচাবে সিক বয়। প্রফল্লতা ভাব তাব, সাবলা বিনয় ৷ এ নহে সাম'ন্যভর, সমল কমণ। চিবলিন প্রসরতার করে চল চল চ বতিকাস্ত হবস্ত, হেম্ম কুম্মন্ব। সভীত করণ, প্ররূপ এই নয়। ধন্মরূপ হংস্বর, বিস্তাবিষা পক। २% से कार मारशकाड, विकासि विश्वक I

# রজনীতে ভাগিরথী।

আহা মবি অহানিকী, কিবে শোভা বরেছে।
বন্ধভাৱিত শানি, অকবেডি শোবেছে।
পূন্য প্ৰে প্ৰথমেত কাৰ্যেছে।
পূন্য প্ৰে প্ৰথমেত কাৰ্যা কৰিছে।
অধীতন নিম্মল, কৰ দান কৰিছে।
তানী তবকে তাবা, কত বকে ধেণিছে।
পবন হিয়োগ বোগে, কৰ বন্ধ হৈছিছ।
বনে কোনো বিবোগিনী, নিপ্লাভবে বোছেছে।
আহাবাপে পতিকাতে, প্ৰযোধিনী হোবেছে।
অহাবাপে পতিকাতে, প্ৰযোধিনী হোবেছে।
বা বৰ্ধ কলেবন্ধ, নিখল পিছিছে।
বা বৰ্ধ কলেবন্ধ, নিখল পানিছে।
বেধিয়া আহাবি কিছা, চানে বালিছে।
বিধিয়া আহাবি কিছ, চানে বালিছে।

## সেতার (১)

কোথাৰ সেতাৰ তাৰ, কোঞ্চর সে তার ?
কোথায় সে তাৰ কথা, কি কহিব আর?

<sup>(</sup>১) মৃত বাবু গিরিশচক্র দেবেব ফহিত কবির «বিশেষ মিত্রতা ছিল। গিরিশ বাবু নেতার বাবে। বিশেষ কক্ষ ছিলেন। কবি, জাহার মৃত্যুতে ইয়া রচন। কবেন।

দেতাৰ অনেক আছে, সে তাৰতো নাই। সেতার বাদক বিনা, সে তার কি পাই ? সেতাৰ সে ভার ছিল, তারে ভারে ভাব। এখন সে ভাব লাগে, কেবল বেভার । তাবে দিব তারে হাত, যদি পাই তারে। নতুবা হঃথেব গীত, গাব তাবে নারে। সঙ্গীত প্লায় ছটে, না পেয়ে সোহাগ। বাগ ভার সঙ্গে যাব, প্রকাশিয়া রাগ। মানের কে রাখে যান, অভিযানে মরে। তানানাল করে তান, তানানানাকরে। कृत्य পোড़ে काँदि हाल, कि चाह वाकाव ? কভা হোৱে কড়া তার, সকল বা যায়। দউড় দউড় দেয়, যুক্ত নয় সাজে। হায়রে দে সাঞ্জ আরু, এখন কি সাভে ? ভবে যে চোলের শব্দ, স্থানে স্থানে বাজে। টোল নম্ব গোল মাত্র, সে কেবল বাজে । মন্দিবে মন্দিরে পড়ি, চইতেছে মাটি। তাল হোষে তালছান্তা, সার হোলো আটি। বেহালা বেহাল হোয়ে, ঘেটাটপে ক্যা। ভন ভন স্থবে তার, রাগ ভাঁজে যশা। তান পুঝ আছে মাত্র, তান, পুরা নাই। থবচ কে লাধে আর, ধরচ না পাই।

লোখাবি দোষাৰ ছাজা, মবে অভিনানে। এমন কে আছে বেব, ফেব্দেব সাংগ ই জোবাবিব বোগে আব, নাহি কবে মধু। কাট বোৰে কাট্লোবে, দেটে বাব বছ ।

#### ঝড।

থন্ খন্ সন্ সন্ স্থীবৰণ হাবিছে।

'জজ জজ্ চক্ চক্ চক্ চন্দ্ৰ পাৰিছে।

চপলাৰ, স্থাবিৰ, আবাংশতে উভিছে।

ছিল সব, বলবৰ, কৰবনে বুজিছে।

ছতবন, উক্লৰ, বৰাতল গুজিছে।

বলতৰ, তিব নৰ, বায়ুৰেণে চুজিছে।

চেতে পৰ্ব, স্বাৰ, হাবে বাব পভিছে।

তম্বান্, অবিলান, হাবে বাব পভিছে।

বেগ্ৰুম, স্কুম, আকে গাবৈছা।

নৰ্বা, বন বলি, প্ৰবাৰ কাৰিছে।

নৰ্বা, বন বলে, বনে বোপ লাগিছে।

নন্বা, কৰে বল, বেন বোপ লাগিছে।

নন্বা, কৰে বল, বেন বোপ লাগিছে।

কন্বা, কৰে বল, ব্ৰুমেন বৰিছে।

তত তছ, তছ বছ, বিবেৰ বৰিছে।

প্রথাকুল, ভেককুল, ঘোরনাদ ছাড়িছে। ক্রমে ক্রম, পরাক্রম, ব্রহার বাডিছে। একেবাবে, এক ধাবে, বছবাত ঝাড়িছে। নীবদের, মন্তকেব, চুক্তা ভাঙ্গি পাডিছে। হলো বৃষ্টি, গেল বিষ্টি, বেন সৃষ্টি হাসিছে। ত্রিলোকেব, পালকেব, মহিমা প্রকাশিছে 🛭 ধ বিদেব, হানয়েব, দ্বাব খুলে বেভেছে। খভাবেব, দেখি ফেব, বচনায় মেতেছে।

ৰডাক্তে স্বাভাবিক শোদ্ধ।

তাক তাক গৰজিত, ঘন ঘন ঘন কলা, হব্ষিত চাতক বেখা। চমকিত চঞ্চলা, চক মক চিকি মিকি, বিকি বিকি কিবে দেখ দেখা। বিহবিত শিখিকুল, শিহবিত স্থপ সহ. श्वा (लाहे। डेश कल प्राप्त । বিবিধ বিহলম, ভ্রমতি দিগল্পব, তকদলে কেহ দেহ বাথে ॥ স্থাতন সমীবণ, প্ৰাবহতি সংমধ্র, নুভাতি পল্লব কাছে। প্রথর কিরণধর, দিনকা বৃহকেত, ৰুকায়িত জলধর আডে n

চবাচৰ সুশীতদ, নিহত নিৰাধ তথি, নহি নহি সন্তাপ জালা। চেলহতি তককুল, জলকণা খেলখতি, শোতে যেন মৌক্তিক মানা॥

#### ফুল।

একাবলী ছাঁদে তোমাবে বলি।
তন হে কোমল কুত্ৰম কৰি।
বোলেকে পাইছে নাবক আবি।
কুলেক সকল, সুসতে চলি।
জাননা খরিছে লাবলা তব।
বিগত হইবে দৌবত সব।
দলন কবিৰে চলা তব।
বংগত চলি বলা আহি।
বংগতে উদ্ধা কংগতে যাব।
বংগতে কিবিক ক্রমির করিবে লাব।
বংগতে কিবিক ক্রমির করিবে লাব।
বংগতি ক্রমির করিবে লাব।
বংগতি ক্রমির করিবে লাব।

সেই সমীবণ ছবিবে প্রাণ।
কবিবে ভোষায় পুলি সমান।
সাবধান হও আসিছে কাল।
কুটবে সৌন্ধর্য্য অবে।

#### ভাগ্য।

ভাগ্যকণ চাকতক হোলে যাববান।
ফাবন সংগ্রেগে নব, চছ বণবান ।
ফাবন সংগ্রেগে নব, চছ বণবান ।
ধাবিক কাম্পুৰা, বেছহীন দেশ এ
সম্বন প্রিব কার, নাচি লাব দোখ।
সাবা উচ্চ বাকে কছ, কুবারব ভোষ ।
ক্রুডার কলাপ কছ, কেছ নাহি বাব।
ক্রিডার বাব কার্যাব কার্যাব কার্যাব
ক্রিডার বাব কার্যাব কার্যাব
ক্রিডার বাব কার্যাব
ক্রিডার ক্রিডার কার্যাব
ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার
ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার
ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার
ক্রিডার ক্রেডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার ক্রিডার

কোনকপে নাহি হয় ভাল প্রণিধান। আপনি বিনাশ কবে, আপনার প্রাণ ॥ প<sup>†</sup>াকেতে পতিত হোলে, মহাবল কবী। ছাডে ভেক ভীমরব, উপহাস কবি। সময়েসকলি হব, অস্কুৰ কিবা। সমযেতে শিব হয়, শঠবাজ শিবাঃ কেরবৃত্ত প্রামভ্তু, অভি ভব্ছব। পতজ পতজাসম, আজাধর ধ্ব 🛭 হবি হরি নিজস্থান, করিলে প্রথাণ। পুছে ভলে কুছে গায়, গুনীৰ সন্ধান । সবোবৰে স্থােভিড, কোমল কমল। মনোচৰ সুৰকৰ, সভাৰ অমল 🛚 ভগতেব দীপ্তিদাতা, ববি ছবি ধরে। প্রভাবে প্রভাবে ভাবে, প্রকটিত করে 🛊 বিত্ত দেখ কমলিনী, ছাভা হোলে দল। হবি লয় শোভা হবি, ৩% কবি দল গ হতাশন প্রিবতম, স্থা স্মীরণ । প্রবল অনলে হয়, বৃদ্ধির কাবণ ঃ কেমন বিচিত্র ভাব, ধবে সেই বায় : আলি**ন্সনে শেষ** করে, প্রদীপের আয়॥ চক্ষকারী চক্ষধারী, প্রভু ভগবান। ব্যাধের বাণের হার, হারালেন প্রাণ ।

ভাগাহীনে বৃদ্ধিহীন, সৃদ্ধ হব নিক ।
পোহৰেক পোঁচা খোৱে, মহিলেম ''ঈক্'' ।
সক্ষেক আন্দাল্য, দিছ বাব বাক ।
কাটে চুল বেঁগে ভূবে, মেলো দেই তাক ॥
বে জনার বে সমত, প্রস্কর হয়।
প্রথ আদি নিজে লয়, তাহার আপ্রম ।
অভার না থাকে কিছু, বাতে বর্গ মান ।
সবদিকে হোগে উঠে, সবার প্রধান ।
বিক্তিত হোগে মূল, অন্তিকুল বহ ।
শুল ভাগ কবি ভাগ, শুল বাহে আবা ।
মুল্ল ক্রমে ববে, প্রেগ্ন প্রচার দিন সম্বান হোলে গবে, নাহি আলে আব ।
মুল্ল কুল্মে ববে, প্রগার প্রচার ।
সম্বান হোগে বন্ধ, বিশ্বীত ঘটে।
বালে ধর্মা প্রক্রপ, বটে ভি না বটে ॥

### মানুষ সে নয়।

দেখিতেছি কত লক্ষ্, নবেৰ আকাৰ।
ভূতেৰ ভবনে আসি, কবিছে বিহাব।
বটে সৰ অবয়ৰ, মানবেৰ মত।
মানবেৰ অক্ষৰটো, বন্ধ তাৰ কত।

আছে বটে ভট পদ, আনেচ ভট ছাত। নাসিকা অধ্ব আছে, আছে বটে দাঁত ৷ চোকে দেখে কাৰ্পে গুনে, মধ্যে কথা কয়। মানুষ সেনৰ ভাই, মানুষ দেনয়া মাকুষ কাহাৰে কই, গুণ কই তাব ? ৰূপ দেখে নাহি হয়, গুণেব বিচাব। বাহিবেৰ ভাৰ দেখে, ভাৰেতে শলিষা। কেমনে জানিব তাবে, মাজৰ বলিবা? ভমি বল আমি বলি, মাহুব দে বটে। দলে যদি গুণ তার, নাছি থাকে ঘটে ॥ সে যদি এ অধনীব, অধিপতি হয়। মাত্র সে নয়ভাই, মাতুর সে নয়। नाकिए (वेरक (वरक, इरन धीरव धीरव)। এদিক ওদিক দেখে, চায় ফিবে ফিবে। নযনেব দৃষ্টি বাঁকা, গালভরা হাসি। দাতেৰ আগায় কথা, খুক্ খুক্ কাশি॥ ইচ্ছামত সম্বোধন, ৰাপু বাছা ববে। সে যদি মানব হবে, দানব কে ভবে? দিতেছে মান্তব বোলে, নিজ পবিচৰ। মালুষ সে নর ভাই, মালুষ সে নয়॥ অবিবত ঘ্বিতেছে, চোছে আশা বথে। এক বলে, আব কবে, চলে আব পথে 🛭

ভুলার ভবের মন, বছ কথা কোষে। ধবিতেছে বলবপ, বলরপী লোৱে। বাঁচ সাজে, ভাঁড সাজে, সাজে তাক চেলা। আডালে সাজিয়া ভত, মারে কত চেলা। এক ভাবে ভাব বাব, স্থির নাজি বয়। মাকুৰ সে নয ভাই, মাকুৰ সে নয়ঃ भारहत बाकारव अरम, नी हिनिये भारह (5)। পাঁচেৰ অভীভ (২) কেবা, মনে নাহি আঁচে। ভিতৰে বাহিরে পাঁচ, পাঁচে পাঁচে দশ (৩)। মানুষ মানুষ হব, পাচ কবি বশ 🛭 পথক পাঁচের গুণে, পাঁচেবে চালায়। সাত পাচ (g) কৰি কৰি, পাঁচে (e) পাঁচ পায়। একাদশে (৬) বেখে বশে, না শাসিল ছয় (৭)। মানুহ দে নর ভাই, মানুহ দে নহ। কেবল কামনা কবে, আপনাব ভিত। নাতি ভাবে স্থগতেব, বিশেষ বিভিত।

(১) পাচ--পঞ্চত। (২) পাঁচের অতীত-পরমেশ্র । (৩) দশ—কশেক্রিব। কর্মেক্রির গঞ্চ গু জ্ঞানেক্রির গঞ্চ।

(a) সাত্ৰপাচ-- দিন গণনা। (a) পাঁচে পাঁচ পায়-পঞ্জুতে পঞ্জুতের লয়।

(७) এकारण-यन ।

(৭) ছয় রিপা।

আপনাৰ কথ বিনা: কিছ নাতি জানে। আপনি আপন দেখে, থাকে নিজ মানে ঃ আপনি বাভায় মথে, আপদাব মান। কল মান কবে ভাব, নাছি পরিমাণ ॥ তমে পোজে অভিযানে, নাকবিল জয়। মাজুব দে নুয় ভাই, মাজুব দে নব ॥ একবাৰ মনে মনে, না হয় সবল। কেবল করিছে পান, গবিমা গরল। বদনে অমত কাবে, কত মিই বলে । পেটে তাব বিষভবা, কত ছলে চলে ॥ ছকেব ভিভবে টক, ঠকেব প্রধান। দেখিতে ধার্মিক অতি, বকেব সমান। নাতি ব্ৰোসাৰ মৰ্মা, নাতি ধর্মা ভয়। মাতৃষ সে নব ভাই, মাতৃৰ দে নব। না চিনিল আপনারে, না চিনিল পরে (১)। না ভাবিল আত্মভাব, ঘবে আর পরে 🛭 ঘবের (১) ভিতরে ঘর, ভোগ করে পরে। সে প্ৰ আপন কি না. চিকানাছি কবে a সে পৰ আপিন ছোলে, পৰ কেছ নহ। ভাবে যদি পর ভাবে, পব সম্দয়॥

(১) পর-প্রমেশ্ব। (১) যাবের ভিত্রর ঘর-

<sup>(</sup>২) মরেব ভিতৰ মর—দেহের ভিতার হৃদয়।

#### কবিতাসং**গ্ৰছ**া

933

মভাধন প্ৰমাণু, বুধা কৰ্মে ক্ষম ।
মানুষ দে নথ ভাই, মানুষ দে নাম ॥
নিখত নিম্ৰিত আছে, সকল চেতন (১) ।
দিনে বেতে একৰাৰ, না হয় চেতন ।
সকলেধি নিশা (২) কাল, নাহি দেখে দিবা (৩) ।
বুলনীব (৪) ক্ষম্বানে, মূপা হয়ে, কিবা ।
চাগালে না চাগে ককু ক্লাগালে না ক্লাগে (৫) ।

সতত রাগিয়া আছে, রাগালে না বাগে (১) । প্রমেশ প্রেমে মন, না কবিল ল্য ।

মাহৰ সে নয় ভাই, মাহৰ সে নয়। ——— কুপুৰু ।

ক্লপণ আপন ধনে, আপনি বঞ্চিং। মনে মনে ভাবে ধন, হইল স্ঞ্ছিং।

ক্ষেব ঘটনা ভাষ, না হয় কিঞ্চিৎ। ক্ষমন সমাজে হয়, সদাই বাঞ্চিৎ।।

(১) চেডন—মানুধ।

<sup>(</sup>২) নিশা—মায়ो। এ শব্ব অভিধানিক নহে।

<sup>(</sup>৩) দিবা—জান। এ শৰু আভিধানিক নহে।

<sup>(</sup>s) রজনীর অককার—মারার প্রভাব।

<sup>(¢)</sup> জাগবণ—অন্তর্গাগ। এ শব্দ আভিধানিক মহে।

<sup>(</sup>৩) রাগ—অন্বাগ ঃ

সক্ষ ক্ৰিয়ামনে, নিষ্ঠই ভয়। দিনে বেতে একবাৰ, নিজা নাছি হয় ৷ সদ। ভাবে কোথা বাথে, বিষয় বিভব। নিলে নিলে নিলে চোব, গেল গেল সৰ 1 পড়িলে গাছেব পাতা, কবে এই ত্রাস। তক্ষৰ আদিবাৰঝি, কৰে দৰ্কনাশ। क्सरम चानित्व होको. हिस्स **७**डे स्नारत । বেতে ভাবে এই ধন, কিসে রক্ষা পাবে। কেচ না জানিতে পাবে, বাথে চেপে চেপে। উদবে আহাব নাই, মবে পেটকেঁপে ॥ সক'লো সকালো কবি, কার্যা সমাধান। ছাই ভলু বাহা পান, ক্লথে তাই খানা তেল পোডাভবে কবি, প্রদীপ নির্ম্বাণ। অন্ধকাবে পোডে থাকে, ভূতেব স্থান॥ বিছানায় পোডে কবে, এ পাশ ও পাশ। সাবানিশি ভোলে মুখে, খুক্ খুক্ কাশ । ই°তব নডিলে পরে, মনে পায় ভব। তথ নি উঠিবা করে, এ হব ও হব ঃ .কীলিবেব দারা আব, ক্লপণেব ধন। কথনো না হয় কাবো, ভোগের কারণ ৷ ক্রপণের বিশেষ কি. কর পরিচয়। অতি নীচ নবাধম, অভিধানে কঃ ঃ

কপণ সাপন দোষে, নীট ছোৱে বয় । দাশ, পুলু, পবিবাব, কেচ ভাব নৰ 🏾 সকলেই ঘণা কবে, পোচছ ঘোৰ দাব। অধীন থাকিতে তাৰ, কেছ নাহি চাষ ৷ ভাগা ভাবে কত দিনে, মনিবে এ স্থামী। দিয়ে প্রায় থেলে পোবে, শুথে বর আমি। ''এয়োৎ'' বুচুক্ খোচে, খেল নাই ভাতে। মিছে কেন শাখা খাছ, ঝোষ মবি হাতে গ হয়, হয়, হোলো, খোলো, নিবাহিব পেতে : वहे, वहे, इव, वन, छन (थरा (राष्ट्र ॥ **সবে, সবে, একাদশী, ম**াসেতে ভ্ৰাব। হাবাতের হাতে পোছে, বাহিনেবে। মার গ বাছাদের পেটপুরে, থেতে দিব স্থাব। ইছেমত ভাল মক, জবাদিব মুখে॥ কবিব সকল ব্রত, সময় সমী। বেবত। আহ্মণে দেব, যথন যা হয়। হাত তলে দেব তাবে, ইচ্ছে হয় যাবে। সকলেই আশীৰ্কাদ, কবিবে আমাবে II মনে মনে পুত্র এই, অভিনাধ করে। কালীঘাটে পূজা দিব, বাবা যদি মবে। বিধাতাৰ বিভন্না, কাবে বলি "বাপ "। হাৰ হাৰ কত দিনে, মবিৰে এ পাপু ।

ৰত পাপ কবিষাছি, সীমা ভাব নাই। র পণের সম্ভান, হয়েছি আমি তাই। ভিথাবী আইলে পবে, মেনে বাব হাবি। এক মটো চাল তাবে, দিতে নাহি পাবি। প্রভাশা কবিয়া মাদে, বতেক প্রভাশী। অভিশাপ দিয়ে যাব, ককীৰ সন্মাসী। কেছ যদি কিছু চাষ, পাই তায় 5:খ। অভিমানে কাদি ওধ, হোরে অবোম্ধ। ভাল থাই, ভাল পৰি, আশা কৰি মনে। সে আশানাপুর্বছন, কুপ্রের ধনে ॥ খাব নিতা থেতে পাই, আবপেটা ছাই। নিমরণ হোলে পবে, ভাল কোবে বাই॥ এক দিন খাষাইব, মনে সাধ কবি : কাবে ধলি কেবা জনে, বাম বাম হবি। জননী ছঃখিনী অতি, কিছ নাই হাত। সভতই শিবেতে, কবেন করাঘাত 🛭 ''ওমাকালীদিব ডালি, অমুকুলাহও। আমার বাপেবে তুমি, শীঘ বুও লও।" কুপ্ৰ কাহিনী কথা, এই ৰূপ হয়। ব্যবহীন কোন কালে, প্রিব কারো নয়। নাম ভবে সকলেট, উপহাস কবে। পথে দেখে ঠারেঠোরে, হাসে পরস্পরে ।

#### কবিতাসংগ্ৰহ। ್ನು ೬

প্রাতে উঠে কেই তাব, নাহি কবে নাম। যদি কবে জিব কেটে, বলে রাম বাম ৪ নাম নিলে সে দিনেতে, অলু নাহি হয়। পরিবার সহ সবে, উপবাসে বর। হ'ভৌ ফাটে কতরূপ, বিভম্বনা ঘটে। "ফলনাবে" মনে কব, বটে কি না বটে। উপমাব তেতু ভধু, দেখাই জনেক। এখন মহায়া ধনী, আছেন অনেক। প্ৰতাতে বাহাৰ মথ, দেখে লাগে ভগ। প্রভাতে যাহাব নাম, বেছ নাহি লব। তি কৰ অধিক আৰু কি কৰ অধিক <sup>9</sup> ধিক বিক্রুপণেব, ধনে প্রাণে ধিক্। উপাৰ্জন কৰে কৰি, শ্ৰীৰ পতন। হক্ষে কবি বঞ্চা কৰে, যক্ষেব মৃতন। আপনি পড়েছে বোগে, বোগ ভোগে ছেলে। প্রতীবাব কবে বৈদ্য, কিছু টাকা পেলে 1 ক্রমেট বাভিছে বোগ, স**র্বা**নাশ হয়।

মবিতে হইবে বোলে, দলে নাই ভব । ওষধ পাঁচন থেলে, উভয়েই বাঁচে। ভব বৈদা ভাকাবেনা, কন্ধি চাম পাছে। এইমত কপণেব, নীচ ব্যবহাব। नित्य मत्त्र, मत्त्र छात्, यक शहितात ।

ক্লপণের নিদানেতে, ধেখে ঘোব দায়। ব'াচাবাব হেডু যদি, টাকা কেহ চায়। মাগাৰ চাপড মেবে, কচে 'হায় হাব। বেঁচে তবে স্থা কিবা, টাকা যদি যায় ? স্বন্ধন সকলে তাবে, গঙ্গাধাতা করি। পথে বাষ নাম ডেকে, হবিবোল হরি I হবেকুকাহ রেকুকা, কুকাকুকাহবে। দে বৰ না চোকে ভাব, কাণেৰ ভিতৰে **।** প্রকাল ভূলে গিয়া, নিজ ভার ধরে। ''টাকা টাকা, কোথা টাকা'' এই জগ কবে। লোকে মলে 'হবিনাম, ভপ একবাব।' সে বলে 'অনেক টাকা, রয়েছে আমাব ॥' লোকে বলে 'কব কব, গঙ্গা দবশন।' (म वल '(शांशन कदि, वाथ मव धन ३' লোকে বলে 'অধিক, অপেকা নাই আব। এদেছেন ইউদেব, পূজা কব ভাঁর <sub>है</sub>' সে বলে 'থাকুন গুরু, মাথার উপর। এখন ভাঁহাবে দেখে, গারে এদে জর # ধনেব কাঙ্গাল আমি, কিছুমান্ত নাই। ছেলে মেয়ে কি থাইবে. ভাবিতেছি ভাই ॥' কুপণেৰ গুণ সৰ, কৰিতে বৰ্ণন। লেখনী আপনি হোন, ক্লপণ এখন।

কুপণের মনে হয়, কেমনে আনন্দ। মানুৰে তা কি জানিৰে, জানেন গোবিদ্ধ । আত্মাৰে বঞ্চনা কবি, যে কবে সঞ্চয়। তাব চেষে নবাবম, আব কেই নম ঃ মৰ নয় থাকে বটে, মবের আকাবে। विठादराज आञ्चना जी, बना बाब जादन যে পথে চলেন দাতা, দে পথে না হ'াটে অণবে করিলে দান, ভাব বুক ফাটে। শুনিশে ব্যায়ের কথা, কলা নাই আবে : নিয়তই মন তাব, ব্যাজাব ব্যাছাব ৪ কাঁচ মাচু মুখথা,নি, বেন কত দীন। তথনি তথনি হয়, অমনি মলিন 🛭 ভাবে মনে চিবকাল, শবীৰ বহিবে। স্তানেনাকে। এক দিন, মবিতে হটবে॥ ধন ববে, আমি বব, জেনেছি নিশ্চয। মবণ পুরণ হোলে, এমন কি হয় গ কবি ধন আহবণ, নানা দেশ ট ডে। নীচুভাগে পুঁতে বাথে, মাট খুঁডে খুঁডে ৪ মাট খোঁড়া নহে সেটা, টাকা পোঁতা নয পাপ ছোগ করিবাব, সোপান সঞ্চয়। ব্যে বলি মাটি খুঁড়ে, ধন গাড়িতেছে। অধ্যেদেশে হাইবার, পথ ক্রবিজ্ঞান ॥

শামুস্থ বোধ করি, যে করে সঞ্চার। বলদের মত গুধু, বোবে মবে ভাব ৷ চিরদিন হোয়ে রয়, জঃখেব ভাজন। কোথায় রহিবে ধন, হইলে নিধন ? ধনেব না কবি ভোগ, ধনবান হয়। আমাৰ সম্পদ এই, মুখে মাত্র কয়। বিনা বাবে যদি হয়, সে ধন ভাহাব। আমি কেন বলিনাকো, সকলি আমাব ? নদী, নদ, সাগব, পর্বত আদি হত। সমুদ্ধ রধেছে, আমাব হস্তগত । ভোগের সম্বন্ধ গল, কিছু নাই ভাষ। রূপণের ধন তাই, প্রধন প্রাম ॥ ধননাশ হোলে পবে, সর্কানাশ হয় ! শৌকানলৈ পড়ে শেষ, দেহ কবে লয়। স্বিশেষ নিবেদন, ক্ষুন প্রিবজন। হয়েনা কুপণ কেহ, হয়েনা কুপণ। সতত কবিবে সবে, ধনের সঞ্চব। সে সঞ্য থেন নাহি, অতিশ্য হয় 🌡 অতিশ্ব সঞ্বেতে, অতিশ্ব দোষ। অন্ধ হোবে মবে মাচি, পুৰে "মধুকোষ" t অধিক সঞ্চয় কবি, নাকবিয়া হান। অক্সাৎ রোগে পড়ে, হদি বাহ পাণ 🎚

#### কবি**তাসংগ্ৰহ।**

**330** 

মনে মনে ভেবে দেখ. কিছিবে তথন। তুমি কার ? কে ভোমাব ? কার সেই ধন ? একেবারে বাষ কবি, হযোমা অবন। প্ৰিমিত কাষ্ক্ৰ, সঞ্বাহমন চ প্ৰিমিত হোলে হিত, সুব দিকে হয়। কিছুনয় কিছুনয়, ভাল কিছুনয়। কলাপ্ৰে জলাপ্ৰে, যত জন আসে: সবোৰৰ জলদান, কৰে অনাযাসে। ষত দেয় তত বাতে. নাহি পায় ক্ষয়। অর্জিত ধনেব লানে, ধন কমা হয়ঃ অহম্বাবহত জ্ঞান, জ্ঞান বলি তাবে। বত লোক এ জানের, জানী হোতে পাবে। স্মাশীল শূব বেই, সেই শূব শূব। ভতলে এমন শব, দেখিনে প্রচব। হাজাবের মাঝে বদি, একজন পাই। সাধু সাধু সাধু তারে, সাধু কলি ভাই। দানেতে নিযক্ত ধন, ধন ধলি তাবে। এমত ভূর্লভ ধন, কোথা এ সংসারে ? যেখানে এরপ হয়, কর্ছের বাভাব। সাধু সাধু সেই স্থান, ধর্মের আগার। বিদ্যালয়, ছায়া-ছত্ত, আর জলাশয়। ঔষধ-আলয় আর, অতিথি-আলয় ৪

স্থান বিবেচনা করি, স্থপথ প্রদান। নদ নদী বিশেষেতে, সেতৃৰ নিৰ্ম্বাণ ॥ এ প্রকাব উপকাং, কব আর হত। সাধারণ-হিতকর, কার্যা আছে যত ॥ এসৰ নিৰ্দ্ধাহ হেতু, উৰার হইযা। বিনি দেন মূলখন, স্থাপিত ক্ৰিয়া। উাহাকে "নবেশ" বলি, নরের প্রধান। পুথিখীতে ভার চেবে, নাছি দ্যাবান। প্রিবাকো দান করা. সেই দান দান। শতওণে বাডে তাৰ, দাতাৰ স্মান চ বাঁকা মুখে অহঙ্কাবে, কবি কিছু দান। কুবচনে গ্রহীতাব, করে অপমান ঃ ভবেতে আছতি দান, যেমন বিকল। অবিকল গেইরূপ, সে দানেব দল। অতএব ভাই সব, কবি প্রশিনাম। ৰণাক্ৰমে দেহবাজা, কর সমাধান ঃ

ভারতের অবস্থা।
তথাৰে নিছৰ জন, হইবাছে দ্বীল।
নিবিষাছে এবেবারে, হিন্দুব প্রদীল।
দীনবন্ধ কুপানিদ্ধ, বিভূ বিশ্বনার।
ভারতের বন্ধু বদি, হন পুনর্শাব।

### ৩৩২ কবিতাসংগ্ৰহ।

হিন্দুর হুথেব আরে, ভারনা কি ভবে ? ছিল সিদ্ধ, হোলো বিন্দ, পুন সিদ্ধ হবে। দীনবন্ধু বলে হিন্দু, যদি সিকু হয়। সহজে হইবে ভবে, ইন্দৰ উদয়ঃ হিল্র কপালক্রমে, সুধ দিনকর। হোষেছিল এককালে, অভি ধরতব ॥ বালেতে এখন আব. নাহি সেই দিন। निनदेव शैनकर, निन हिन निन । প্রাপ্ত হোরে ঈশবের, কপামেঘ-জল। হে:থেছিল ভাগ্যনদ, প্রচুর প্রবল। সুখচেউ আনল-অনিলে অবিরত। ক্রতবেগে নেচে নেচে, ছুটেছিল কত। অদৃষ্ট অদৃষ্ট হিম, পেষে নিজ কাল। কালক্রমে একবালে, হইযাছে বাল। এখন হিন্দুব সেই, ভাগ্যক্প নদ। करक्वारव खर्थारवरण, जायारवरण श्रम । কাল পেয়ে ঘটেছিল, কল্পমেব কলি। উঠেছিল গন্ধ তার, ছুটেছিল অলি। এখন তথাবে দল, ঝবিয়াছে সব। নাতি গ্রহ মকর্ল, নাহি ভঞ্চ-রব 🛭 ভাগ জাগ জাগ সব, ভাবত-কুমার। আবদ্যের বশ হোয়ে, বুমাও না আর

তোল, তোল, তোল মুখ, খোলবে লোচন। জননীৰ অঞ্পাত, কৰৰে মোচন। ত্বেছে শোবাব খাট, পভিষাছ ভূমে এশনো ভোমাৰ এত, সাধ কেন ঘূমে ? বাত্তি আৰু বিছু নাই, হইথাছে ভোৰ। বে দেখিছ অন্ধকাব, কুরাশীর বোর 🏻 তিমিবে ববিব ছবি, আছে আঞ্চাদন। ভয়াৰ উষাৰ শোভা, কোৰেছে হৰণ ৷ में बर नियान मी खि, वखन्वर विश्वा। এখনি মেলিলে আখি, স্থিব বাবে দেখা # কুমাশাং এ কুমাশা, কভ আৰু ব্ৰে? প্রভাকর প্রকাপেতে, সর দর হবে । ট্রশ্বর প্রভাগে সিংহ, স্বভাবেট হবি। তাৰ বাছে কোথা আছে, বুছ মটিকা কৰী ? আছে গুপ্ত প্ৰভাকৰ, ৰাজ্ঞ বৃদি হয়। আর না বহুবে তবে, কুলাশার ভয় 🛭 একেবাবে হবে ভাব, ভাবতের ভালো। দশদিকে দীপ্ত হবে, কুশলেব আলো।

### প্রধয়'।

व्यन्य भक्त्यनिधिः, व्यामिद्धव धन । অঞ্নবিহীন যথা, মানসবঞ্চন এ কেই বলে মনোম্ব, প্রণয় উদ্যান। স্বংতে বেষ্টিত খতি, মনোহৰ স্থান । অনুবাণ স্থীবৰ বহে প্ৰতিক্ৰ। আনন্দ সৌরতে হর, আমে বিভ মন। কেছ বলে প্রেমনদী, অকল পাথাব। কাৰ সধাহাপ'ৰ, কে দেব নীতাৰ ? কেছ কতে প্রভাবণা, প্রণবেষ পথে। প্রবেশিলে বাতনা, ঘটাব বিধিমতে 1 অবোমুখে কেছ ৰলে, এই বছ থেদ। द्याय अगय छाइ. उलाव दिस्कृत । অমুবাগ সহবোগে, কেহ কেহ বলে ৷ কলম্ভ কণ্টক কেন, প্ৰণয় কমলে? এইরপে বচ লোকে. বচরুপ ভাবে। প্রেমিক রুসিক ভাছে, খল খল ছাসে। প্রকাশিত প্রেম শশী, ছবর আকাশে। মানস চকোর নাচে, স্থবা অভিনাবে । সদাশন বথা বৰ, কভ নৱ একা। क्षण्य मधाते महत्त्व, मना क्य त्नथा ।

আকর্ষণে ছট মনে, এমন মিগন।

মেনন সুবতী ববে, পতি আলিজন ।

স্বানন্দে থাকেঁ মত্ত, বেপ্তাৰ অন্তব্যার।

স্বানন্দ বাকেঁ নেংক, নামনৰ আগো ।

বিক্ষেত্র বিজ্ঞান প্রত্যার।

অনুনিক কারে মিনি, অবনিক থাবা।

বিক্ষপ এপন তবং, ভাবের কাষণ।

কেত বলে ব টু তিক, কেত্ত ক্যাল্ড।

ভাগান্তব্যাল্ড।

কেত বলে ব টু তিক, কেত্ত ক্যাল্ড।

সেতি বলি ব বাবেল।

সেতি বলি ব বাবিলালে, প্রেন আফ্রেন।

সেতি বিনা বে আনিকে, প্রেন আফ্রেন।

সেতি বিনা বে আনিকে, প্রবন আফ্রেন।

# ञे∤कृरक्षत्र क्शुमर्गन ।

কুলানে হবি হবি, ছাবকাব আদি।
তথের সম্ভোগ চোন, দিংহাদনবাদী।
সর্পানীত স্থানোহাত, তথা দখনে।
এতেব মধুত ভাল, পড়িয়াছে মনে।
বিষয় বায়ুল খন, এবেব রোগন।
কোখা গিবি গোবর্জন, কোখা বুজবন।

# কবিতাসংগ্ৰহ।

೨೦೬

বোধা বন্ধৰ তক, কোলা বংশী বই।
কোণা প্ৰিগোহল বোগা, লানিনীও উট।
কোণাৰ এখন সেই, মোহল দুবলী।
হাস হায় কোলা মোহ, শাম্পী, ধৰনী।
বদৰ কুখন কছ, তকু মন্থবাগে।
পূৰ্বভাবে নৰ ভাবে, ভাল নাম্বি লাগে।
কোনা কাৰ্যক্ষি কাৰ্যকাৰ কাৰ্যকাৰ
কোনানী, পামানী আদি, কাছে বাছে বাবি।
আবা, আবা, হবলী, ববলী, বোলে ভাবি হ
বিধি বিবি ছিল্লি গিলি, গছনের গোতে
বেওলবে ধেকু সবে, পাছ পাছ ভোটে ॥
হণ্ড পত্ৰ থেবে সন্থা, নাহলীত কুকুলী।
হাত্ৰ হায় কোবা মোহ, শামনী, ববলী;

स्मा राग्न कर्मा नह, दान श्रविहरि । মর্শ্বভেদ মজে বেদ, মিছে থেদ কবি। শ্তির বিশ্বতি হেতৃ, শ্বতি হয় শেষ। শুতি আর শ্রুতিপথে, করে না প্রবেশ ॥ কুতর্কের ভর্ক উঠে, ভক্কের বিচারে। ন্যায় হোবে ন্যাবছাডা, থাকিতে কি পারে ? তপ্তেব স্থাতত্র ভন্ত, সে ভন্ত কে জানে ৮ স্বভৱে কৃতত্ত হোলে, ভত্ত কেবা মানে গ কাব্যের অধীন হোরে, কাব্য হয় গত। অনহাৰ হইয়াছে, অল্ভাব্যত । ভাবতে নাবহে আরু, ভাবতের রাস। পুৰাণ পুৰাণ বলি, কৰে উপহাস ঃ কেবা চলে শাস্ত্ৰপথে, স্বাই অচল। নাহি মন গীতার, কি ভাব পাবে ফল গ क्यान त्मा बरद नथ, मृष्टि चारक कान ? একে সৰ ঘোর অন্ত, ভাতে অন্তভার । বিশ্বভর আছে স্থা, দেখেবা চাহিয়া। জানার স্বল ভাব, গুরুল খাইয়া। বেবাচাব-মদে মন্ত, দেশাচার হরে। ৰটুভয়া কালকুট, হুধা জ্ঞানুকৰে 🛭

## ভারতের ভাগ্যবিপ্লব।

জনদী ভারতভূমি, আর কেন ধাক ভূমি, ধর্মারপ ভূবাহীন হোরে ? ভোমার কুমার বত, স্কলেট জ্ঞানহত, মিছে কেন মৰ ভাব বোষে ? পর্বকার দেশাচার, বিছ্যাত্র নাহি আর, অনাচাবে অবিবক্ত বস্ত। কোগা পর্বারীতি নীতি, অধর্মের প্রতি প্রীতি, ঞ্জি ভয় *ক*হিপগছত । দেশের দাকণ ছঃখ, দেখিবা বিদবে বৃক, চিকাৰ চঞ্চ হয় মন। লিখিতে লেখনী কাঁবে, সানমুখ মসিচাঁদে, শোক অঞাকৰে ব্রিষণ # কি ছিল কি হলো আহা, আর টি হইবে ভারা ? ভারতের ভবভরা বশ। ঘুচিবে সকল বিষ্টি, হবে সদা স্থধ বৃষ্টি, স্ক্রীধারে সঞ্চীরিরে বস ।

ভাবভূপ-প্ৰিবারাণী, বাণীৰ প্রকৃত বাণী, মুতপ্রায় পুৰাতন ভাষা। সচেতন হোৱে পুনঃ, গাইবে বিভূব শুণ, সমনায় নিতা করি বাসা।









